ॐ

समाज जा सितारा

सिन्धी ब्रह्म खत्री

लेखक ऐं छपाईंदड़

ब्रह्म खत्री रतन मोरूमल चेतनदास धान्धा "बेवतन"

ही किताब अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात
जे आर्थिक सहयोग सां छपायो वियो आहे

Samaj Jo Sitara

समाज जा सितारा

Written by
"Brahm Khatri Ratan"
Morumal Chetandas Dhandha "Bewatan"
11/549, Malviya Nagar, JAIPUR-302017.

❖

Published by:
"Braham Khatri Ratan"
Morumal Chetandas Dhandha "Bewatan"
11/549, Malviya Nagar, JAIPUR-302017.

❖

Monetary Aid by:
Akhil Bharat Sindhi Brahm Khatri Panchat

❖

Computer Setting by:
Alfa Computers,
Sindhi Gali, Hathi Bhata, AJMER-305001.

❖

Printed by:
Amar Bharat Offset Press,
Sindhi Gali, Hathi Bhata, AJMER-305001.

❖

Edition: **1st.**

Copies: **1000**

Year: **1998.**

लेखक:
''ब्रह्म खत्री रतन''
मोरूमल चेतनदास धान्धा ''बेवतन''
११/५४६, मालवीय नगर, जयपुर–३०२०१७.

❖

छपाईन्दड़:
''ब्रह्म खत्री रतन''
मोरूमल चेतनदास धान्धा ''बेवतन''
११/५४६, मालवीय नगर, जयपुर–३०२०१७.

❖

आर्थिक सहायता कन्दड़:
अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात
जे दिनल आर्थिक सहयोग मां छपायो वियो ।

❖

कम्प्यूटर सेटिंग:
अल्फा कम्प्यूटर्स,
सिन्धी गली, हाथी भाटा, अजमेर–३०५००१.

❖

छपीन्दड़:
अमर भारत ऑफसेट प्रेस,
सिन्धी गली, हाथी भाटा, अजमेर–३०५००१.

❖

दफो: पहिरियों

जुल्द: १०००

सालः सन् १६६८ ई०

हीं किताब अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जे आर्थिक सहयोग सां छपायल आहे ।

ॐ

समाज जा सितारा

सिन्धी ब्रह्म खत्री

स्वामी लीलाशाह महाराज

ही किताब अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जे आर्थिक सहयोग सां छपायलु आहे

लेखक ऐं छपाईन्दड़:

मोरूमल चेतनदास धान्धा "बेवतन"

ब्रह्म खत्री रतन

११/५४६, मालवीय नगर, जयपुर – ३०२०१७ (राजस्थान)

दफो पहिरियों　　　जुल्द १०००　　　सन् १९९८ ई०

ॐ

किताब

"समाज जा सितारा"

उपति ऐं खपत जो हिसाब

डाइरेक्ट्रियुनि ऐं वंशावलियुनि जे किताबनि मां बचत	34840-00
पोइ व्याज मिलियो	12030-00
पोइ चन्दो मिलियो - श्री मोहनलाल रामनाणी अगिएं प्रेज़ीडन्ट साहिब अखिल भारत पइंचात जे उगाड़े दिनो	8300-00

श्री पमनाणी परिवार, ऊना	3000-00
पूज पइंचात बड़ोदा मुखी श्री गोरधनदास मूरजाणी	2500-00
पूज पइंचात, आनन्द	2500-00
श्री लोकूमल जीवतराम, कोटा	300-00
	8300-00

हिननि खे धान्यवाद आहे ।

टोटल	55170-00

कागज़ मैपलिथो	18850-0
कम्प्यूटर ऐं ऑफसैट जी छपाई	19950-0
कवर स्क्रीन छपाई	1000-0
जुल्द पक्के जी बधाई 1000 किताब	9500-0
स्टेशनरी ख़र्च	87-5
पोस्ट ख़र्च	174-0
भाड़ो ख़र्च	792-5
कुल ख़र्च	50354-0
बचत	4816-0
टोटल	55170-00

नोट: - ही ख़र्च अटिकल तोरि लिखियो वियो आहे । पूरो सही ख़र्च हिसाब करण ऐं बिलनि मिलण ते पेश कयो वेन्दो ।

शुक्रगुज़ारी

पूज नियातियुनि खां किताब छपाइण लाइ मिलियल चन्दे वारी रकम ते सतनि सालनि में कुल व्याज 48,629-00/- रु. श्री केवलराम ख़ानचन्द मामतोरा जयपुर वारे पंहिंजे हिम्मत, ज़िम्मेवारीअ ऐं कोशिश सां वठाराए दिनो, जंहिं लाइ खेसि दिली धन्यवाद दिजे थी ऐं मां संदसि तहदिल शुक्रगुज़ार आहियां, जो उन व्याज वारी रकम ऐं कुझु चन्दे मां ही ***"समाज जा सितारा"*** किताब छपायो वियो आहे । इहो शरफ़ बि श्री केवलराम खे हुजे ।

ब्रह्म खत्री रतन मोरूमल "बेवतन"

☆ समाज जा सितारा ☆

सिन्धी ब्रह्म खत्री

नं०	सितारनि जा किस्म	नं०	सितारनि जा किस्म
१.	सन्त ऐं महात्मा	१८.	सहाइता विद्या फन्द ऐं ट्रस्ट जा चेयरमन
२.	सन्त ऐं भगुत	१९.	सहाइता विद्या फन्द ऐं ट्रस्ट जा वाईस चेयरमन
३.	भगुत ऐं भगुवान जो कीर्तन कन्दड़	२०.	धर्मशाला ट्रस्ट जा प्रेज़ीडन्ट
४.	भगुत ऐं गवैया	२१.	धर्मशाला ट्रस्ट जा वाईस प्रेज़ीडन्ट
५.	भगुत, गाुईन्दड़ ऐं समाज सुधारक	२२.	भारत लेविल जे संस्थाउनि जा उहिदेदार, जिनि घणी शेवा कई आहे
६.	भगुत, गाुईन्दड़ ऐं खोजना कन्दड़	२३.	जल शेवा कन्दड़
७.	भगुत, काबिल हकीम ऐं M.D. डॉक्टर	२४.	कचहरीअ जा मोर ऐं सभा जा सींगार
८.	मार्गी शब्द गाुईन्दड़ ऐं अर्थ कन्दड़	२५.	जादूगर ऐं हथ जा खेल कन्दड़ वग़ेरह
९.	सभु रागु ऐं सुर ज़ाणन्दड़ ऐं लय ताल सां गाुईन्दड़	२६.	मंत्रनि ऐं झाडुंनि जा ज़ाणन्दड़ ऐं छुटाईन्दड़, जोतिष ऐं हस्त रेखा ज़ाणन्दड़
१०.	लेखक, कवि, इत्हासकार ऐं ब्रह्म खत्री रतन	२७.	चित्रकार
११.	लेखक ऐं कवि (शाइर)	२८.	सूरमा– आज़ाद हिन्द फौज ऐं हिन्द मिल्ट्रीअ में
१२.	समाजी रीतियुनि रस्मुनि जा मुकमल ज़ाणूं	२९.	म्यूनिस्पाल्टियुनि में उहिदेदार ऐं मेम्बर– सिन्धु ऐं हिन्द में
१३.	रीतियुनि रस्मुनि, मंत्रनि ऐं हिकमत जा ज़ाणूं	३०.	ऊची डिग्री पास कन्[illegible]– Ph.D., M.E., C.A.
१४.	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जो पायो विझन्दड़	३१.	स्कूलनि जा प्रिन्सीपाल
१५.	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जा प्रेज़ीडन्ट	३२.	आम शेवा कन्दड़, रजिस्टर्ड संस्थाउनि जा प्रेज़ीडन्ट, उद्योगपति, हुनरमन्द वग़ेरह
१६.	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जा वाईस प्रेज़ीडन्ट		
१७.	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जा जनरल सेक्रेट्री		

फहिरस्त

नम्बर	विषय	सुफहो
	बाबु पहिरियों	
	सन्त ऐं महात्मा	
१.	सिद्ध सवाई साहिब - (खूहा)	१
२.	थल्हे वारा साध-	५
	सन्त दियालदास रामचन्द वारदे	
३.	सन्त बावो नारग दोड़	८
४.	सन्त रतन भगुत	१२
५.	सन्त भगुत ईसरदास टऊंरमल खूहा	१३
६.	सन्त बालो भगुत छत्ताकपूर ब्रह्मचारी	१६
७.	सन्त पारयो भगुत उर्फु पार साहिब धान्धा	१७
८.	सन्त बाओ शेवाराम कारातेला	१७
९.	सन्त मंघाराम प्रेम जी भूत	२०
१०.	सन्त भगुत टऊंरमल जेठोमल छूंछा	२३
११.	सन्त स्वामी लीलाशाह महाराज वल्द	
	टोपणदास टाटारिया	२५
१२.	सन्त द्वारकापुरी (बम महादेव) वल्द	
	आसनदास खूहा	३५
१३.	सन्त भगुत भेरोमल उर्फु भेरवदास उत्तूमल धान्धा	३७
१४.	सन्त बूदरमल (बावा मस्तराम) टहलराम खूहा	४१
१५.	सन्त नारूमल आसूमल दावड़िया	४२
	बाबु बियो	
	सन्त ऐं भगुत	
१.	सन्त भगुत रासींगराम ईसरदास सोमेसर	४४
२.	सन्त भगुत खीमूं या खीमनदास दावड़िया	४५
३.	सन्त भगुत सांवलदास मूलचन्द दावड़िया	४६
४.	सन्त आसूराम मास्तर दान्दूमल हरगुण	४७
५.	सन्त भगुत लौंगराम जेठोमल वारदे	४८
६.	सन्त भगुत पुरुसूराम	४६
७.	सन्त भगुत तेजभानदास (तेजाराम) खटणमल हरगुण	४६
८.	सन्त भगुत ढालूमल टोपणदास सोरठिया	५१
९.	सन्त भगुत मनण (लालू लठि वारो) नारूमल दगिया	५२
१०.	सन्त लाला नारायण गिर उत्तूमल धान्धा	५३
११.	सन्त भगुत पित्तोमल भगुत नाजोमल खूहा	५३
१२.	सन्त भगुत महाकाल गिरी छत्ताराम वीरूमल भूत	५४
१३.	भगुत वधणमल हेमनदास दावड़िया	५५
१४.	भगुत मनूमल मंघनमल दुलेरा	५५
१५.	भगुत लालूराम (लालचन्द) भगुत पुरुसूमल खूहा	५६
१६.	भगुतियाणी कुन्दी बाई गेहीमल वलेरा	५७
	बाबु टियों	
	भगुत ऐं भगुवान जो कीर्तन कन्दड़	
१.	भगुत टिल्लोमल	५८
२.	भगुत किश्नोमल ग्वालदास मामतोरा	५८
३.	भगुत सोमजीमल फतनमल सोमेसर	५६
४.	भगुत हरूमल ईसरदास छाटापार	५६
५.	भगुत लीलाराम जसूमल खूहा	६१
६.	भगुत जयसिंघमल चेतनदास धान्धा	६२
७.	भगुत संभनमल हीरानन्द सोनेजा	६३
८.	भगुत थूमीमल उर्फु चूहड़मल उर्फु चुत्रीलाल	
	उर्फु छत्ताराम वारदे	६३
९.	भगुत गोविन्दराम हेमनदास वारदे	६४
१०.	भगुत चांडणमल तुलसीदास छत्ताकपूर	६५
	बाबु चोथों	
	भगुत ऐं गवैया	
१.	भगुत केवलराम जेठानन्द धान्धा	६७
	बाबु पंजों	
	भगुत, गुाईन्दड़ ऐं समाज सुधारक	
१.	भगुत परमानन्द खेमचन्द वारदे	६८
	बाबु छहों	
	भगुत, गुाईन्दड़ ऐं खोजना कन्दड़	
१.	भगुत जयकृष्णदास भगुत हरूमल छाटपार	६६
	बाबु सतों	
	भगुत ऐं काबिल हकीम	
१.	नालो ना-मइलूम वेठल गोठ खाणि	७१
२.	भगुत उधवदास वेन्सीमल हरगुण	७२
३.	मेठाराम गुरनोमल खूहा	७२
४.	चेतनदेव भोजूमल धान्धा	७५
५.	M.D. डॉक्टर हरीलाल जमनादास पमनाणी कारातेला	७६
६.	M.D. डॉक्टर टीकमदास आसूदोमल छंछिरिया	७७

नम्बर	विषय	सुफ़्हो
	बाबु अठों	
	मार्गी शब्द ग़ाईन्दड़ ऐं अर्थु कन्दड़	
१.	वाधूमल नेणूमल माधू	७६
२.	धनोमल लालचन्द माधू	८०
३.	मिर्चूमल आसूमल माधू	८१
४.	मोहनदास सन्तूमल माधू	८१
५.	पमोमल सन्तूमल माधू	८२
६.	पमनदास चेलाराम छंछिरिया	८२
७.	नेभनदास बसरमल खूहा	८३
८.	आसूमल चोइथराम काकूपोटा	८३
९.	बूलचन्द नानकराम मकड़िया	८३
१०.	धर्मदास उधवदास वारदे	८४
११.	रत्तूमल हीरानन्द सोमेसर	८५
१२.	केवलराम टिल्लूमल छत्ताकपूर	८५
१३.	तुलसीदास टहिलराम खूहा	८६
१४.	तिलोकचन्द वसूमल वारदे	८६
१५.	दियालदास पहिलूमल धान्धा	८७
१६.	देवनदास पहिलूमल धान्धा	८७
१७.	हरीराम जेठानन्द काकूपोटा	८८
	बाबु नाओं	
	सभु राग ऐं सुर जाणन्दड़ ऐं लय ताल सां ग़ाईन्दड़	
१.	वासूमल लोकूमल माधू	८९
२.	खटूमल टिल्लूमल खूहा	८९
३.	भगत घुमणमल नरसिंघदास सोनेजा	९०
४.	भगत भेरोमल बसरमल डावड़िया	९१
५.	भगत लालचन्द मंघूमल छत्ताकपूर	९१
६.	भगत टेकूमल राइमलदास काकूपोटा	९२
७.	मंघाराम उर्फु मेंघनमल मूलचन्द उर्फु चूलाराम खूहा	९२
८.	बूलचन्द ऊधवदास वारदे	९३
९.	दयालदास तोलाराम सोमेसर	९४
१०.	सेऊमल जेठानन्द माधू मास्तर	९५
	बाबु दहों	
	लेखक, कवि, इत्हासकार ऐं ब्रह्म खत्री रतन	
१.	मोरूमल चेतनदास धान्धा "बेवतन"	९६
	बाबु यारहों	
	लेखक ऐं कवि (शाइर)	
१.	रामचन्द रविजीमल खूहा	१०६

नम्बर	विषय
२.	मंघाराम चेतनदेव धान्धा "[illegible]"
३.	केवलराम वेन्सीमल हरना[illegible] [illegible]
४.	खेमचन्द ताराचन्द खूहा "[illegible]"
५.	चूहड़मल खेमचन्द माधू "परदेसी"
६.	सीरूमल लीलाराम खूहा "सियाह"
७.	गोरधनदास वेन्सीमल मूरजाणी [illegible]
८.	कृष्णदास भगुवानदास हरगुण
	बाबु बारहों
	समाजी रीतियुनि रस्मुनि ऐं रवाजनि [illegible]
	मुकमल जाणूं
१.	मुखी ज्ञानचन्द जयरामदास वारदे
२.	मुखी डेडूराम टोपणदास वारदे
३.	मुखी कलूमल मोतीराम डावड़िया
४.	भगत लालाराम पुरूमल खूहा
५.	मुखी तोलाराम सीतलदास खूहा मास्तर
६.	मुखी लीलाराम तोलाराम खूहा
७.	मुखी नथूराम हासानन्द लीआ
८.	मुखी वस्मल लखूमल भूत
९.	मुखी वेन्सीमल मोतीराम डावड़िया
१०.	मोरूमल चेतनदास धान्धा
११.	टीकमदास सामनदास काकूपोटा
१२.	मुखी हरदासमल भोजूमल डावड़िया
	बाबु तेरहों
	समाजी रीतियुनि रस्मुनि, मंत्रनि ऐं
	हिकमत जा जाणूं
१.	मुखी चोइथराम बालचन्द वलेरा
	बाबु चोदहों
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री
	पइंचात जो पायो विझन्दड़
१.	थांवरदास हंसराजमल सोरठिया
२.	साधूराम मेवाराम सोमेसर
	बाबु पंधरहों
	ब्रह्म खत्री पइंचात जा प्रेज़ीडन्ट
१.	वेन्सीमल मोतीराम डावड़िया
२.	फतूमल टहिलराम सोरठिया
३.	रेवाचन्द ढालूमल सोनेजा
४.	नथूराम हासानन्द लीआ

नम्बर	विषय	सुफहो
५.	नथुरमल टऊरमल सोरठिया	१४०
६.	नेभराजमल भारूमल रामनाणी सोरठिया	१४१
७.	हरदासमल भोजूमल दुावड़िया	१४२
८.	मोहनलाल भारूमल रामनाणी सोरठिया	१४४
	बाबु सोरहों	
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म छत्री पइंचात जा वाईस प्रेज़ीडन्ट	
१.	मुखी लखमीचन्द किशनचन्द आचार्य	१४६
२.	मुखी ज्ञानचन्द जयरामदास वारेे	१४७
३.	मुखी नथूराम हासानन्द लीआ	१४७
४.	मुखी लीलाराम तोलाराम खूहा	१४७
५.	मुखी भुगिड़ोमल भारूमल गोदिया	१४७
६.	मुखी हासानन्द आसूदोमल खूहा	१४८
७.	वेन्सीमल ज्ञानचन्द मामतोरा	१४९
८.	मुखी जमनादास रेवाचन्द खूहा	१५०
९.	मूलचन्द जेठानन्द धान्धा	१५१
१०.	मुखी भगुवानदास मूलचन्द कीरी	१५१
११.	ढालूमल भोजूमल सोरठिया	१५३
१२.	केवलराम ख़ानचन्द मामतोरा	१५३
१३.	नाराइणदास मेठाराम खूहा	१५४
१४.	अजीत कुमार बूलचन्द नानकाणी मकड़िया	१५६
१५.	कीमतमल गागूमल माधू	१५७
	बाबु सतिरहों	
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म छत्री पइंचात जा जनरल सैक्रेट्री	
१.	रेवाचन्द ढालूमल सोनेजा	१५९
२.	लेखराज धनूमल माधू	१५९
३.	नेभराजमल नारूमल रामनाणी सोरठिया	१६०
४.	नाराइणदास मेठाराम खूहा	१६०
५.	नानकराम थूमीमल खूहा	१६०
६.	मोरूमल चेतनदास धान्धा	१६१
७.	आसनदास टीकमदास काकूपोटा	१६२
	बाबु अरिड़हों	
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म छत्री सहायता विद्या फन्ड/ट्रस्ट जा चेयरमन	
१.	स्वामी लीलाशाह महाराज	१६३
२.	सुन्दरदास जीअंदराम माधू	१६३
३.	थांवरदास हंसराजमल सोरठिया	१६४
४.	रेवाचन्द ढालूमल सोनेजा	१६४
	बाबु उणवीहों	
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म छत्री सहायता विद्या फन्ड/ट्रस्ट जा वाईस चेयरमन	
१.	मुखी लखमीचन्द किशनचन्द आचार्य	१६५
२.	मुखी वेन्सीमल मोतीराम दुावड़िया	१६५
३.	सुन्दरदास जीअन्दराम माधू	१६५
४.	थांवरदास हंसराजमल सोरठिया	१६५
५.	अजीतकुमार बूलचन्द नानकाणी मकड़िया	१६५
६.	नाराइणदास मेठाराम खूहा	१६५
	बाबु वीहों	
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म छत्री समाज धर्मशाला ट्रस्ट जा प्रेज़ीडन्ट	
१.	मुखी कानजीमल गागूमल माधू	१६६
२.	डूलाराम डेवनदास काकूपोटा	१६८
	बाबु एकहीयों	
	अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म छत्री समाज धर्मशाला ट्रस्ट जा वाईस प्रेज़ीडन्ट	
१.	रेवाचन्द ढालूमल सोनेजा	१६९
२.	किशनचन्द लीलाराम धान्धा	१६९
	बाबु बावीहों	
	भारत लेविल जे संस्थाउनि जा उहिदेदार (जिनि घणी शेवा कई)	
१.	मुखी वेन्सीमल मोतीराम दुावड़िया	१७१
२.	मुखी हरदासमल भोजूमल दुावड़िया	१७१
३.	रेवाचन्द ढालूमल सोनेजा	१७१
४.	मुखी कानजीमल गागूमल माधू	१७१
५.	मोरूमल चेतनदास धान्धा	१७१
६.	चतुरमल भावनदास मकड़िया	१७१
७.	डूलाराम डेवनदास काकूपोटा	१७२
	बाबु टेवीहों	
	जल सेवा कन्दड़	
१.	साधूराम मेवाराम सोमेसर	१७३
	बाबु चोवीहों	
	कचहरीअ जा मोर ऐं सभा जा सींगार	
१.	मूलचन्द चतूंमल भूत	१७३
२.	नाऊंमल हरदासमल खूहा	१७४

नम्बर	विषय	सुफ्हो
	बाबु पंजवीहों	
	जादूगर ऐं हथ जा खेल कन्दड़	
१.	आसूमल उर्फु अमृतलाल मोतीराम कारातेला	१७५
२.	परसराम चूलाराम वारदे	१७५
३.	अमरदिनोमल रोचीराम वारदे	१७५
४.	झामनदास पारूमल दुलेरा	१७६
		१७७
	बाबु छवीहों	
	मंत्र ऐं झाड़ूं ज़ुाणन्दड़ ऐं छुटाईन्दड़	
१.	सतरामदास आसूदोमल धान्धा	
		१७६
२.	कारोमल चेतनदास धान्धा	
		१७६
३.	चतूंमल पिरींमल छत्ताकपूर	
		१८०
	बाबु सतावीहों	
	चित्रकार	
१.	विजय कुमार बूलचन्द नानकाणी मकड़िया	१८१
	बाबु अठावीहों	
	सूरमा– आज़ाद हि...	
	हिन्द मिलिट्रीअ । हिन्द फौज में	
१.	झामनदास ... ूमल में	
२.	भेरूमलदास छमिरियोमल माधू	१८२
	दुवनदास मूलचन्द खूहा	१८३
१७.	**बाबु उणटीहों**	
	म्यूनिस्पालटियुनि में उहिदेदार ऐं मेम्बर	
	सिन्धु ऐं हिन्द में	
	(अ) सिन्धु में	
१.	उत्तूमल कर्मचन्द काकूपोटा	१८५
२.	पुरुसूमल वसरमल वारदे	१८६
३.	आलूमल झामनदास गोरातेला	१८६
४.	फत्तूमल टहलराम सोरठिया	१८७
	(ब) भारत (हिन्दुस्तान) में	
१.	रेवाचन्द ढालूमल सोनेजा	१८७
२.	ढालूमल भोजूमल सोरठिया	१८७
३.	हासानन्द लीलाराम काकूपोटा	१८७
४.	रूपलाल धनोमल माधू	१८८
५.	किशनचन्द लीलाराम धान्धा	१८६
६.	साधूराम मेवाराम सोमेसर	१८६
७.	मोहनलाल नारूमल रामनाणी सोरठिया	१८६
८.	सीरूमल दुयाराम खूहा	१८६
९.	डॉक्टर आसनदास धर्मदास खूहा	१६०
१०.	धनशामदास खेमचन्द खूहा	१६०

नम्बर	विषय	
	बाबु टीहों	
	वडी डिग्री पास कयल– Ph. D., M.E.,(	
	(अ) Ph.D.	
१.	मेंघराजमल फतूमल वारदे Ph.D.	
२.	कृष्णदास भगुवानदास हरगुण Ph.D.	
	(ब) M.E.	
१.	नानकराम जमनादास पमनाणी कारातेला M.E.	
	(स) C.A.	
१.	देवानन्द मोहनदास हरगुण C.A.	
	बाबु एकटीहों	
	स्कूलनि जा प्रिन्सीपाल	
१.	गोर्धनदास वेन्सीमल मूरजाणी छंछिरिया	
२.	विजय कुमार खेमचन्द खूहा	
३.	पुरुषोत्तम मेठाराम खूहा	
	बाबु बटीहों	
	आम शेवा कन्दड़, रजिस्टर्ड संस्थाउनि	
	जा प्रेज़ीडन्ट, उद्योगपति, हुनरमन्द वग़ेरह	
१.	बूलचन्द मोतीराम खूहा	
२.	प्रेमचन्द उर्फु प्यारेलाल टऊंरमल सोरठिया	
३.	पीताम्बरदास टाकूमल टहिलियाणी खूहा	
४.	लालचन्द पहिलूमल कमलाणी छून्छा	
५.	हेमन्त कुमार लालचन्द दुावड़िया	
६.	पुरुषोत्तम तोलाराम मंघवाणी खूहा	
७.	मुखी बूलचन्द फतनदास वलेरा	
८.	मुखी वेरसीमल आलमचन्द खूहा	
९.	मुखी ज्ञानचन्द झमूंमल लीआ	
१०.	ब्रह्मानन्द प्रतापराइ माधू	
११.	हीरानन्द बूलचन्द रावजाणी खूहा	
१२.	लौंगमल बूलचन्द हरगुण	
१३.	रतनचन्द कलूमल खूहा	
१४.	शामदास कलूमल खूहा	
१५.	नाराइणदास जवहरमल सोरठिया	
१६.	राजाराम उर्फु हेमराज हीरानन्द वारदे	
१७.	बूलचन्द निहालचन्द सोमेसर	
१८.	कृष्णकुमार महादेवमल उर्फु महावीरप्रसाद दुावड़िया	
१६.	टीकमचन्द नाराइणदास सोरठिया	
२०.	केवलराम बसरमल छूंछा	
२१.	वसन्त कुमार जमनादास पमनाणी कारातेला	
२२.	कन्हैयालाल मोटूमल खूहा	

ॐ

बाबु पहिरियों

सन्त ऐं महात्मा

(१) सिद्ध सवाई साहिब

सन्त ईश्वरदास

सन्त गोधूराम

इत्हासः– जदुहिं जदुहिं ईश्वर जी कृपा थीन्दी आहे त उनजे इच्छा अनुसार सन्त ऐं महा आत्माऊं हिन सन्सार में जनमु वठी ईन्दा आहिनि । ब्रह्म खत्रियुनि में नुख खूहा जो अन्तु अचण ते परमात्मा उनजे वधाइण लाइ हिन दुनिया में बु पुरुष मोकिलिया । अटिकल तेरहीं सदीअ धारे हिकु ब्रह्म खत्री नुख खूहा वारो पुट खे साणु करे सिन्धु छदे मारवाड़ हलिया विया ऐं हिक नन्ढे गोठ में वञी रहिया । उते रेज़िकी दुकान खोले गुज़रु करण लगा । जदुहिं किस्मत साथ दीन्दी आहे, तदुहिं को न को बहानो बनाए उन राह ते हलण लाइ मति मिलन्दी आहे । उते हिकु सारस्वत ब्राह्मणु रहन्दो हो, जो सत्पुरुष ऐं सिद्धीअ वारो हो, उनखे हिन खत्रीअ पंहिंजो गुरू कयो ऐं संदसि पुटु बि उनजो ई शिष्यु थियो ऐं वटिसि के साल रही चङी विद्या हासुलु कई । छोकि़रो अची नौजुवान शादीअ लाइकु थियो, मगर मारवाड़ में हुनखे केरु पंहिंजी नियाणी दे । इनकरे उहो खत्री, संदसि पुटु ऐं गुर ब्राह्मणु, टेई सिन्धु में आया । नसरपुर तैलिके टन्डे अलहियार ज़िले हैदराबाद सिन्धु में अची देरो कयाऊं । शहिर जो वाउ-सुआउ वठी ऐं मौको दिसी टेई जणां गाम पइंचात जे मुखीअ वटि विया ऐं उनखे सारो समाचार सुणायाऊं, जंहिं पइंचात कोठाई ऐं उनमें मुखीअ हकीकत बुधाई । पोइ पइंचनि धणीअ खां हालु-अहिवालु वरितो । उन चयो त मां ब्रह्म खत्री ऐं नुख खूहा जो आहियां । ब्राह्मण बि चयो त हीउ बुई पीउ पुट ब्रह्म खत्री नुख खूहा जा आहिनि ऐं नुख खूहा में ही बु ई वचिया आहिनि, तंहिंकरे तव्हां पंहिंजी नियात मां हिन नौजुवान जी शादी करायो । जे हिनजी शादी न थीन्दी त नुख खतमु थी वेन्दी । पइंचनि मां आवाजु आयो त महाराज! असांखे कहिड़ी ख़बर त ही ब्रह्म खत्री आहिनि ऐं नुख खूहा अथनि । तंहिंते ब्राह्मण वराणियो त दरियाह ते हलो त मां थो साख दियां । तदुहिं सिन्धू नदी नसरपुर जे शहिर वटां ई वहन्दी हुई । उन बैदि मुखी, पइंच, ही बु जणां ऐं ब्राह्मण सिन्धू नदीअ ते आया ऐं अची कप ते बीठा । ब्राह्मण सिन्धू किनारे बीही बुई बांहूं सिधियूं करे, हथ मिलाए बन्दि करे वरी खणी खोलिया ऐं बांहूं जुदा कयूं त दरियाहु बु अध थी पियो, वहिकिरो बन्दि थी वियो ऐं विचां रस्तो ठही वियो । **"ब्राह्मण जो वचनु सूरज जी साख्या ।"** ब्राह्मण चयो त इहा अथव मुंहिंजी साख ऐं मां सचु थो चवां त ही बुई ब्रह्म खत्री नुख खूहा जा आहिनि । पइंच इहो करिश्मो दिसी अचिरज में पइजी विया ऐं विश्वास थियुनि त ब्राह्मणु सच्चो आहे । बराबर बुई पीउ पुट ब्रह्म खत्री, नुख खूहा जा आहिनि । सभु अन्न-जल जे अख़्त्यार आहे । पोइ बुई पीउ पुट वापसि सिन्धु में रहिया ।

नौजुवान जी शादीः– सुपातरु छोकिरो सभु कोई पसन्द कन्दो आहे, सो कंहिं नियातीअ वाधाई मोकिले दिनी ऐं छोकिरो मङियो । कुझु वक्त खां पोइ हुनजी शादी बि थी ऐं हुननि जो घरु ठही पियो । शादीअ बाद नसरपुर मां लदे अची खेबिरन जे गोठ में रहिया । खेबिर तैलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में आहे । खेबिरन जो गोठु दरियाहु ब दफ़ा पाए खणी वियो ऐं हींअर जेको खेबिरन जो गोठु आहे, सो उन्हीअ ऐराज़ीअ में टियों दफ़ो अदियो आहे । खेबिरन में घरु करे विहण बैदि गुरु ब्राह्मणु वापसि पंहिंजे गोठ मारवाड़ में हलियो वियो । बाकी जेको वक्तु सिन्धु में रहियो, माण्हुनि जी मंझिसि दाढी श्रद्धा रही ऐं कईं वटिसि सुवाली ईन्दा हुआ, जिनि खे राज़ी कन्दो हो । चवन्दा आहिनि त **"चमत्कार खे नमस्कार आहे ।"**

बिनि सिद्धनि जो जनमुः–

"माण्हू सभु न सुहिणा, पखी सभु न हंज । कंहिं कंहिं माण्हूअ मंझि, अचे बूंइ बहार जी ।"

वक्त पुजाणां उन नौजुवान खे ब पुट जावा । घर में खुशीअ जी लहिर उथी, जो नुख जे वधण जी उम्मेद थी । छोकर **"अजु नन्ढा सुभां वदा"**, अची १०-१२ सालनि जा थिया । **"सदोरा पुट पींघे में पधिरा ।"** हुननि जो सुभाउ ऐं हलति-चलति दिसी हिक जेदा ऐं हिक सरता छोकिरा उन्हनि खे चाहीन्दा हुआ ऐं पंहिंजे रांदियुनि-रूंदियुनि में हुननि खे बि शामिल कन्दा हुआ, जो हुननि जे बि खेलण जी वही हुई । रांदि कन्दे हिक दींहुं सिजु पंहिंजी सवारी पूरी करे रवानो थियण ते हो त हुननि बिन्हीं भाउरनि जी आग हिक छोकर ते रहिजी वेई । हुनखे चयाऊं त आग सुभाणें दिजु । सभु छोकिरा पंहिंजे पंहिंजे घरि रवाना थिया । बिए दींहुं सुबूह जो सभु छोकिरा रांदि जे मैदान ते आया । हुननि दिठो ज जंहिं छोकिरे ते असांजी आग रहियल हुई, सो आयो ई कोन्हें । सो उनजे घरि उनखे कोठण लाइ विया । माइटनि खां पुछियाऊं त फलाणों छोकिरो किथे आहे? माइटनि पुछियो छो? वरन्दी दिनाऊं त असांजी वटिसि आग रहियल आहे । उहो छोकिरो त उन्हीअ राति जो मरी चुको हो, सो माइटनि हुननि खे को न को बहानो देई मोटी वञण लाइ चयो । पर ही छोकिरा वञनि ई न । चयाऊं त फ़लाणो किथे आहे, हली असांखे आग दिए । आख़िर छोकिरे जे माइटनि हुननि खे बुधायो त छोकिरो मरी वियो आहे, सो तव्हांखे किथां आग दीन्दो? तंहिंते हुननि छोकिरनि वराणियो त असांखे आग दिनी कान्हेसि, सो इएं कीअं मरी वेन्दो? आहे किथे? असांखे देखारियो । तंहिंते माइटनि वरी बि चयो त हू मरी वियो आहे, सो कीअं हलन्दो? **"मुआ बि कदहिं मसाण मां मोटिया आहिनि?"** पर ही ज़िदु बधी बीठा । लाचारु माइट हुननि खे वठी छोकिरे जे मढ़ह वटि आया ऐं चयाऊंनिः इझो ही आहे, जो पट ते पियो आहे ऐं मरी वियो आहे । तंहिंते बिन्ही छोकिरनि मां हिक, मरी वियल छोकिरे खे हथ खां वठी चयो त ऐ भाई ! उथु, हली असांखे आग दे । तंहिंते उहो मृतक सरीरु छोकिरो टिपु देई उथियो ऐं हुननि छोकिरनि सां गदु हलियो वियो । इहो रंगु दिसी माइट ऐं बिया तपरस में पइजी विया ऐं रोदनु फिरी खुशीअ में बदिलिजी वियो । चयाऊं त ही छोकिरा के ईश्वर जो अवतार आहिनि ।

सिद्धनि जो मङिणो, शादी ऐं वैरागुः– हुननि छोकिरनि जी करामत दिसी, आग दीन्दड़ छोकिरे जे माइटनि हुननि ते हिर्खु हारे विधो, जो हुननि जे घरनि में ब कुंवारियूं नियाणियूं हुयूं ऐं हुननि छोकिरनि जे जोड़जसि हुयूं । सो हिननि वाधाई मोकिले बिन्हीं नियाणियुनि जो हुननि साणु मङिणो कयो । हुननि बिन्हीं छोकिरनि जो सांभरि खां वठी भगितीअ दांहुं लाड़ो हो ऐं ईश्वर जे रंग में रतल हुआ । जेका वाई वात मां

कढन्दा हुआ, उएं ई थीन्दो हो । छाकाणि त हू जनम खां ई सिद्ध-पुरुष हुआ । जद॒हिं शादीअ लाइक़ु थिया त कुंवारेते मुहूर्त जी छिक कई । पर हुननि भाउरनि पंहिंजे पीउ खे चयो त असांखे शादी करिणी कान्हें ऐं सफा इनकारु कयाऊं । वधीक चयाऊं त असांखे सन्सार जे महाज़ार में फासिणो ई कोन्हे । माइटनि डि॒ठो त नियात जे उसूल ऐं रवाज मूजिबु मङिणो टोड़े नथो सघिजे । तंहिं खां सवाइ परिवार वधाए, नुख खूहा काइमु रखिणी आहे । सो ई माइटनि ऐं अज़ीज़नि छोकिरनि खे ख़ूब समुझायो ऐं शादी करण लाइ ज़ोरु भरियो । लाचारु छोकिरनि हा कई । चवन्दा आहिनि त **"अंगु अज़ली आहे कादिर जो परे ऐं ना टरे ।"** आख़िर मुहूर्त निकितो ऐं शादीअ जी पक थी । ज॒ञ करे छोकिरनि खे परिणजण लाइ घोट करे वठी विया । साठ सोण करे, दे॒वनि वटि विहारे, ब्राह्मण हथियाला ब॒धी वेदी॒ पढ़ण शुरू कई । वेदी॒ पूरी थी ऐं हवन जे चौधारी टे फेरा त दि॒नाऊं ऐं चोथें फेरे ते हुननि जे दिलयुनि में वरी फेरो आयो त असांखे शादी करिणी कान्हें । आख़िर समुझाए चोथों फेरो बि दि॒यारियो वियो । शादी त थी चुकी, मगर हू घरु छदे॒ वञण लाइ त्यार थिया । माइटनि ऐं अज़ीज़नि घणेई समुझायो त तव्हां गृहस्त में रही भलि भगि॒ती करियो, पर हुननि न मञियो ।

गृहस्त जो त्यागु:– माइटनि ऐं बि॒यनि वरी बि छोकिरनि खे ख़ूब समुझायो ऐं केतिरे बि ज़ोरु भरण ते हुननि जो नाकारी जवाबु हो । सन्त भाउरनि चयो त हाणे असांखे कुझु बि न चओ, जो असांखे गृहस्त में रहिणो नाहे ऐं त्यागी॒ थीन्दासीं । इएं चई घरु छदे॒ हलण हारा थिया त बि॒न्हीं सन्तनि जूं धर्मपत्नियूं बि संदनि पुठियां हलण लाइ त्यारु थियूं ऐं पतियुनि जे पुठियां हलण लगि॒यूं । तंहिंते सन्तनि स्त्रियुनि खे चयो त तव्हीं मोटी वञो ऐं घर में रहो । मगर हू न मोटियूं ऐं जवाबु दि॒नाऊं त माइटनि असांखे तव्हांजे पुठियां लातो आहे, इनकरे असीं वापसि कोन वेन्दियूंसीं ऐं वेनती कयाऊं त असांखे बि पाण सां गं॒दु वठी हलो । जिते तव्हीं, उते असीं ऐं असीं तव्हांजे शेवा में रहन्दियूंसीं । लाचारु हू चारई, ब॒ सन्त ऐं ब॒ संदनि स्त्रियूं घरु छदे॒ रवाना थिया । हू रमन्दा ई रहिया, माइट ऐं बि॒या मोटी घरि आया । **सन्तनि जी "रली कुल्हे ते, रोटी राज॒ ते ।"** से घुमन्दा ऐं रटनु कन्दा, गो॒ठ ठोड़हा लुतिड़न वारा, तंहिं में अची गो॒ठ जे बा॒हिरां खब॒ड़नि में आराम कयो । ही गो॒ठु हालनि ऐं खन्डूअ जे वेझो आहे ।

बि॒न्हीं साधनि खे औलाद ऐं सन्तनि जी टु॒बी:– ठोड़हनि लुतिड़न जे गो॒ठ बा॒हिरां खब॒ड़नि में अची देरो कयाऊं, जिते एकान्त लगो॒ पियो हो ऐं कुदरती हवा सुठी लगी॒ रही हुई ऐं मौसम मुवाफिकु हुई, तंहिंकरे साध कुछु वक्त रहिया, जो सन्तनि खे अहिड़ा आस्तान ई वणन्दा आहिनि । छाकाणि त:–

"खब॒ड़ झंग ताज़ी हवा थी लगे॒ – चौतरफ शान्ति सिद्धनि खे मिले ।"

पोइ वदे॒ सन्त पंहिंजी धर्मपत्नीअ खे फोटो (इलायची) दि॒नो ऐं नन्ढे सन्त पंहिंजी धर्मपत्नीअ खे लौंगु दि॒नो ऐं चयाऊं त खाई छदि॒यो । तव्हीं गर्भवतियूं थीन्दियूं , तव्हांखे पुट ज॒मन्दा ऐं हाणे मोटी घरि वञो । आज्ञा जो पालनु करियो ऐं तव्हांजो कल्याणु थीन्दो । तंहिंते बि॒न्हीं कुंवारियुनि चयो त असांजी ऐं छोकिरनि जी तव्हां खां सवाइ सम्भाल केरु कन्दो? ऐं असीं तव्हां खां सवाइ सजी॒ हयाती कींअं गुज़ारीन्दियूंसीं? तंहिंते सन्तनि चयो त हिक सुवान्जे में मरी वेन्दी ऐं बी॒ वियमु थियण खां थोरो अगु॒ मरी वेन्दी ऐं बा॒रु पेट मां चीरे कढियो वेन्दो । बाकी बा॒रनि जी सम्भाल पाणेही पेई थीन्दी । उन्हनि जी चिन्ता तव्हीं न करियो । इएं चई बि॒न्हीं सन्तनि उते ई धरतीअ में टु॒बी हंई । धरती फाटी, सन्त उन में हलिया विया ऐं ज़मीन हिक सरीकी थी वेई ।

ऐं बुई स्त्रियूं उन्हीअ हंधि धरतीअ खे प्रणाम करे, उतां मिट्टीअ जी चप्टी खणी, मस्तक खे लगाए आज्ञा जो पालनु करे साहुरे घरि आयूं ऐं सरबस्ती ग़ाल्हि करे बुधायाऊं । फोटे ऐं लौंग खाइण करे बुई स्त्रियूं गर्भवतियूं थियूं । जदहिं भरिया महिना थिया त नन्ढीअ खे पुटु ज़ाओ ऐं वदी वरी महिननि ते गुज़ारे वेई । उनजो मृतक सरीरु अर्थीअ ते रखी कुरुक्षेत्र में खणी विया ऐं चिख्या ठाहे लम्बा दियण ते हुआ त आवाज़ु आयो: "अमानत वठो ।" पइंच आवाज़ु बुधी वाइड़ा थी विया ऐं लम्बा दियणु रोकियाऊं त वरी चिख्या मां आवाज़ु थियो त "अमानत वठो ।" त बि पइंच शान्त में रहिया । जदहिं टियों भेरो आवाज़ु आयो त "अमानत वठो" त पइंचनि पुछियो त कहिड़ी अमानत कंहिंखां वठूं ऐं कींअं वठूं? तंहिंते वरन्दी मिली त मुंहिंजो पेटु चीरे बारु बाहिरि कढी वठो । तंहिंते मसाण में दाईअ खे घुरायो वियो ऐं चिख्या खे चौतरफ परदो दिनो वियो । दाईअ वदी कुंवारि जो पेटु चीरे बारु बाहिरि कढियो, जो पुटु हो ऐं जीअरो हो । पोइ चिख्या खे लकड़ा दिना विया ऐं संदसि सरीरु पंजनि तत्वनि में मिली वियो । वदे सन्त जे पुट जो नालो **चीहल** रखियो वियो, जो पेट मां चीरे कढियो वियो ऐं नन्ढे सन्त जे पुट जो नालो **विनाइक** रखियो वियो । नन्ढे सन्त जी धर्मपत्नी बि पुट खे जनमु दियण बैदि परलोक पधारी । अंहिड़ीअ तरह बुई स्त्रियूं वञी पंहिंजनि पतियुनि सां मिलियूं । बारनि खे निपायो वियो, जे अजु नन्ढा सुभां वदा । अची नौजुवान थिया । **"वञी स्त्रियूं से पतियुनि सां गदियूं, पंहिंजूं यादिगीरियूं पुटनि में छदियूं ।"** सन्तनि जिते टुबी हंई हुई, उते संदनि माइटनि समाधियूं ठहिरायूं ।

चीहल ऐं विनाइक जी लीला:— हिननि खे संदनि दादे ऐं दादीअ निपाए वदो कयो । जदहिं ही छहनि वर्हियनि जा थिया त हिक दींहुं ओचितो चीहल गुमु थी वियो, माइट गोल्हा में निकिता ऐं गोल्हीन्दे गोल्हीन्दे टिऐं दींहुं ठोड़हनि लुतिड़नि में आया । दिसनि त जिते पिता ऐं काके खबड़नि जे विच में धरतीअ में टुबी हंई हुई, उते वेठो आहे । उहो दींहुं पूर्णमासीअ (सत्यनारायण) जो हो । पोइ माइट चीहल खे गोठु वठी आया । नन्ढे हून्दे ई बिन्हीं बारनि चीहल ऐं विनाइक घणेई लीलाऊं कयूं । माण्हू उन्हनि जो इहो रंगु दिसी अजब में पवन्दा हुआ ऐं हुननि जो अदबु कन्दा हुआ ।

आस्तान ऐं मेलो:— जदहिं सन्तनि टुबी हंई हुई सो दींहुं पूर्णमासीअ जो हो । उन दींहुं सत्यनारायण बि थीन्दो आहे । हिननि बिन्हीं सन्तनि जूं समाधियूं बि ठहिरायूं वेयूं हुयूं । पर पोइ समाधियुनि ऐं खबड़नि जे चौधारी भिति बि दियारे छदियाऊं । तंहिंकरे हर पूर्णमासीअ ते मेलो लगायो वेन्दो हो । सजी रात जागिरतो कथा वेन्दो आहे ऐं भजनु भाउ चालू हून्दो आहे । सुबूह जो एकम ते रोटु विरहाइबो आहे । गादी नशीन माण्हुनि, श्रद्धालुनि ऐं घुरिजाउनि खे संदनि घुर करण ते संदनि क़ामनाऊं पूरियूं करण लाइ सगा धागा ऐं रिखियाऊं लिखी दीन्दो आहे । किनि खे पाणी पढ़ी दीन्दो आहे । उन्हनि जूं मनशाऊं पूरियूं थीन्दियूं आहिनि । असूअ जे पूर्णमासीअ ते छमाही मेलो ऐं फगुण जे पूर्णमासीअ ते बारहंमाओं मेलो लगन्दो हो । पूर्णमासीअ ते धूड़िए जे दींहुं लगन्दो हो । माण्हू ओरे परे जा सवनि जे तइदाद में ईन्दा हुआ । जिनि जूं आसूं ऐं सुखाऊं पूरियूं थीन्दियूं हुयूं, से उते अची वेला दीन्दा हुआ ऐं यात्रियुनि खे खाराईन्दा हुआ । हीउ आस्थान सिन्धु में ठोड़हनि लुतिड़नि जे गोठ बाहिरां तैलिके हाला सिन्धु में आहे ऐं अञां बि काइमु आहे ।

सिद्धनि जे पुटनि में कला थी वसे, चीहल वेठो गादीअ जो मंज़िल रसे ।
विनाइक वधायो वंसु थो हसे, थियो केचु कण मां त खूहा पसे ।
थिया बार खत्रियुनि जा रोशनि मिनार, जंहिं ज़ात ऐं नुख में आन्दी बहार ।

सन्तनि जूं पीढ़ियूं ऐं गादीः– भगुत साहिब चीहलराम खां पोइ संदनि औलाद सिद्ध सवाई जनि रोटु विरहाए ॾींहुं मल्हाईन्दा हुआ । पर पोइ बाकाइदे सिद्धनि जी गादी काइमु करे उन्हनि जे औलाद मां गादीअ ते विहारीन्दा आया आहिनि । सिद्धनि जा वॾा अटिकल पंजनि छहनि पीढ़ियुनि खां अची गोठ अजनि शाह तैलिके हाला में रहिया ऐं ॿारहीं पीढ़ीअ खां लॾे अची नवनि हालनि जे शहिर में रहिया । सन्त चीहलराम जी छहीं पीढ़ीअ ताईं जो पूरो पतो मइलूमु कोन थी सघियो आहे । तंहिं खां पोइ जेकी बि गादीअ ते ब्राजमान थिया, उन्हनि जा नाला हेठि ॼाणाइजनि थाः– सतों भगुत साहिब लखमीचन्द, अठों भगुत साहिब निहालचन्द, नाओं भगुत साहिब मोटूमल, ॾहों भगुत साहिब हेमराजमल । भगुत हेमराजमल खे पुत्र सन्तान कोन हो, इनकरे संदनि ॿिए नम्बर भाउ गुरबेमल जो ॿियो नम्बर पुटु पुरुसूराम अञां माउ जे पेट में हो, धर्म जो पुटु करे घुरी छॾियाईं जो ॼाओ ऐं यारहों नम्बर गादी-नशीन थियो । ॿारहों संदनि पुटु गोधूराम गादीअ ते वेठो । तेरहों नम्बर भगुत मूरजराम ऐं हींअर चोॾहों नम्बर भगुत साहिब ईश्वरदास गादीअ ते ब्राजमान आहे ।

हिन्दुस्तान में आस्थान ऐं मेलोः– तारीख़ १५ आगस्ट सन् १९४७ में अंग्रेज़नि हिन्दुस्तान आज़ाद कयो । हिन्दुस्तान जा ॿ टुकर थिया हिकु हिन्दुस्तान (भारत–INDIA) ऐं ॿियो पाकिस्तान । सिन्धु पाकिस्तान में अची वेई, जिते मारामारी ऐं लुट-मार शुरू थी वेई । इनकरे सिन्धु मां हिन्दू लॾण लॻा ऐं अची हिन्दुस्तान में देरो कयाऊं । सिद्धनि जो तेरहों गादी-नशीन भगुत साहिब मूरज़राम हालनि (सिन्धु) मां लॾे ब्यावर ज़िले अजमेर (राजस्थान) में रहिया ऐं उते सिद्धनि जो आस्थान ठहिरायाऊं । धीरे-धीरे उनखे वधाईन्दा अॾावत कन्दा रहिया । हाणे त रंग लॻी विया आहिनि । सिन्धु वांगुरु हिते बि हर महिने, छमाहो ऐं ॿारहंमाहो पूर्णमासीअ जे ॾींहुं सिद्धनि जो मेलो लॻारायो वेन्दो आहे । रात जो जागिरतो करे भॼन भाउ ॻाए सुबूह जो एकम ते रोटु विरहायो वेन्दो आहे ऐं सन्त गादीअ ते वेठा हून्दा आहिनि ऐं उन्हनि खां श्रद्धालू पंहिंजे दुख निवारण लाइ या कामना पूरी करण लाइ ॾुस-पंध पुछन्दा आहिनि । उहे ॿुधाईन्दा आहिनि । किनि खे सॻो धाॻो ॾीन्दा आहिनि, किनि खे रिखिया ॾीन्दा आहिनि ऐं किनि खे पाणी पढ़ी ॾीन्दा आहिनि, हर मेले में चङा ई माण्हू ईन्दा आहिनि । ख़ास करे सालियाने मेले ते त सवें माण्हू परे-परे खां हली ईन्दा आहिनि ऐं सुखाऊं सुखीन्दा आहिनि । किनि जूं मन मुरादूं पूरियूं थीन्दियूं आहिनि ऐं के उते अची वेला बि ॾीन्दा आहिनि । हिन गादीअ खे न रुॻो ब्रह्म खत्री मञीन्दा आहिनि, पर भाईबन्द (हिन्दू लुहाणा) ऐं ॿियूं कौमूं बि मञीन्दियूं आहिनि ऐं चङो ई सिदिकु अथनि ।

(२) थल्हे वारा साध

सन्त दियालदास रामचन्द वारॾे

जनमुः– श्री रामचन्द नुख वारॾे ब्रह्म खत्री, शहिर नसरपुर तैलिके टन्डे अलहियार ज़िले हैदाराबाद सिन्धु में रहन्दो हो । हू जॾहिं लॾे शहिर खेबिर ज़िले हाला ॾे वञी रहिया हुआ त वाट ते ॻोठ पलेजाणीअ में विक्रमी सम्बत् १८४० या १८४१ धारे खेनि हिकु पुटु ॼाओ, जंहिं जो नालो ॾियालदास रखियाऊं जो ॻोठ खेबिरान में निपनियो । हू नन्ढे हून्दे जंत्र-मंत्र सिखियो, जंहिंजे आधार ते माण्हुनि खे परेशान कन्दो रहन्दो हो, पर माण्हू कुझु करे कोन सघन्दा हुआ । खेबिरन जो ॻोठु खेबिर अॾायो हो ऐं उन ई रामचन्द खे नसरपुर मां लॾाए हिति विहारियो हो । इहो लिहाज़ रखी माण्हू कुछन्दा ई कोन हुआ, पाण डिॼन्दा हुआ ।

पीउ जो पुट खे गुरुनि खे सौंपणु:– जदहिं रामचन्द खे संदसि पुट दियालदास जी माण्हुनि खे न करण जी ख़बर पवन्दी हुई त ढाढो उदास थीन्दो हो । लाचारु हिन पंहिंजे पुट खे ब़ाए केदारनाथ जी प टन्डे अलहियार में गुरुनि खे खणी दिनो । हीअ मढ़ी असुलु नांगनि जी हुई पर पोइ गृहस्थी थिया । रामच गुरुनि खे चयो त हाणे छोकर खे सम्भालियो ऐं हिते रही गुरुनि जी शेवा कन्दो । छोकरु मढ़ीअ में शेवा क ई रहियो ऐं खेसि राम नाम जो रंगु चढ़ण लग़ो ऐं पंहिंजो पुराणो सुभाउ त्यागे, नईं ज़िन्दगी गुज़ारण लग़ो ।

किरत, भगिती ऐं शादी:– जदहिं पिणसि खे मइलूमु थियो त हाणे मुंहिंजो पुटु सुधिरी लाईन ते अ वियो आहे, सो वियो गुरुनि वटि ऐं उते गुरुअ जी आज्ञा मूजिब मढ़ीअ में मोख्या देई वरी पुटु वापसि क आयो । जिते दियालदास पंहिंजे अबाणी किरत छुर खे लग़ी वियो ऐं गदोगदि ईश्वर जो भजनु बि क रहियो । हाणे त ग़ोठ जा माण्हू इहो रंगु दिसी शिकायत करण बदिरां साराह करण लग़ा । छाकाणि त अ दियालदास ऐं हाणोके दियालदास जे विच में धरतीअ आस्मान जेदो फ़र्कु हो । कुझु टाईम पुजाणां शा कयाई । औलाद थियो, चार पुट ऐं ब नियाणियूं ज़ायूं । पर गृहस्थीअ हून्दे बि मोह में कोन फ़ाथो । चव आहिनि त **माण्हूअ जे बिगिड़ण या सुधरण जी का मुन्द ई कान्हे** । सो हीउ अहिड़ो सुधिरी पियो, संदनि ख़ानदान जो नालो रोशन करे वियो ऐं संदसि नालो बि हमेशह पियो ग़ाइजे ।

वैराग़ ऐं जोग़ पचाइणु:– हिक दफ़े दियालदाय खे टन्डे अलहियार में सन्त बुधनाथ कबीर पन्थीअ जो दर्शन थियो, जंहिंजी शेवा में रहियो ऐं उपदेश वरिताईं जो १२ साल जोग़ पचाए सिद्ध कयाऊं ऐं अभ्या कन्दे, रची लाल थी विया । इन बैदि गुरुनि आज्ञा कयनि त हाणे मोटी घर वञु । गृहस्थ में रही **"सतगु सहाय"** जो वचनु उचारीन्दो रहु । हाणे दियालदास खे सन्त दियालदास करे कोठीन्दा हुआ । साईं लो दियालदास गुरुनि जी आज्ञा अंगीकार करे संदनि चरण चुमिया । तंहिंते सतगुरुनि आसीस करे फ़र्मायाऊं त स कार्ज सिद्ध थीन्दिइ, पोइ वापसि खेबिरन में आया । हाणे रुग़ो साईंअ जो महावाक्य उचारीन्दा रहिया । **"ह हाज में दिल धणीअ दे ।"** मथिएं गुर मंत्र जो जाप जपीन्दा ई रहिया । के माण्हू इहो बुधी साईं जनि ज हंसी उदाईन्दा ई रहिया । लेकिन ही सबूरीअ जा साहिब उन्हनि खे कुझु बि न चवन्दा हुआ ऐं पाण सतगुरु जे सत् वचन में ग़र्कु रहन्दा हुआ ऐं मस्तीअ में मस्त रहन्दा हुआ ।

नेस्ती हस्ती है यारो, और हस्ती कुछ नहीं;
बे ख़ुदी मस्ती है यारो, और मस्ती कुछ नहीं ।

सन्त सां गदु बिए सन्त जो रहणु:– खेबिरन जे शहिर में बियो बि हिकु सन्त दुयाराम वरनि वैश्य (हिन्दू लुहाणो) रहन्दो हो । हिन खे सन्त दियालदास जा वचन वणन्दा हुआ ऐं हिन सन्त सां गदु **"सतगुरु सहाय"** जो महावाक्य जपीन्दो ई रहियो ऐं पाण में घणो प्रेम थी वियुनि ऐं पोइ रहन्दा ई गदु हुआ । सन्त दुयाराम, सन्त दियालदास जी शेवा ऐं टहिल घणी सिक ऐं प्रेम सां कन्दो रहियो । सन्तनि जी ख़िज़मत चाकिरी बि कंहिं वदभाग़ीअ खे नसीब थीन्दी आहे । छो त:–

शेवा मंझा जिनि लधो लालु अण मुल्हो; सामी सिक सच्चीअ सां सदा शेवा कनि ।
लतां मुकां मोचिड़ा, सदा सिर सहनि; रता रंग रहनि अठई पहिर अजीब जे ।।

मगर बिन्हीं सन्तनि जो गदु रहणु ऐं यकी बोली बोलणु लोकनि ऐं कुटम्बियुनि खां सठो न वियो जो बिन्हीं सन्तनि जे घरनि जा भाती बिन्हीं जे प्रेम में अटकूं ऐं रन्डकूं विझण लगा, पर कामयाब कोन थिया। दुयाराम पाण शेवा में वेरां वेर सवायो पेर पातो।

वरी सतुरुअ जे दर्शन जी यात्रा ऐं गुरूअ जो परलोक पधारिजणुः– वक्त खां पोइ सन्त दियालदास खे सतुरुनि जे दर्शन जी प्यास अची सतायो, सो रङावत जो माल उठ भराए टन्डे अलहियार विया ऐं वञी वटिनि रही संदनि शेवा कयाऊं। घणनि दींहनि गुज़िरण बैदि सतुरुनि फर्मायुनि त हाणि मोटी वञु ऐं गृहस्थ आश्रम में रही बुई कार्ज संवारि। छाकाणि त तुंहिंजी कमाई कबूल पेई आहे ऐं तो मां सभुकी थीन्दो, पोइ वापसि घरि आया। उतां रङावत जो माल खणी मारवाड़ मुल्क में विया, जिते घणेई प्रेमी मिलियनि जिनि सां रिहाणियूं कयाऊं। मोटण वक्ति सन्त ऐं बिया पेरे उघाड़े केतिरा मेल पंधु करे उपड़ाइण आया ऐं विछोड़े जा लुड़िक वहाया। वरी मोटी टन्डे अलहियार आया, जिते संदनि सतुरू बुधनाथ पंहिंजे चेले उत्तमनाथ खे आसण ते विहारे परलोक पधारिया। पोइ बारहें महिने साईं लोक दियालदास खेबिरन में मोटी आया ऐं अची सन्त दुयाराम सां मिलिया।

साथी सन्त खे मुस्लिम फकीर वटि रहाइणुः– खेबिरन जे वेझो हिकु फकीरु नोहुथियाणी थी गुज़िरियो आहे। जंहिं जी तुरिबत ते हर साल मेलो लगन्दो आहे। उनजे पोटे फकीर महम्मद सन्त दुयाराम खे पंहिंजे बनीअ में भाईवारु बणायो पर कमु कोन दिनाईं। रुगो भन्डारे जी चार्ज दिनाईंसि। सन्त दुयाराम बुई कम याने भन्डारे जो कमु ऐं भगवान जी भगिती कन्दो ई रहियो। साईं लोक दियालदास सन्त दुयाराम खां पुछियो त रुगो भन्डारो हलायुइ या रात जागन्दो बि हुएं? तंहिंते वरन्दी दिनाईं त पहिरीं सभिनि जी शेवा करे पोइ रात ऐं ताति खे लगो पियो होसि।

थल्हे जो आस्थनः– फकीर महम्मद सन्त खे हिक बनी जंहिं जी माप ३ एकड़ ३७ घंटा हुई, सा दिनी। इहा खेबिरन खां हिकु मेलु पंधु परे हुई। सन्तनि उते बैठक, भन्डारो ऐं समाधियुनि लाइ आस्थान टहिरायो। सन्त दियालदास उते हिकु थल्हो टहिरायो ऐं आस्तान जो नालो ई थल्हो रखियो। जो अञां ताईं थल्हे वारी दरबार जे नाले सां मशहूरु आहे ऐं हिननि सन्तनि खे अजु ताईं चवनि ई थल्हे वारा साध।

त्यागः– हाणे बुई सन्त थल्हे ते रहण लगा ऐं घरनि खे त्यागे छदियाऊं जो हुननि खे बिलकुल पूरो वैराग लगी वियो। ही बुई हिक ई कपड़े में रहन्दा हुआ। संदनि हृदे में सदाईं मन मोहन जी मुरलीअ जी धुन बुधिबी हुई ऐं इएं ई चवन्दा हुआ त प्यारा असां गृहस्थयुनि ते सतुरू महराज कृपा दृष्टि करे अमीक विलाइत जी तत सार बख़्शीश कई आहे। जेको मर्द प्रेमी हून्दो, तंहिंखे अटल पदवीअ जी प्राप्ती थीन्दी। उते रोज़ानो सत्संगु कन्दा हुआ, ऐं कईं प्रेमी उते अची सत्संग जो लाभ वठन्दा हुआ। जदुहिं मंज़िल ते पहुता त गोठ वारनि तोड़े घर वारनि, जे अगे संदनि भगितीअ में रोड़ा ऐं रंडकूं विझन्दा हुआ, से छदे दिनियूं ऐं पोइ पूरन विश्वास रखी उहे हमदर्द बि थिया ऐं संदनि सत्संग बि प्रेम सां बुधन्दा हुआ। सच्चनि ते साहिब बि राज़ी आहे।

सन्त दियालदास जो परलोक पधारिजणुः– हिक दींहुं साईं लोक दियालदास सन्त दुयाराम खे चयो त थारूअ दींहुं हिन फानी दुनिया मां लादाणो कबो, तंहिंकरे असां जे शरीर खे गाए खीर सां इश्नानु कराए, थल्हे

ते समाधी डिजो। इहा आज्ञा अठ डींहं अगु डिनाऊं। कुटम्बियुनि ऐं नियातियुनि चयो त समाधी न वठो, असां ते कलंकु ईन्दो। इन ते साईं लोक प्रबुल काठी मच मां खणी निरिड़ ते रखी त लहिस ई कान आई। फर्मायाऊं त हरीअ जे प्यारनि खे बाहि डियणु गुनाहु आहे। पोइ कुटम्बियुनि ऐं नियातियुनि खे यकीनु थियो, पेरनि ते किरी माफी वरिती। चयाऊं त असांजी बाति नाहे ऐं समाधी डियणु कबूल कयाऊं। इहा गाल्हि सो मुल्क में पखिड़िजी वेई ऐं दूर-दूर खां कईं सन्त सिदिकी ऐं प्रेमी इहो अचम्भो डिसण वास्ते अची उते हाज़िर थिया। बराबर तारीख़ १७ महिनो नाहिरी सम्बत् १६४० विक्रमी जे सन्त डियालदास पंहिंजे साथी सन्त दुयाराम जे मथे ते हथु फेराए फर्मायो "हाणे सत् लोक डांहुं सांबाहो आहे। तव्हीं सत् वचन जो नेम सां अभ्यास कन्दा रहिजो त अटल पदवी प्राप्त कन्दा।" पोइ सभिनी खे नमस्कार करे चादर् ताणे लेटी पिया ऐं ईश्वर जो नालो वठन्दे परलोक पधारिया ऐं जोती जोति समाया।

समाधी ऐं मेलोः– संदनि अज़ीज़नि ऐं पंइचनि सन्त जी आज्ञा अनुसार संदसि मृतक शरीर खे गांइ जे खीर सां इश्नानु वग़ेरह कराए ऐं क्रियाकर्म पूरो करे थल्हे ते समाधी डिनी। उन आस्तान ते हर साल तारीख़ १७ नाहिरी खां ३ डींहं मेलो लगन्दो हो। जिते किथे-किथे ज़ा यात्री ईन्दा हुआ। के दर्शन करण ईन्दा हुआ त के आशाऊं ऐं उम्मेदूं रखी ईन्दा हुआ। उन्हनि जूं उहे पूरियूं थीन्दियूं हुयूं। अहिड़ीअ तरह ही सन्त अमर आहे। हिन्दुस्तान आज़ादु थियण बैदि विरहाङे सबबु सिन्धु पाकिस्तान में हली वेई ऐं हिन्दू लदे हिन्दुस्तान में आया। सन्त डियालदास जे औलाद लडण बैदि राजकोट (गुजरात) में अची आस्थान ठाहियो ऐं उते श्री रूपचन्द ईसरदास वारदे हर साल तारीख़ १७ नाहिरी मेलो लगाराईन्दो आहे। सन्त दुयाराम जे औलाद गोठ माटूंगा ज़िलो अलवर (राजस्थान) में आस्तान ठाहियो, उते श्री रीझूमल १८ वेसाख ते बिन्हीं सन्तनि जो मेलो मल्हाईन्दो हो ऐं रीझूमल जे सुर्गवास थियण बैदि संदसि पुटु मटूंगा में मेलो लगाराईन्दो आहे। मेलो ज़ोरदारु लगन्दो आहे।

(३) सन्त बाबो नारग दोड़

जनमुः– सन्त जा वडा हिन्दू खटी (ब्रह्म खत्री) नुख दोड़ वारा असुलु गोठ जरवार तैलिके टन्डे अलहियार ज़िले हैदराबाद सिन्धु में रहन्दा हुआ। पर बाबे नारग जो पिता उतां लदे सैदनि जे गोट, जो गोट चम्बड़ ऐं गोठ लजवाणियूं जे विच में आहे। ही टेई गोठ बि तैलिके टन्डे अलहियार में आहिनि। अटिकल २०० सालनि जी गाल्हि आहे त सैदनि जे गोठ में हिन आकहि में छोकर जो जनमु थियो, जंहिंजो नालो नारग रखियो वियो। हिन छोकर जो नन्ढे हून्दे खां ई भगितीअ में लाड़ो हो ऐं ईश्वर जो पूरण भगत हो। हिनजा माता पिता, जडहिं ही अञा नन्ढो ई हो त सुर्गवास थी विया, संदनि नालनि जो अञा पतो पइजी वि कान सघियो आहे। नारूअ जी संदसि डाडीअ सम्भाल कई ऐं पालण पोषण करे वडो कयो। हीउ डाडीअ खे वि अमां करे कोठीन्दो हो।

धन्धोः– नारू जडहिं कुझु वडो थियो त अबाणी किरत कपड़े जी रङाई ऐं छपाई शुरू कयाईं ऐं उन मां उपरासो करे डाडी पोटो गुज़रु कन्दा हुआ।

करामत देखारणुः– छपण लाइ हथ जी उणियल खादीअ जो कपड़ो आसपास जे बहिराड़ियुनि मां वठी ईन्दो हो। सवड़ि, पथराणी, रजाई, विहाणो ऐं बुजको वग़ेरह मिलन्दा हुअनि। हिनखे तांदिणी चइबो आहे।

रंगु चुल्हि ते चरू चाढ़े उनमें रंगु विझी पोइ कोराई नंग खणी धणीअ जो नालो ऐं रजाई विहाणे वग़ेरह जो नालो वठन्दो चरूअ में विझन्दो वेन्दो हो। टहिकण बैदि नंग चरूअ मां कढन्दो हो ऐं नालनि अनुसार उहे ई नंग त्यारु थी निकिरन्दा हुआ। महिमान-नवाज़ बि डाढो हो। हिक दफ़े हिक जञ अची वटिसि लथी। हिन दादीअ खे चयो त अमां देगिड़ियूं खणी चाढ़ि। नन्ढियुनि देगिड़ियुनि में ताम त्यारु थियो ऐं हिन उन्हनि मां जा़ञियुनि खे खारायो। उहे ग़ाल्हियूं गोठनि में पखिड़ियूं त माण्हुनि संदसि नालो ई रखियो बाबो नारग। दादुइंस चयो त अबा करामत बन्दि करे वञी नौकिरी करि।

नौकिरीः– उन गोठ में हिकु नुखिड़ियो मुसलमान खटी रंगाई छपाईअ जो कमु कन्दो हो, नारू बि वञी हिन वटि पघार ते बीठो ऐं छपाईअ जो कमु कन्दो हो। कमु तमामु सुठो ऐं दिलपसन्द कन्दो हो। तंहिंकरे खटीअ जो मथिसि प्यारु थी वियो ऐं पघार बि वधाए डिनाईंसि।

शादीअ लाइ आछ ऐं कोशिशः– ब्रह्म खत्रियुनि में पुराणो रवाजु हलन्दो आयो आहे त कंहिं बि नियातीअ वटां छोकर लाइ वाधाई अचे त उहा वठिणी आहे ऐं मोटाइणी कान्हे। इनकरे हिन ऐलानु कयो त मां शादी न कन्दुसु ऐं ब्रह्मचारी रहन्दुसु। हिक दफ़े मुसलमान खटीअ जी ज़ाल खे दिल में इहा ग़ाल्हि अची वेठी त असां खे कुंवारी कन्या नौजुवान वेठी आहे, छो न हिनजी शादी नारूअ सां कराइजे, जो उम्र में जोड़-जसि आहिनि ऐं छोकरु बि सुहिणो ऐं सुलछिणो आहे। पर मुड़िस सां इहा ग़ाल्हि कीअं कढे, सो मौको पिए गोल्हियाईं। हिक डींहुं नारू (बाबो नारग) बाहिरि पखिड़ियल नंग खणण लाइ वञी रहियो हो त उन खटीअ पंहिंजीअ वडिवर धीअ खे चयो त वञु नारूअ जे पुठियां नंग खणाए अचींस। जोणसि इहो बुधी चयो त हाणे ग़ाल्हि कढण जो मौको मिली वियो। रात जो चयाईंसि त तो धर्म त हारे छडियो। हाणे पंहिंजी धीअ परिणाए डियो नारग खे। मुड़िस खे बि इहा ग़ाल्हि पसन्द पेई ऐं चयाईंसि त बराबर, पर ही हिन्दू आहे पाण मुसलमान आहियूं। वरी पोइ चयाईं त पोइ छा आहे, आहियूं त बई खटी। अगे वात मां ग़ाल्हि कढन्दा हुआ त काइमु रहन्दा हुआ। चवन्दा हुआ त **"धुर्त पड़िए, धर्म न छोड़िए।"**

बाबे नारग जो शादीअ खां इनकार, भजणु ऐं टुबी हणणुः– रात थी त बाबे नारग खे घर में घुराए खटीअ ऐं संदसि ज़ाल चयो त हाणे परिंणजण जे लाइकु आहीं। तोखे पंहिंजी सुहिणी, सुलछिणी ऐं नौजुवान धीउ परिणाए डियूं त तुंहिंजो घरु ठही पवन्दो ऐं असांजी धीउ बि वञी शींहं कुल्हे चढ़े। पर हिन साफ़ इनकार कयो ऐं चयो त ब्रह्मचारी थी रहन्दुसि। पोइ हिननि पंहिंजे अज़ीज़नि सां सलाह करे रिथियो त नारग खे रात जो घरु घुराए ज़ोरीअ निकाहु विझायूं। नारग खे सुणिस पइजी वेई जो घरु छडे गोठ जे बाहिरां अची झंग मुंहुं करे हलण लगो। जीअं तकिड़ो तकिड़ो पिए वियो त दोस्त चोइथराम गडियुसि ऐं पुछियाईंसि त केडांहुं थो वञी? वरन्दी डिनाईं बुधाइण जो वक्तु कान्हे, हलियो आउ मुंहिंजे पुठियां। होडांहुं जडहिं खटीअ खे नारग जे भजण जी ख़बर पेई त २-३ साथी साणु करे पुठियां पियुसि। हलन्दे-हलन्दे जडहिं नारग ऐं चोइथराम चम्बड़नि जे गोठ खां अटिकल टे मेल खनु परे पहुता त थकिजी बि पिया हुआ ऐं परियाऊं डिठाऊं त खटी ऐं २-३ जणा पिया अचनि। उते हिकु क़िमामु हो। उनजे थोरो परियां नारग धरतीअ ते लत हणी चयो त माता जाइ डे त तुंहिंजे गोदि में अचां। हिनजो इएं चवणु त धरती फाटी पेई ऐं नारग टुबी हणी अन्दरि वियो त धरती बन्दि थी वेई। तंहिंते चोइथराम चयुसि त यार मूंखे छडे न वञु, साणु वठी हलु। तंहिंते धरती वरी

बि फाटी ऐं चोइथराम बि टिपु डेई अन्दरि हलियो वियो ऐं धरती बन्दि थी हिक सरीकी थी वेई । तेसीं खटी जनि बि अची उते पहुता ऐं हीउ लकाउ डिसी दंगि रहिजी विया ऐं हैरानु थी मोटी हलिया विया ।

नारग जो खुवाब में दर्शन डियणु:– उन रात मूलचन्द मंघूमल दड़ा डामवाणी टन्डे अलहियार वारे खे खुवाब में बाबे नारग दर्शन डिनो ऐं चयाईसि त असां मूं ऐं मुंहिंजे दोस्त चोइथराम चम्बड़नि खां मेल परे मुकाम जे कुंड वटि धरतीअ में टुबी हंई अथऊं । उते निशानीअ तौरि हिकु धड़ियो बियो कटारो पोर रखिया अथव, जे खणी अचो । जे शादीअ वक्ति कोठिड़ीअ जे पिड़े में छापिजो ऐं उते असां बिन्हीं समाधियूं ठहिराए चौतरफ भिति डियारे छडिजो ऐं अडाइजो न ।

आज्ञा जी पेरवी ऐं समाधियूं:– सुबूह जो मूलचन्द मुखीअ ऐं पंइचनि खे खुवाब वारी हकीकत बुधाई ऐं उन लाइ चार पंच जुणा मुकररु कया विया ऐं सर ज़मीन ते पहुता त डिठाऊं त बराबर बुधायल जाइ ते धड़ियो ऐं कटारो रखियो आहे । पोइ टन्डे अलहियार जे ब्रह्म खत्री पइंचात ब समाधियूं ठहिराए चौतरफ भिति डियारे छडी ऐं शादीअ वक्ति कुंवारि लाइ कोठड़ीअ जो पिड़ो छापियो वेन्दो हो उन में धड़ियो ऐं कटारो बि लगायो वेन्दो हो । पर सन् १९४७ में सिन्धु मां लडे हिन्दुस्तान में अचण बैदि हिक बिनि में कोटड़ीअ जो पिड़ो छपियो पर हाणे केरु कोन थो छपे फ़क़ति कोठिड़ीअ जे नाले ते हिकु गुलाबी वगो पिड़े में विधो वेन्दो आहे ऐं उहो ई कोठिड़ीअ जो पिड़ो कोटिबो आहे । खुवाब वारी जाच बैदि हकीकत पंइचनि डाडीअ खे बुधाई पोइ खटीअ बि बुधायो ।

मेलो:– जींअ त बाबे बडे जे चन्ड ते धरतीअ में टुबी हंई हुई, तीअं बडे जो चन्डु ऐं बडे जी तरीख १ ऐं २, टे डींहं ब्रह्म खत्री पइंचात टन्डे अलहियार वारी मेलो हणाईन्दी हुई । सजो सामान खाधे पीते जो, रध-पचाअ जा बासण ऐं रहण लाइ तम्बू ढगे गाडियुनि में खणी ईन्दा हुआ । मेले में किथे-किथे जा माण्हू ईन्दा हुआ, दर्शन करे प्रसन्न थीन्दा हुआ । सजो डींहुं भजन भाउ लगो पियो हून्दो हो । यात्री उननजो बि आनन्द वठन्दा हुआ ।

माई चुखीअ जी समाधीः– माई चुखीअ जी समाधी मुकाम जे वेझो बाबे नारग जी समाधीअ खां परे सद पंध ते हुई । माईअ चुखीअ डिठो त बाबो नारग मूंखां ज़ोरु आहे ऐं मंज़िल में मथे आहे । तंहिंते हुकुमु कयाई त **"मेलो मुंहिंजो जाट बाबे जी ।"** इनकरे जेके बि यात्री बाबे जे मेले ते ईन्दा हुआ, से माईअ चुखीअ जे समाधीअ ते वञी दर्शन ऐं नमस्कार करे ईन्दा हुआ ।

डाडीअ जी समाधीः– जडहिं बाबे नारग जी डाडीअ जो अंतकाल जो समो आयो त पंइचनि खे चयाईं त मुंहिंजी समाधी बाबे जी चौखन्डीअ जे दरवाज़े वटि थल्हे ते ठाहिजो । संदसि परलोक पधारिजण ते पंइचनि उनजी पेरवी कई ।

छुर वक्ति प्रार्थनाः– बाबे जी समाधीअ खां पोइ पंहिंजा नियाती जडहिं बि पटिए ते नंग विछाए छपण शुरू कन्दा हुआ त चवन्दा हुआ तः

> ***उस्तादनि जा उस्ताद गुरु पीर उस्ताद, लुकमान हकीम हिकमत जा साईं बेड़ा बने लाईं ।***
> ***कंहिंजो कीन विञाईं, बाबा नारग नूरी, कजांइ कम हुज़ूरी ।।***

सुखाऊं ऐं सिद्धीः– के माण्हू दिल में आशाऊं ऐं कामनाऊं रखी मेले में ईन्दा हुआ ऐं पलउ पाराईन्दा हुआ ऐं के सुखाऊं सुखे वेन्दा हुआ । से सभु पूरियूं थीन्दियूं हुयूं त पोइ के प्रसाद चढ़ाईन्दा हुआ ऐं के वेला डीन्दा हुआ ।

समाधीअ बैदि पिरताः– (१) तेजूमल वाणियो वेठलु गो॒ठ डीशक लगि॒ शहिर मीरवाह गोरचाणी ज़िलो थरपारकर सिन्धु तंहिंखे परिणे वर्हि गुज़िरी विया पर औलाद कोन थियो। जंहिं बा॒बे॒ जी समाधीअ ते अची पलउ पारायो ऐं पंधु कन्दो ई रहियो, जंहिंखे बा॒बे॒ जी आसीस सां पुटु ज़ाओ, जंहिंजी झिंडि अची हिते लहिरायाई ऐं वेलो दि॒नाईं।

(२) हिकु मुसलमान नाले ख़मिसो ज़ाति लजवाणी जंहिंजी ज़मीन बा॒बे॒ जी चौखन्डीअ भरिसां हुई, उन बु॒नीअ में उन पोख पोखी हुई, जंहिंजी सम्भाल लाइ रात दीं॒हं उते रहन्दो हो। हिक दीं॒हुं दा॒ढी बरसात अची पेई, हिनजी मानी घरां अची कान सघी ऐं खेसि बुख बि अची लगी॒। कंहिं वक्ति दि॒से त हिक खट आसमान मां लही रही आहे। जंहिंते बा॒बो॒ नारग ऐं संदसि टहिलयो टहिलराम वेठलु गो॒ठ चम्बड़, बु॒ई वेठल हुआ जा खट पीहे वटां थी, मोटी चौखन्डीअ में लथी। ही बि वु॒ना ठहि पाणी वराए पीहे ते चढ़ियो त दि॒से त टिनि ज़ुणनि जी गर्मा गर्म रोटी रखी आहे। पोइ हेठां बि॒नि साथियुनि खे सदे॒ बु॒धायो त बा॒बो॒ रोटी रखी वियो आहे, अची खाओ। हिननि जो हाणि सिदिकु पक्को थियो ऐं मेले में वहिटनि लाइ गाहु ऐं भन्डारे लाइ काठियूं दे॒ई वेन्दा हुआ, कदहिं पाणी बि अची भरीन्दा हुआ।

(३) हिकु दफ़ो मेले वक्ति भज़न भाउ कन्दे चौखन्डीअ में ख़ुदि बख़ुदि जोति जलन्दे सभिनी यात्रियुनि दि॒ठी ऐं अची उन जोति जो दर्शन कयाऊं ऐं संदनि वेसाहु बि वधी वियो।

(४) हिक सालि मींहुं अची पियो ऐं झरि झंग पाणी थी वियो ऐं रस्ता बन्दि थी विया, इनकरे मेले खे महिमुल कयो वियो त बडे जे चन्ड बदिरां असूअ जे चन्ड ते लगा॒यो वेन्दो। हिक भाईवन्द जी सुखा पूरी थी सो ई सघिरो नन्ढे पुट समेति घोड़े ते चढ़ी झरि झंग झागे॒ अची चौखन्डीअ ते सिज लथे पहुतो, दि॒से त उते त हिकु माण्हू बि कोन्हे। सो ई हू घोड़ो बा॒हिरि बधी, गाशो लाहे, चौखन्डीअ में विछाए सुम्ही पिया। जदहिं निन्ड आयनि त आवाज़ु आयो त उथी रोटी खाओ त उथी दि॒सनि त बि॒नि थाल्हियुनि में गर्मा गर्म रोटी रखी आहे ऐं छोकरे लाइ लोटे में गर्म खीरु रखियो आहे। ही बु॒ई रोटी खाई छोकिरे खे खीरु पीआरे सुम्ही पिया। सुबूह जो उथिया त बासण हुआ ई कान। पोइ हू सलाम भरे, प्रसाद चाढ़े वापसि गो॒ठि विया।

(५) हिक दफ़े किनि पंइचनि खे ख़्यालु आयो त तम्बुनि में पाणी थो अचे, तंहिंकरे चौखन्डी अदा॒इजे, सो ई अदा॒रायाऊं। रात गुज़िरी सुबूह थियो त सजी॒ छिति परियां पेई आहे। इहो दि॒सी चयाऊं त असां आज्ञा जो उल्लंघन कयो आहे ऐं अची बा॒बे॒ खां बख़्शायाऊं।

(६) हिक दफ़े मेले में रात जी रोटी थे ठाहियाऊं त दि॒ठाऊं गीह जो दबो॒ ख़ाली पियो आहे। दबो॒ भगलु हो ऐं गीहु सभु वही ज़ियानु थी वियो, सो गीह लाइ मुसलमाननि जे घरनि में विया, जिनि चयो त गीहु सभु विकिणी आया आहियूं बाकी मखणु पियो आहे। सो मखणु वठी आया ऐं पघारे गीह में विधाऊं। सुबूह जो जदहिं मखण जा पैसा दि॒यण विया त उन चयो त जंहिं चादी॒अ मां मखणु कढी तव्हां खे दि॒नो, सा चादी॒ मखण सां भरी पेई आहे। बा॒बे॒ असांखे सवायो करे दि॒नो आहे। सो ई असां पैसा कोन वठन्दासीं।

हिन्दुस्तान में आस्थान ऐं मेलाः– हिन्दुस्तान आज़ाद थियण बैदि विरहाडे में सिन्धु पाकिस्तान में हली वेई, हिन्दू लदे॒ हिन्दुस्तान में आया। बा॒बे॒ जी नुख दो॒ड़वारा असुलु वेठल गो॒ठ जरवार जा, लदे॒ अची राजकोट रहिया, तिनि अची समाधियूं ठाहिरायूं ऐं हर साल बडे जे चन्ड ते मेलो लगा॒राईन्दा आहिनि। ब्यावर

जी ब्रह्म खत्री पइंचात शहिर जे बाहिरां रेल जे पटे जे हुन पासां आस्थान ऐं समाधियूं ठाहे हर साल सुठो मेलो लगाराईन्दा आहिनि । अजमेर में भगवान गंज में हिकु आस्थान आसूमल भोजोमल दगिया ठहिरायो आहे । जंहिं में स्वामी लीलाशाह जी मूर्त स्थापित थियल आहे ऐं बाबे नारग ऐं संदसि दोस्त जूं समाधियूं ठहिरायूं वेयूं आहिनि । उते बि ब्रह्म खत्री पइंचात हर साल मेलो लगाईन्दी आहे । तंहिं खां सवाइ सांगानेर में ब्रह्म खत्री पइंचात हिक धर्मशाला ठहिराए उनजे हिक पासे बाबे जनि जूं समाधियूं ठहिरायूं आहिनि ऐं हर साल मेलो लगाराईन्दा आहिनि । बियो जयपुर में मानसरोवर, मालवीय नगर, सांगानेर, कोटा, बड़ोदा, जेतपुर ऐं बियनि किनि शहिरनि में पइंचातुनि तरफां दींहुं मल्हाए, मेलो लगाराईन्दा आहिनि ।

(४) सन्त रतन भगत

जनमुः– भगत रतनराम, ज़ाति जो ब्रह्म खत्री जो जनमु १८३० धारे गोठ जमालियुनि तैलिके टन्डे बागे ज़िले हैदराबाद सिन्धु में थियो । संदसि पिता जो नालो ऐं नुख जो पतो पइजी कोन सघियो आहे । जीअं त जमालियुनि जे गोठ में नुख छूंछा वारा रहन्दा हुआ । शायदि रतन भगत जी नुख बि छूंछा हुजे । वरी बी वि गाल्हि आहे त संदसि गादीअ ते भगत टोंरमल वेठो । उनजी नुख छूंछा हुई । ही जेको मुख़्तसरु अहिवालु लिखियो अथमि सो बि मूंखे स्वामी लीलाशाह महाराज जनि बुधायो हो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई भगितीअ में लाड़ो ऐं ईश्वर में अटल विश्वास ऐं पूरन प्रेम हो । शायदि संदसि पूरब जनम जे कर्मनि जो संस्कार हो । सन्तनि ऐं महात्माउनि जो संग कन्दे जन्म-भूमि गोठ जमालियूं छदे तिनि सां गदु घुमन्दो वतन्दो हो । पोइ आख़िर शहिर तलहार ज़िले टन्डे बागे में आस्थान ठाहे उते रहण लगो । जिते सत्संग कन्दो हो, जो प्रेमी बुधण ईन्दा हुआ । बाकी जेको वक्त हून्दो हो, उन में एकान्त में वेही ईश्वर सां लंवलीन थी वेन्दो हो ऐं बियो को बि समाउ कोन रखन्दो हो । जदहिं जोती जोति समाया, त उनखे तलहार में गूनी वाह जे कप ते समाधी दिनी वेई, जा कची ठहिराई वेई । संदनि ब्रह्मलीन थियण बैदि गादीअ ते संदसि चेलो भगत टऊंरमल जेठोमल छूंछा विहारियो वियो । पर सन् १६१८ में तलहार छदे हलियो वियो । तंहिं जो पतो ई कोन्हे त केदांहुं हलियो वियो । सन् १६२२ धारे गादीअ ते स्वामी लीलाशाह महाराज जनि खे विहारियो वियो । छाकाणि त स्वामी लीलाशाह भगत रतनराम जो ई दिनलु हो । हिन सन्त स्वामी लीलाशाह जे पिता श्री टोपणदास खे आशीर्वाद कई हुई त तोखे बारहें महिने पुटु जमन्दो, सो असांजे आस्थाने ते दिजि । बराबर बारहें महिने टोपणदास खे पुटु जाओ, जंहिंजो नालो लीलाराम रखियो वियो जो पोइ स्वामी लीलाशाह सदियो । जदहिं लीलाशाह ५-६ सालनि जो थियो त श्री टोपणदास सन्त रतन भगत वटि वठी वियो ऐं वञी छोकर जी बांहं दिनाईं ऐं वेनती कयाईं त स्वामी ! मोख्या वठो, छोकरु मोटाए दियो । रतन भगत लीलाशाह जे मथे ते आसीस जो हथु घुमाए चयो त मोख्या कान वठिबी, बाकी छोकरु वठी वञो । असांजो हून्दो त पाणेही ईन्दो । सो ई सन्त रतन भगत जे चवण मूजिब लीलाशाह पाणेही दरबार में आयो ऐं उनखे गादीअ ते विहारियो वियो, जो समुझियो वियो त गादीअ जो पूरो हकदारु आहे । स्वामी लीलाशाह हिन आस्थान खे चङीअ तरह ठहिरायो ऐं समाधी बि सुठे नमूने ठहिराई, उते संदनि रहण लाइ कुटिया हुई जंहिं में हिक गुफ़ा ठहिराई । किनि वर्हियनि पुजाणां आस्तान बियनि खे सौंपे गादी त्यागे रमन्दा रहिया ऐं वञी हिमालय पहाड़ ते तपस्या करण लगा । पर पोइ जदहिं तलहार में ईन्दा हुआ त अची हिन आस्तान जी कुटिया जे गुफ़ा में ई रहन्दा हुआ ।

मेलोः– सन्त जे समाधीअ ते हर साल मेलो लगन्दो हो । स्वामी लीलाशाह मेले जो सजो बंदोबस्त करे मेले जे वक्त में झंग में हलिया वेन्दा हुआ । पुठियां शहिर जा माण्हू ऐं शेवाधारी सम्भाल कन्दा हुआ । मेले ते माण्हू सिदिक ऐं श्रद्धा सां ईन्दा हुआ ऐं अची सुखाऊं बासीन्दा हुआ ऐं उन्हनि जूं मन मुरादूं पूरियूं थीन्दियूं हुयूं पोइ अचीं वेला दीन्दा हुआ ऐं यात्रियुनि खे खाराईन्दा हुआ । पंहिंजे छपाईअ जो कमु शुरू करण ते बाबे नारग जे नाले सां गदु सन्त रतन खे बि याद कन्दा हुआ । चवन्दा हुआ तः

"बाबा नारग नूरी कमु कजांइ हज़ूरी सन्त रतन तूं सहाय थिज ।"

हीउ जुमिलो स्वामी लीलाशाह महाराज जनि बि आम तरह कतबु आणीन्दा हुआ ।

(५) सन्त भगत ईसरदास टऊंरमल खूहा

जनमुः– भगत ईसरदास जो जनमु श्री टऊंरमल नुख खूहा जे घरि सन् १८३० ई० ऐं १८४० ई० जे विच धारे नन्ढड़े गोठ कुंब दाड़ू तैलिके शहिदादपुर ज़िले नवाबशाह सिन्धु में थियो । कुंब दाड़ू नालो इनकरे पियो, जो हिकु वदो तलाउ हो । उन तलाअ तां ई गोठ जो नालो पियो । ईसरदास भगत जनि चार भाउर हुआ याने टऊंरमल खे चार पुट हुआ ।

सुभाउः– सुभाअ जा हलीम ऐं सादा हुआ, पक्का विश्वासी हून्दा हुआ । सत्संग ऐं भजन भाव जो तमामु घणो शौंकु होनि । बियो मंझिंन नशे पत्ते वग़ेरह जो को बि ऐबु कोन होनि ऐं सभ कंहिं जे भलाईअ में हून्दा हुआ । कंहिंजो बुरो न सोचीन्दा हुआ, न कन्दा हुआ । ईश्वर सां लिंव लगाए लंवलीन थी वेन्दा हुआ । को बि चवन्दो होनि त भगत, भजन त बुधायो त उन वक्त ई तम्बूरो खणी भजन गाइणु शुरू कन्दा हुआ ।

किरतः– भगत साहिब अबाणो धन्धो कपड़े जे रङावत ऐं छपाईअ जो कमु कन्दा हुआ । जदहिं कमु अध में छदे गाईन्दा हुआ त संदसि भाउर टोकीन्दा हुअसि । चवन्दा हुअसि त जेको साधू अचे त खणी तम्बूरो वेही रहीं । आख़िर भगत चयुनि त अदा मूंखे कमु विरहाए दियो, आंऊं पाणेही पूरो पियो कंदुसि त भाउर अची खिलन्दा हुआ । वदे भाउ बियनि खे चयो त इएं करे आज़माऐ त दिसो । नेठि इएं कयो वियो । भाउर दिसन्दा हुआ त भगत खे जेदी महिल दिसु त साधुनि सन्तनि सां पियो रिहाणियूं करे ऐं शब्द पियो गाए । हू टेई भाउर पंहिंजे हिस्से जो कमु पूरो करे, भगत खे चवन्दा हुआ त खणी आउ तुंहिंजे हिस्से वारो कमु । भगत वरन्दी दिनी त भजनु पूरो करे कमु खणी थो अचां । भगत साहिब शब्दु पूरो करे, हिस्से वारो मिलयलु कमु खणी अची भाउरनि खे पेश कयो । जां खणी दिसनि त सजो कमु पूरो ऐं बराबर थियलु हो । अहिड़ी छुर, जहिड़ा मोती जड़िया पिया आहिनि । वरी जदहिं रङण जो दींहु आयो त नंगनि जा चार हिस्सा कयाऊं त कुझु नंग वधी पिया । हू चवे त तूं खणु, हू चवे त तूं खणु । तंहिंते भगत चयो त अदा, सभु दियो मूंखे त आंऊं थो रङियां । हिननि बि सभेई नंग खणी भगत खे दिना । हू त हलिया विया बिए कम कारि ते ऐं भगत वियो सत्संग में । भाउर मोटी अची दिसनि त सभु माल रङियो पियो आहे ऐं रंग जाचियाऊं दिठाऊं त रंग अहिड़ो, जहिड़ा मींहं वसाड़ा । इहो दिसी भाउरनि खे दन्दें आङुरियूं अची वेयूं । पोइ सही कयाऊं ऐं समुझियाऊं त ही बराबर सच्चो भगत आहे । उन दींहं खां पोइ भाउर भगत खे कुझु बि कोन चवन्दा हुआ । भगत जी मर्ज़ी, कमु करे या न करे । पोइ भाउर भगत जो अदबु रखन्दा हुआ ।

"भगुत जो करे ख़्याल भगुवानु थो, रहे तिनि मथां यारु महिरबान थो ।"

सन्त जी महिमां – कुंब में सुतियूं या सिपूं:– सांवण जो महिनो हो, बरसात जी मौसम हुई । आसमान में ककर हुआ ऐं बारिश जी सनही बून्द वसी रही हुई । थधी हवा जी हीर लगी रही हुई त गोठ जो हिकु मुसलमान दरवेश नाले फतह अलदीन ज़ाति जो डेरो बकिरियूं चारीन्दे उन्हनि खे पाणी पीआरण लाइ कुंब ते वठी आयो । भगुत ईसरदास बि सनानु करण लाइ कुंब ते आयो । भगुत बि पाणीअ में घिड़ी, उनखे छन्डनि जे रूप में उछले, बरसाती बून्दुनि सां मिलाइण लगो । भगुत दरवेश खे चयो त साईं ! बूंन्दूं त डिसो, जहिड़ा सच्चा मोती । फकीर फर्मायो त अबा, वाकई सच्चा मोती आहिनि । भला बुई पहुतल शख़्स हुआ ऐं लातमां हुआ, उन्हनि खे सच्चनि मोतियुनि जी कहिड़ी परवाह? उन कुंब में सुतियूं थीन्दियूं हुयूं ऐं उन डींहं खां सुतियुनि में सच्चनि सिपुनि वांगुरु सच्चा मोती थीन्दा हुआ । हिक डींहु भगुत ईसरदास उतां अची लंघियो त कंहि सुतियूं पिए कढियूं । भगुत पुछियुसि त छा कन्दा? हुन वरन्दी डिनी त पसार में कमु ईन्दियूं आहिनि, सो वञी पसारीअ खे विकणंदुसि । तंहिंते भगुत चयुसि त सुतियुनि में सच्चा मोती अथेई त हाज़ुरु माण्हू अर्चा खिलण लगा ऐं भगुत खे चयाऊं त साईं, सच्चनि मोतियुनि वारियूं सिपूं त समुन्ड में थीन्दियूं आहिनि । उते हिकु सोनारो टिक्योमल बीठो हो, तंहिं हिक सुती खणी पटी त बराबर सच्चो मोती निकितो । पोइ त हरहिक सुतीअ मां हिकु हिकु सच्चो मोती निकिरण लगो । माण्हू कढन्दा रहिया, तां जो हीअ गाल्हि पखिड़जी वञी सरकार जे कन ताईं पहुती । सरकार माण्हुनि खे सुतियुनि कढण खां मनइ करे पहिरो वीहारियो । इहा ख़बर जडहिं बिन्हीं दरवेशनि ईसरदास ऐं फतह अलदीन खे पहुती त बुई गडिजी कुंब ते आया ऐं ऑफीसरनि खे चयाऊं त इहो ठीकु नाहे । उन्हनि चयो त इहा माया सरकार जी आहे । तंहिंते बिन्हीं दरवेशनि चयो त हाणे सुतियुनि जूं सुतियूं ई रहन्दियूं ऐं सच्चा मोती सुतियुनि मां सिपुनि वांगुरु कोन निकिरन्दा । बराबर ऑफीसरनि सुतियूं खोले डिटियूं त सच्चा मोती कोन निकिता, हू भुल बख़्शाए रवाना थिया । पर सुतियूं जीअं सुतियूं वरी कोन उथियूं ।

सन्त जी परीक्षा ऐं लीलाः– नन्ढिड़े गोठ में पाणीअ जे नेकाल लाइ नालियूं कोन ठहियल हून्दियूं हुयूं । सो जंहिं डींहुं भगुत रंग रङीन्दो हो त उन डींहुं घणें पाणी हारिजण सबबु गलीअ में गप चिक थीन्दी हुई । गोठ वारनि भगुत खे चयो त ऐतिरो पाणी न हारि । वरन्दी डिनाईं त पाणी केडांहुं नेकालु करियां, थोरे वक्त में सुकी वेन्दो । पर किनि वञी ऑफीसरनि खे चुग़ली हई, सो हिकु सेनेटरी ऑफीसर उठ ते चढ़ी शहिदादपुर मां कुंब दाड़ूअ जांच लाइ आयो । गप चिक डिसी भगुत खे घटि वधि गाल्हाइण लगो । जडहिं मोटियो त उठ थाबो खाधो, ऑफीसर किरी पियो ऐं घणियूं चोटूं रसियसि ऐं उठ जी टंग भजी पेई । किनि उनखे चयो त भगुवान जे भगुत खे रंजायो अथेई, तडहिं ही हाल थियो अथेई, हाणे वञी भुल बख़्शाइ । पोइ उहो ऑफीसर पाण खणाए सन्त वटि आयो ऐं अची मॉफी घुरियाईं । सन्त चयो त मूं त कुझु बि न चयो आहे, न कयो आहे । सभु प्रभु पाण पियो करे, असांजो सजो नंगु उनते आहे । पर जडहिं तूं आयो आहीं त असां वटि उन धणीअ जी धूणी दुखन्दी आहे, उन मां भभूती खणी मखियोसि ऐं उठ खे बि मखियो । उहो चवणु मञी धूणीअ मां भभूती खणी ऑफीसर ऐं उठ खे मखी वेई त उते जो उते बुई चङा भला थी पिया, जणु

त कूड़ु पिए गा़ल्हायाऊं । पोइ ऑफ़ीसर ऐं जतु सन्त खे पेरें पई नमस्कार करे वापसि रवाना थिया । गा़ट वारनि पोइ महिसूस कयो त वाकई ही सच्चो सन्त आहे । अगि़ते हुनजो अदब रखन्दा हुआ ।

कुटिया:– ऑफीसर अर्जु कयुसि त जेकी घुरिणो हुजेव, सो घुरो त मां कोशिश करे सरकार मां तव्हां खे वठी डी़न्दुसि । भगु़त चयो त हिति भन्डार भरिया पिया आहिनि, कंहिं बि शइ जी कमी कान्हें, पर तव्हां चओ था त खणी कुटिया जे वास्ते ज़मीन डि़यो । पोइ ऑफीसर लिखपढ़ करे मंज़ूर कराए भगु़त खे ज़मीन वठी डि़नी । जिते हिन आस्तान ठाहियो ऐं धूणी हंई । उन एकान्त वारे ऐं अकेले आस्तान ते रही भगु़वान जे भज़न ऐं भगि़तीअ में अठ ई पहिर रतो रहियो ऐं कदुहिं कदुहिं त समाधी लगा़ए ईश्वर में लंवलीन थी वेन्दो हो।

"भगि़ती करे पाताल में, प्रघट होए आकास,
रजब तीनों लोक में, छुपे न हरि का दास ।"

सो अहिड़े सन्त जी गा़ल्हि चौधारी पखिड़जी वेई ऐं किथे किथे जा श्रद्धालु वटिस ईन्दा हुआ ऐं केतिरा ई पंहिंजूं मनो-कामनाऊं दिल में रखी ईन्दा हुआ, से उन्हनि जूं पूरियूं थी वेन्दयूं हुयूं । केतिरा साधू ऐं सन्त बि वटिस ईन्दा हुआ ऐं सत्संग लगी़ वेन्दो हो ।

परलोक पधारिजणु:– भगु़त साहिब जदुहिं परलोक वञण जी त्यारी कई त उते जे पइंचनि खे चयाऊं त मूंखे हिन कुटिया में ई समाधी डि़जो । जदुहिं भगु़त ही संसारी चोलो छडे़ परम धाम पधारियो त संदनि आज्ञा अनुसार खेनि उन कुटिया में ई समाधी डि़नी वेई । समाधीअ जी शेवा संदसि औलाद कन्दो हो । श्रद्धालु उते ईन्दा हुआ ऐं लाभु वठन्दा हुआ ।

औलाद ऐं गादी:– भगु़त साहिब खे बु़ पुट हुआ । हिकु भगु़त विशनदास, ब़ियो भगु़त रूपचन्द । गादीअ ते भगु़त विशनदास खे विहारियाऊं । कुटिया जे अन्दर हिकु निमु जो वणु हो, जंहिंते पखी अची विहन्दा हुआ ऐं विठियूं लाहीन्दा हुआ। इनकरे भगु़त विशनदास निमु जा टार ऐं टारियूं कपाए छडि़यूं त नकी पखी विहन्दा, नकी विठियूं भगु़त जे समाधीअ ते किरन्दियूं । पर उहा निमु त भगु़त जी छत्रछाया हुई ऐं न कपाइण जी आज्ञा कई हुई । आज्ञा जे उल्लंघन करण करे खेसि तकलीफूं ऐं परेशानियूं थियण लगि़यूं । पोइ त भगु़त साहिब खां बख़्शायाईं। निमु जो थुड़ु अञा बि कुटिया में काइमु आहे। भगु़त विशनदास खे पुटु नाजोमल हो। विशनदास जे सुर्गु़वास थियण ते संदसि पुट नाजेमल गादी सम्भाली। भगु़त नाजेमल खे हिक ब़नी हुई, पर हिक साल पाणीअ जी अची तंगी थी, जो खूहनि में बि पाणी खुटी वियो । हिक डीं़हुं खेसि भगु़त ईसरदास दर्शन डि़नो ऐं चयो त हुरला लाहे छडि़ । माण्हुनि जूं ब़नियूं पाणीअ ते पचन्दियूं ऐं तुंहिंजी लूअ ते पचन्दी। सो हुन आज्ञा मञी हुरला लाहे छडि़या । भरि वारनि जी ब़नी टिक्येमल सोनारे जी हुई त उनखे बि चयाईं त तूं बि हुरला लाहे छडि़, पर हुन न मञियो। फसुलु लथो त भगु़त नाजेमल जो तमामु घणो अनाज थियो, पर ब़ियनि जे ब़नियुनि मां अधु अन्नु बि कोन लथो । भगु़त नाजेमल जे सुर्गु़वास थियण ते उनखे बि उते समाधी डि़नी वेई । उन वैदि नाजेमल जो पुटु भगु़त पिर्तोमल पाकिस्तान थियण ते सिन्धु मां लडे़ हिन्दुस्तान में आयो ऐं अची दिल्लीअ में रहण लगो़ ऐं उते सन् १९७५ ई० में परलोक पधारियो। हिनजो अहिवालु अगि़ते पढ़ो बाबु २ जे नम्बर ११ ते ।

(६) सन्त ॿालो भगॻत छत्ताकपूर ब्रह्मचारी

जनमुः– ॿाले भगॻत जे जनम जी पूरी तारीख़, महिने ऐं साल जो पतो कोन्हें ऐं नकी संदसि पिता जो नालो मालूम थी सघियो आहे । हिन जो जनमु अटिकल सन् १८१५ ई० में नुख छत्ताकपूर में ॻोठ टन्डे फज़ुल तैलिके हैदराबाद ज़िले हैदराबाद सिन्धु में थियो । हिनखे हिकु वॾो भाउ हो, जंहिंजो नालो मोहनदास हो । उनखे टे पुट हुआः वॾो जसूमल, विचों टहिलराम ऐं नन्ढो पोहूमल ।

किरतः– हीउ अबाणो कमु रङावत ऐं छपाईअ जो कन्दो हो । ही घणो करे तान्दणी (रिज़िकी हथ जो खादी) जो कमु कन्दा हुआ । ॿालो भगॻत कदुहिं कमु कन्दो हो त कदुहिं सत्संग में हलियो वेन्दो हो । भाउ ऐं भाइटिया हिनखे टोकीन्दा हुआ, पर ही कुछन्दो असुलु कोन हो । जेको कमु ॾीन्दा हुअसि, सो पूरो ऐं बिलकुल सुठो करे ॾीन्दो हो, इनकरे पोइ कुछु कोन चवन्दा हुआ ।

भॻिती ऐं सिद्धीः– ही ॿाल ब्रह्मचारी हो । ॾिसण में सादो ईन्दो हो पर लिकलु लाल हो । शान्तीअ सां ऐं एकान्त में वेही भॻवान जो भॼन कन्दो हो । पंहिंजीअ मस्तीअ में मस्त रहन्दो हो । हिक ॾींहुं प्रभात जो झंगल करण वियो त उन ॾींहुं सीउ ॾाढो हो ऐं पारो वसियो हो । उन में वणनि जा पन बि सड़ी विया हुआ, पर अकनि जा पन बि सड़ी विया हुआ । हिन ॾिठो त वणनि ऐं ॿूटनि खे सीउ पइजी रहियो आहे, सो घरि अची तान्दणीअ जो त्यारु थियलु माल सवड़ियूं, पथराणियूं, रजायूं ऐं बुजका वग़ेरह खणी, हिकु हिकु करे वणनि ऐं ॿूटनि जे मथां विझी उन्हनि खे ढके आयो । सिज जो पहिरु खनु चढ़ियो त भगॻत जो वॾो भाउ मोहनदास अन्दर कोटीअ में कंहिं कम सां वियो । उते ॾिसे त तान्दणीअ वारो त्यारु थियलु माल आहे ई कोन । सो ॿाले भगॻत खां पुछियाईं त माल केॾांहुं वियो त चयाईं त धणियुनि खे ॾेई आयुसि । पुछियाईंसि त कीअं ॾेई आएं त चयाईं वणनि ऐं ॿूटनि खे सीउ पिए पियो, सो उन्हनि खे ओढाए आयुसि । तंहिंते भाणसि चयुसि त हली ॾेखारि, सो वठी वियुसि शहिर जे ॿाहिरि । चयाईं त हिननि खे ओढाया हुयमि । पर उते त उहे नंग हुआ ई कोन, माण्हू लाहे खणी विया । मोहनदास चयुसि त हाणे धणियुनि खे पैसा भरे ॾियणा पवन्दा, से ईन्दा किथां? तंहिंते वरन्दी ॾिनाईं त पैसा वठूं था । सो हिक अक जे पाड़ में काठी खणी खोटियाईं ऐं चयाईं त भाई पैसा त ॾियो त अक जे पाड़ वटि हिक नन्ढी कसी वहण लॻी, उन में चांदीअ जा रुपया ऐं रेज़ो पिए वहियो । भाणसि खे चयाईं त हाण कपड़े ऐं रङाईअ जा खणु पैसा । मोहनदास रुपयनि ऐं रेज़े जी झोल भरे खंई । दिल में चयाईं त ॿीणां टीणां पैसा मिली विया । पर रङाईअ ऐं कपड़े जो हिसाबु करे पैसा ॻणियायां त ओतिरा ई पैसा थिया, वधीक कोन हुआ । ॿिया बि अहिड़ा करिश्मा उनजा कई ॾिसण में आया । ही ६५-७० सालनि जे ॼमार में परलोक पधारियो । सन्त जे वॾे भाउ मोहनदास जो पड़पोटो केवलराम हिन वक्त जेतपुर में रहन्दो आहे ।

(७) सन्त पारयो भगुत उर्फु पार साहिब धान्धा

भगुत पारयोमल उर्फु पार साहिब नुख धान्धा जो जनमु राजे जो गोठ साल वारो झिरकन अंजि न भरिसां तैलिको कोटिड़ी ज़िलो पहिरीं कराची पोइ दादू सिन्धु में थियो । संदसि पितां जे नाले जी ख़बर कान पइजी सघी आहे । खेसि हिकु पुटु टेऊंमल हो, जंहिंजो औलाद टेवाणी आकहि सदिबी आहे । संदसि औलाद मां पंजीं पीढ़ी वसूमल लदे अची मातिली ज़िले हैदराबाद सिन्धु में रहियो ऐं सतीं पीढ़ी चेतनदेव जो औलाद जेतपुर ऐं भेरूमल ऐं गोपालदास जा पुट दूल्हानोमल ऐं शंकरदास राजकोट (गुजरात) में रहनि था ।

भगुत पारयोमल जो नन्ढे हून्दे खां ई सत्संग ऐं भजुन भाव दांहुं लाड़ो हो । अबाणो धन्धो छपाई ऐं रङाईअ जो कन्दो हो । पर किथे बि सत्संग या भजुन भाअ जो बुधन्दो हो त कमु अध में छदे ओदांहुं हलियो वेन्दो हो । ईश्वर जे रंग में रतल हो । सुभाअ जो सादो हून्दो हो । संदसि औलाद हिन जूं कई करामतूं दिठयूं । अञा बि संदसि पोयां संदसि नालो वठी को कमु कन्दा आहिनि त उन्हनि में कामयाब वेन्दा आहिनि । संदनि पोयनि, मां किनि बुधायो त खेसि हथ में २ जिन्न बि हुआ, जे संदसि चेला ऐं दोरीअ में बधल हुआ । उन्हनि खे को बि हुकुमु कन्दो हो त उहे पूरो कन्दा हुआ । ही सुर्गवास बि राजे गोठ में थियो । हिनजे पड़पोटे जे पड़पोटे चेतनदेव जो अहिवालु दिसो बाब ७ जे ४ नम्बर ते ।

(८) सन्त बाओ शेवाराम कारातेला

जनमुः– जदहिं जदहिं ईश्वर जी कंहिं घर वारे मथां या शहिर मथां कृपा थीन्दी आहे त को न को सत्पुरुष ऐं सन्त उते उन घर में जनमु वठन्दो आहे । अहिड़ीअ तरह सन्त शेवाराम नुख कारातेला में सन् अटिकल १८४० ई० में शहिर टन्डे अलहियार ज़िले हैदराबाद सिन्धु में जनमु वरितो । संदसि पिता जे नाले जी ख़बर कान पइजी सघी आहे । बाकी संदसि भाउ जो नालो मूलचन्द हो । अंजु नन्ढो, सुभां वदो । जदहिं बारु हो त सुभाउ तमामु माठीणों ऐं वणन्दड़ हो, इनकरे हिक जेदा ऐं हिक सर्ता खेसि तमामु घणो भाईन्दा हुआ । उन सां रांदि खेदण ऐं बाग़नि ऐं झंगलनि में गदु घुमण जो मौको चङो मिलन्दो हो । उन्हनि जी दिल ई कान थीन्दी हुई त को शेवाराम खां जुदा थियूं । हिन ते पूरब जनम जा संस्कार हुआ, जे हिन जनम में प्रघटि थी रहिया हुआ ऐं साथ दीन्दा रहिया ।

किरतः– हीउ जदहिं वदो थियो, तदहिं अबाणी कारि रङाई ऐं छपाईअ जी करण लगो । रंगनि जा मसाला कदहिं टन्डे अलहियार मां वठन्दो हो ऐं जे उते न मिलन्दा हुआ, से कोटिड़ीअ शहिर मां वठी ईन्दो हो । रङावत ऐं छपाई करे पंहिंजो गुज़रु सफरु पियो कन्दो हो । किस्मत सां हिनजी छपाई रंङाई सुहिणी बीहन्दी हुई त माण्हू चाहीन्दा हुआ त असीं पंहिंजो कपड़ो हिन खां ई छपायूं ।

गुर मिलण ऐं वैरागुः– हिक दींहुं सन्त शेवाराम रंग ऐं मसाला वठण लाइ कोटिड़ीअ विया त उते हुनखे मालूम थियो त बाओ देवो साहिब अखिलापुरी कच्छ वारा उते आयल आहिनि, जे कथा करे रहिया आहिनि । हीउ वखर वठण खां सवाइ सिधो कथा बुधण वियो, जा चालू हुई । कथा बुधन्दे ई खेनि वैरागु उत्पन्न थियो । दिल में चयाईं त वखर अजु बि कोन थो वठां ऐं सुभाणे बि कथा बुधी पोइ वठन्दुसि । कुदिरत अहिड़ी, जो बाओ देवो साहिब लांच में चढ़ी रवाना थिया । इहो बुधी वैराग में चयाईं त हाण छा थीन्दो? हाण

छा थीन्दो?? हाण छा थीन्दो??? ब॒ाओ साहिब जनि बि दिलयुनि जा मालिक हुआ ऐं उन्हनि जे दया सां शेवाराम खे अनुभव थियो ऐं दिल जी कली खुली पेई ऐं चयाईं तः–

भज॒न

थुल– वाटूं नितु थी निहारियां, अङण शाल अचनि ।

१. चिणकी रहियुम चित्त में साईं भला – पर वैराग॒ियुनि जा वचन ड़ी जेदि॒यूं । वाटूं ...
२. पिर्त दि॒नाऊं पंहिंजी साईं भला – भला मुहब्बत ब॒ारिया मच ड़ी जेदि॒यूं । वाटूं ...
३. सूरत जा सुहिणा साईं भला – भला वेर न था विसरनि ड़ी जेदि॒यूं । वाटूं ...
४. **'शेवाराम'** चवे सतुर मुंहिंजा भला – भला दि॒जो संगु सदे॒ ड़ी जेदि॒यूं । वाटूं ...

मथियों शब्दु चवण सां झूटो अची वियुसि । जां छिर्कु भरे सुजागु॒ थिए त दि॒से त गले में कंठी ब॒धी पेई आहे ऐं गुर शब्द मुख मां अज़खुदि उचारिजी वियो । ओदु॒ी महिल चयाईं त ग॒ोठ वापसि कहिड़ो वञां? छोन गुरुनि जो दर्शन करे अचां?

"जद॒हिं पिरीं याद पिया, तद॒हिं ब॒ी वाई वियनि विसरी ।"

हाणे दिमाग़ में इहा ई धुन लग॒ी पेई हुई त फीअं बि ऐं किथे बि गुरुनि जो दर्शन ज़रूर करियां ।

***गुरूअ जो दर्शनः*–** इहो वीचारु करे कोटिड़ीअ मां सिधो कच्छ दे॒ रुखु रखियाईं ऐं टन्डे अलहियार मोटण जो इरादो लाहे छदि॒याईं । पंधु कन्दे कन्दे झर झंग झाग॒ीन्दे, रण पट लताड़ीन्दे उन हन्धि पहुतो, जितां गुरूअ जो शहिर कच्छ खां अञां १० मेल परें हो । उन वक्त संदसि गुरूअ खे मइलूम थियो त सिन्धु जो सन्त अची रहियो आहे, पर मूंखां बि मंज़िल मथे चढ़ी वियो आहे । तंहिं आसपास गामन में ढंढोरो फेरायो त सिन्धु जो सन्त अची रहियो आहे, उनजी आजियां करे, दुहिल दमाम ऐं बाजा वज॒ाए शान मान सां वठी अचो । तंहिंते पंज हज़ार माण्हू कठा थी विया, जो दिल में चाहिना थियनि त सिन्धु जो सन्त दि॒सूं ऐं संदसि दर्शन करियूं । उहे माण्हू अगि॒ते वधी वाट ते सन्त शेवाराम खे अची गदि॒या ऐं वदी॒ आजियां सां हुनखे वठी आया । दरब॒ार जे चांउठ ते पेर रखन्दे मुख मां ही चार पद चयाईंः–

भज॒न

थुल– सच्चनि रामु सुञातो, कूड़नि नाहे कल ।

१. भिटकी भिटकी वेहु भव में साईं भला – वो रातो दी॒हं रुलनि । सच्चनि ...
२. रसु न चखियाऊं राम जो साईं भला – भोग॒नि मंझि भुलनि । सच्चनि ...
३. संगु न कयाऊं साध जो साईं भला – मोग॒नि साणु मिलनि । सच्चनि ...
४. **'शेवाराम'** चवे भरम भुलाया साईं भला – कंहिं सां सूर सलनि । सच्चनि ...

पोइ गुरूअ जा दर्शन करे गदि गदि थियो । के दी॒हं उते रही ख़ूब गुरुनि जो उपदेश, कथा ऐं वाणी ब॒ुधाई ऐं उन्हीअ भगि॒तीअ जे रंग में महू थी वियो । होदां॒हुं ब॒िए तरफ गुरू बि खुशि त मूंखे चङो चेलो मिलियो आहे, जो मंज़िल में मूंखां मथे थी वियो आहे । हिनखे हिन सां रिहाण करण में मज़ो पिए आयो । ब॒ई हिक ब॒िए खे दि॒सी गदि गदि पिए थिया ऐं हिक ब॒िए जे दर्शन मां ढापनि ई कीन । अहिड़ो होनि पाण में प्रेम ।

***आस्तानोः*–** कच्छ मां थी पोइ सिधो पंहिंजे शहिर टन्डे अलहियार में आया ऐं उते अची आस्तानो बणायाऊं । छपाईअ जो कमु करण बन्दि कयाऊं । पोइ भग॒वान जे भज॒न में मश्गूल रहिया । हाणे माण्हू मन्

खे ब॒ाओ शेवाराम करे कोठण लग॒ा । हिन आरतान खे वड॒ो टिकाणो बनायो वियो । टिकाणे में रोज़ कथा थीन्दी हुई । ही टिकाणो मुंहिंजो (लेखक जो) डि॒ठलु आहे ऐं मां बि केतिरा दफा कथा बु॒धण वियो होसि । पाण सदाईं पंहिंजे ईश्वरी मस्तीअ में मस्त रहन्दा हुआ । हाणे चौतरफ हिन सन्त जो नालो थी वियो ऐं किथे किथे जा माण्हू वटिस दर्शन करण लाइ ईन्दा हुआ । छाकाणि त खेनि ओचितो वैराग॒ लग॒ो ऐं गुरुनि जी कृपा थी ऐं पूरब जनम जा संस्कार साथ थिया, जो थोरे वक्त में रची लाल थी विया ।

शाह अब्दुल-लतीफ चयो आहे तः-

"नंव नीअर द॒ह दा॒णियूं ऐं पंधरहं पेच प्यार्स,

पर जद॒हिं पिरीं याद प्यास, तद॒हिं छिर्कु छिनाऊं हेकड़े ।"

साग॒ीअ तरह हिन सन्त खे बि परमात्मा जो छिर्कु पियो त संसारी ब॒न्धन सभु टुटी विया ।

धीरज जी आज़माइशः- ही तमाम धीरजवान, साबिरु, सन्तोषी ऐं थधे सुभाअ वारो हो । चिड़ त हून्दी ई कान हुयसि । दुनिया में भांति भांति जा माण्हू पिया आहिनि । के माण्हू सन्त खे चेड़ाइण लग॒ा । उन्हनि हिक डीं॒हुं छा कयो जो अङर संदसि गादीअ ते रखी विया, बि॒ए वक्त छेणां, टिएं वक्त आलो छेणो ऐं मिट्टी रखी विया । मगर इहो डि॒सी बि सन्त खे चिड़ कान लग॒ी ऐं नकी गुस्सो कयो । हू हर वक्त गादीअ खे सफा कन्दो ई रहियो, पर रखन्दड़नि खे कुझु बि न चयाईं । हिक दफे उन्हनि माण्हुनि रात जो देर सां बेगाह वक्त अची संदसि निन्ड फ़िटाई ऐं दर ते सद॒ करण लग॒ा । ब॒ाए साहिब अन्दरां पुछियो त केरु आहियो? त जवाबु डि॒नाऊंसि त "माण्हें जा मुड़िस ।" ब॒ाए साहिब दर लाहे चयो त भले आया, अन्दर अचो ऐं उन्हनि जी ख़ूब ख़ातिरी कई । ही भज॒न चयाऊंः-

भज॒न

थुल- मूं घरि सन्त अचनि, आंऊं कुलबान वञा ।

१. आसण अखिड़ियुनि में आंऊं उन्हनि खे डि॒यां - पेर धोई प्रीत मां जेकर शाल पिआं,

चरख़ो चण भण जो भेरे भूंइं सां भञा ।

२. चिल्मूं चॉक करे हक्का हिस भरियां - भांतनि भांतनि जा खाइण खुशीअ मां करियां,

खाराए खुशि करे, फल फूल फोटा डि॒यां ।

३. पलंग विछाए प्रीत मां भावीअ सां भला - सुम्हारे सेज ते झलियूं झोल झुलां,

ग॒ाल्हियूं गु॒झ अन्दर जूं उनसीं आंऊं करियां ।

४. चित्त चोखा साधूअड़ा लच्छणनि लाल रत्ता - मीर मुहब्बत माण भरिया नशे नाम मता,

'शेवाराम' चवे वाट उन्हनि जी डि॒सां ।

भग॒त ऐं सन्त जी हीअ हलति डि॒सी पशेमान थिया ऐं पछतायाऊं, पोइ सन्त खां माफी वठी हलिया विया ।

परलोक पधारिजणु ऐं गादीः- संदनि परलोक पधारिजण ते गादीअ ते कच्छ वारे गुरूअ जा चेला विहन्दा हुआ । पोइ टन्डे अलहियार जे खत्रियुनि खे चयाऊं पर हुननि इनकार क़यो । पोइ गादीअ ते हिकु भाईबन्द विहारियाऊं । उन बैदि भोज॒ाराम, पोइ चोइथराम वेठा । वरी कच्छ वारे ब॒ाए मंगलराम गादी सम्भाली, पाकिस्तान थियो, ब॒ाओ बि सुर्ग॒वास थियो । पोइ टिकाणो ऐं गादी छडे॒ हिन्द में हलिया आया ।

(९) सन्त मंघाराम प्रेमजी भूत

जनमुः– हिन भारत भूमीअ जे उत्हन्दे पासे सिन्धु प्रान्त जे (हाणे पाकिस्तान में) ज़िलो थरपारकर शहिर ड़ीपले नाले कच्छ जे रिण सां लागू ४०० घरनि जी बस्ती (हाणे १५०० घरनि जी बस्ती) वारो आहे। हिते घणो करे मुसलमान ज़ात जा मेमण रहन्दा हुआ। बाकी थोरा घर हिन्दुनि जा हुआ, तंहिंमें १८ घर ब्रह्म-खत्रियुनि जा हुआ। उते ब्रह्म खत्री भूत नुख वारो प्रेमजी जे घर में विक्रमी सम्बत् १६०० जे मांघ महिने जे सुद्धी पूनम जे ड़ींहुं माता केसर बाईअ जे कोख मां सुपुत्र मंघाराम जनमु वरितो। अजु नन्ढो, सुभां वडो। जंहिं नन्ढे हून्दे खां ई भगवान जी अनन्त भगिती कई। वडे हून्दे परमात्मा जे रूप जो साक्षात्कार कयो। जंहिंकरे संदसि नालो जग में ज़ाहिरु थियो। अहिड़नि पुटनि खे हज़ारें धन्यवाद, जंहिं माता पिता जो नालो अमरु कयो ऐं पंहिंजो कुलु ऊजल कयो।

साखी– ***जननी जुणे त हरी भगत या दाता या सूर,***
न त रहे वांझणी न गंवाए नूर।

किरतः– ही अबाणी किरत रङावत जो कमु कन्दो हो, तंहिंसां गडु भगवान जी भगिती बि कन्दो हो। वई रस रहाईन्दो हो। **"हथु हाज में दिल दिलदार डे।"** वारी कारि हुअसि।

भगितीअ ड़ांहुं लाड़ोः– पूरब जनम जे कर्मनि अनुसार खेनि बालपिण खां ई ईश्वर डे लाड़ो हो। संदनि वृति साधू सुभाअ जी हुई ऐं हरी भगतनि डे प्रेम वारी पसिबी हुई। छो तः– **"सपूतु पुटु पींघे में पधिरो।"** इन्हीअ चवणीअ मूजिब संदनि बालकपिणे जी चेष्टा बि चमत्कारी हुई। नन्ढपुणि खां ई साधुनि जो संगु करणु, भजन गाइणु, सन्तनि जी शेवा करणु, कथा कीर्तन बुधणु ऐं करणु ऐं सत्संग में ई वञणं ते संदसि भावना आहिस्ते आहिस्ते जीवन में ज़ोरु वठन्दी वेई।

गुरू करणुः– खुशि नसीबीअ सां खेसि ईश्वर डे ड़ोरीन्दड़ गुरू ड़ीपले खां हिक कोह जे पंध ते खीरोली गोठ में तेजमालजी रामजी नाले राजगुरू ब्राह्मणु मिली वियो, जो अनुभवी महात्मा ऐं सच्चे सरूप जो ज्ञाता हो। हू ग्रहस्ती ब्राह्मणु हो। संदसि लाइ इएं चवण में अचे थो त पूरब जनम में योगी हो। सागिए खीरोली गोठ वेझो हिक जगह ते तपस्या कई हुआऊं ऐं संदसि चवण ते माण्हुनि ज़मीन मां उहे तपस्या जा साधन याने धूणी, चिंमटो ऐं गुफा खोटे नज़र मां कढिया। उन खां सवाइ जिनि कुटम्बनि बाबति गाल्हियूं कयूं हुआऊं, जे पाण बुधायाऊं, जिनि जी माण्हुनि पुछा करे हकीकत हासुलु कई त बराबर सच्चियूं गाल्हियूं निकितयूं। हिक दफे पाण अज़ीज़ जे शादीअ ते ड़ीपले खां ४० कोह परे डूंगिरी गोठ नन्गरपारकर जे वेझो विया ऐं कचहरी कन्दे अचानक संदसि वात मां हृदय ते असरु कन्दड़ आवाज़ निकिरण लगा ऐं शोक छांइजी वियो। राम राम उच्चारण लगा, माण्हुनि कारण पुछियो। तदहिं जवाबु डिनाऊं त भाइड़ा, पंहिंजे खीरोली गोठ में बाहि लगी आहे ऐं घरु जली रहियो आहे। थोरो वक्तु ध्यान करे चयाऊं त हाणे बाहि विसामी वेई ऐं घर में रखियल पुस्तक ऐं ज़रूरी शयूं माण्हू सलामतीअ सां बाहिरि कढी सघिया आहिनि। जदहिं माण्हू उते खीरोलीअ में आया त बराबर हकीकत सच्ची निकिती। भगत मंघाराम हिन जे संग में रही खेसि पूरो सतुगुरू मञी सम्बत् १६१८ खां गडु हलन्दो आयो ऐं हर रोज़ रात जो ८ बजे सत्संग लाइ ड़ीपले मां खीरोलीअ वञी सत्संग ऐं भजन भाउ करे रात जो ३ बजे मोटी ईन्दो हो। अहिड़ी हुयनि गुरूअ में श्रद्धा। ही गुरू पंडित तेजमाल जी सम्बत् १६४३ में परलोक पधारिया ऐं संदसि औलाद अञा खीरोलीअ में रहन्दो आहे।

तइलीमः– भगुत साहिब विद्या विलासी न हो। छो त संदसि वक्त में गोठनि में स्कूल या पाठशाला कान हुई। फक़ति रङावत जे धन्धे में मोथा (वड़ा अखर) सिखियो हो, जे लिखी कमु हलाईन्दो हो। मगर सत्गुरूअ जे वातां सद् बोध, ज्ञान वार्ता, निर्गुन, सर्गुन ईश्वर सरूप जी चर्चा वार्ता खेनि सभु बर-जुबान याद हुई ऐं बुधाइण में बि रस हून्दो होनिं।

सुभाउः– दुख सुख में हिक जहिड़ी वृति रहन्दी हुई ऐं शारीरिक पीड़ा ते दुखु न थीन्दो होसि। संसार ऐं वंहिंवार में का बि सिद्धी या सफलता मिलन्दी हुई, तदुहिं बि हर्ष न थीन्दो होनि। भगुत में हिकु ख़ास गुणु इहो हो जो कंहिं बि कम करण खां खेनि आर कोन हून्दो हो। पाण पंहिंजे सिर कम ते वेही रहन्दा हुआ ऐं कम में तलीन थी वेन्दा हुआ। लोक शेवा में घणो चाहु वठन्दा हुआ। हृदय दीनता ऐं नम्रता सां भरियल हो। लिबास सादो पहिरीन्दो हो। रहिणी कहिणी बिलकुल सादी रखन्दा हुआ। एतिरे कदुर जो को नालो बुधी अणजाणु ईन्दो हो त सुञाणी कोन सघन्दो हो त हेदो जंहिंजो नालो आहे, सो ही भगुत मंघाराम आहे। गऊ शेवा ऐं पखियुनि खे अन्नु पाणी दियण जहिड़ा कम हथ सां कन्दा हुआ। संदनि आवाज़ु मधुर ऐं शान्त हून्दो हो, इनकरे सत्संग ऐं कीर्तन ते माण्हू मोहित थी पवन्दा हुआ।

संदनि शेवा ऐं सत्संगः– दीपले खे कच्छु वेझो हुअण सबबु साधुनि ऐं सन्तनि जो अचणु वञणु घणो हून्दो हो। उन्हनि सन्तनि जे समागम करण सां सच्चे सुख जी ज्ञान भगितीअ जी चर्चा जो लाभ घणे कदुर हासुलु थीन्दो हो। उन्हनि साधुनि सन्तनि ऐं अभ्यागत ब्राह्मणनि ऐं अतिथि मुसाफिरनि खे भोजन कराइण ऐं जल पीआरण वग़ेरह जी शेवा कन्दा हुआ। उन खां सवाइ कंहिंखे बासण बर्तण थाल्ही लोटो या कपड़ो लटो, चादर खेस वग़ेरह जी ज़रूरत हून्दी हुई त यथा शक्तीअ मदद कन्दा हुआ। अलबति इएं बि चवणो पवन्दो हो त उन्हनि जी घरू हालति अहिड़े धनपतीअ जहिड़ी न हुई। तंहिं हून्दे बि पुजन्दीअ सारू जेकी थी सघन्दो हो, सा शेवा कन्दा हुआ। मगर अभ्यागत दुखी मुसाफिरनि जो दुखु मिटाइण लाइ कोशशि वठन्दा हुआ। साधू शेवा त संदनि अटल नेम थी वियो हो। अहिड़ीअ तरह दींहों दींहुं भगुत जा वधीक गुण ज़ाहिरु थीन्दा विया ऐं उन्हनि माण्हुनि ते सुठो असरु कयो। सत्संग ते वटिस घणा माण्हू अचण लगा ऐं संदनि सत् कीर्ति फहिलजण लगी ऐं आयलनि खे आशीर्वाद दीन्दा हुआ। तीर्थ स्थाननि ते वेन्दा हुआ त उते भगुत मंघाराम जी जय बोलीन्दा हुआ। इएं सालनि जा साल संदसि गुरूअ जे घरि खीरोलीअ में सत्संग करण ऐं बुधण वेन्दा हुआ। पर पोइ पंहिंजे घर में रोज़ ८ खां १२ रात ताईं भजन भाउ थीन्दो हो ऐं सत्संग जो प्रसंग हलन्दो ई रहन्दो हो।

शादी, गृहस्त धर्म पालण ऐं औलादः– भगुत साहिब पहिरीं शादी सम्बत् १६२२ में कई, जंहिं मां खेसि हिक कन्या उत्पन्न थी। मगर सम्बत् १६२७ में पत्नी ऐं पुत्री, बिन्हीं जो विछोड़ो थियो। भगुत वरी बी शादी सम्बत् १६३० में कई, जंहिं मां हेठियों सन्तान थियुसिः–

(१) सम्बत् १६३४ में सतरामदास जाओ। (२) सम्बत् १६३८ में फरसराम जाओ। (३) सम्बत् १६४१ में मीरां बाई जाई। (४) सम्बत् १६४२ में खेमचन्द जाओ। सम्बत् १६१८ खां महाराज तेज़माल जी जो सत्संग हलन्दो ई रहियो ऐं बियनि सन्तनि जो समागम थीन्दो हो। सम्बत् १६३१ खां भगुत साहिब ऐं संदनि धर्मपत्नि, बिन्हीं महाराज तेजमाल जी खे सच्चा सतगुरू धारण कया ऐं पूर्ण आस्था रखी संदनि शिष्य तरीके वर्तण कयाऊं।

गृहस्त आश्रम जा नेम पालणः– भग॒त गृहस्त आश्रम में रही शास्त्रनि मूजिब नेम पालण कया, जीअ त सचु ग॒ाल्हाइणु, प्राणी मात्र ते दया करणु, यथा शक्ति व्रत नेम पालण ऐं पवित्रता ऐं सहनशीलता धारण, योग्य अयोग्य विवेकु रखणु, मन जो निग्रह करणु, इन्द्रयुनि ते ज़ाब्तो रखणु, मंशा वाचा कर्मणा सां कंहिंखे दुखु न पहुचाइणु, अहिंसा वृति रखणु, एक पत्नि व्रत ब्रह्मचर्य पालणु, यथा शक्तीअ दान करणु, गुरूअ जो मंत्र उच्चारणु, योग्यता मूजिब शेवा पूज॒ा नेम सां करणु, महिमान-नवाज़ी करणु, निष्फल वृतियुनि जो त्याग॒ु करणु, हर मनुष्य खे ईश्वर भाव रखी देवता रूप समुझी वृतणु । भग॒ती ऐं योग अभ्यास कन्दा हुआ । को बि भग॒त खे रोटी मोकलाइण ईन्दो हो त पाण सां गद॒ु साधुनि सन्तनि ऐं मंडलीअ खे बि साणु वठी वेन्दो हो ।

ईश्वर जी परीक्षा – भग॒त जो पुट जो त्याग॒ः– हिकु साधू भग॒त वटि आयो ऐं हिकु पुटु द॒ियण जी घुर कई । पति ऐं पत्नीअ नन्ढे पुट खेमचन्द खे सनानु कराए, नवां कपड़ा पाराए, साधूअ खे द॒िनो । इहा हिक कसोटी हुई । खेमचन्द साधूअ पुठियां पिए वियो, मगर साधू अलूप थी वियो ऐं ही मोटी घरि आयो । लोकवाणी इहाई हुई त भग॒वान पाण वटि परीक्षा वठण आयो हो । भग॒त साहिब खे पूर्ण विश्वास जाग॒ियो ।

भग॒वान जो भग॒त पारां कर्ज़ु चुकाइणुः– हिक दफे द॒ीपले में सन्यासियुनि जी जमाइत आई । भग॒त जी इच्छा थी त जमाइत खे रोटी खारायां, पर पैसा कोन हुअसि । सो हिक मेमण खां ५० रुपया उधारा वठी जमाइत खे प्रेम सां रोटी खाराई । कुछु द॒ींहनि खां पोइ मेमणु पैसा घुरण आयो, पर भग॒त वटि उन वक्त कोन हुआ । कुछु द॒ींहनि बैदि मेमणु वरी बिं पैसा घुरण आयो । पर भग॒त वटि वरी बि पैसा न थिया । सो मेमणु कसमु विझी वियो त जेस्ताईं मुंहिंजा पैसा न मोटाईं, तेसीं अन्नु न वरिताइजु । भग॒त उन द॒ींहं खां वठी भोज॒न खाइणु बन्दि कयो ऐं पैसनि लाइ तजवीज़ में रहियो । रात जो भग॒वान पाण भग॒त जे रूप में उन मेमण वापारीअ वटि व॒ञी हिसाब तपासे कर्ज़ जी अदाई कई, सही बि कई । ब॒िए द॒ींहुं भग॒त पैसनि जो बंदोबस्त करे वापारीअ वटि वियो । चयाईं त भाई, वठु पंहिंजा पैसा, मूंखे अन्नु खाइण जी इजाज़त द॒े । वापारीअ खिली जवाबु द॒िनो त गुज़रियल रात तूं मूंखे पैसा द॒ेई चौपड़ीअ ते सही बि करे विएं ऐं वरी ब॒ियो दफो ही पैसा आणणु, इनजो मतिलब छा आहे? मेमण चौपड़ो खोले भग॒त खे संदसि सही द॒ेखारी । भग॒त द॒िठो त सही वराबर संदसि अखरनि जहिड़ी थियल हुई, तद॒हिं मन में विश्वास जाग॒ियो त इहो कमु परमात्मा जो कयलु आहे ऐं समुझी वरिताऊं त नरसिंहं भग॒त जी हुण्डी स्वीकारीन्दड़ भग॒वान ई सन्तनि जे भोज॒न लाइ मुंहिंजे ख़र्च कयल रकम जी भरपाई कई आहे । पोइ सज॒ी हकीकत व॒ञी पत्नीअ सां कयाईं त भग॒वान रूबरू अची मुंहिंजी हुण्डी भरे वियो ।

भीड़ भग॒तनि जी मिटाइण लए अचे परमात्मा – रूप सन्तनि जो बनाए कमु करे परमात्मा ।

पुट जे शादीअ जे ख़र्च जो पूराओः– भग॒त जे वद॒े पुट सतरामदास जे विंहाअ जो मुहूर्त सम्बत् १९५२ में निकितो, पर भग॒त वटि पैसा कोन हुआ । माण्हू गिला करण लग॒ा त भग॒वान जी भग॒िती करे कहिड़ी सोभ्या वरती अथसि । भग॒त साहिब सस्ताईअ जे ज़माने में १७०० रुपया ख़र्चु करे पुटु परणाए आयो, पर पैसा किथां आया, इहो पतो कंहिंखे कोन पियो । पोइ त माण्हू भग॒त जो जसु ग॒ाइण लग॒ा ।

भग॒त जो पुट खे परमात्मा वटां घुराइणुः– सम्बत् १९६१ जे पोह महिने में भग॒त जो वद॒ो पुटु सतरामदास सख़्तु बीमारु थियो ऐं सज॒ो द॒ींहुं बेहोश रहियो । सभिनी जी सतरामदास जे जीअण जी आशा टुटी

वेई। संदसि पत्नीअ जे वात मां अण-सुहाईन्दड़ अखर निकिता त अहिड़ी भगिती कहिड़े कम जी? आंऊं पुट जो मौत सही कोन सघंदसि। भगत साहिब पुट जे अगियां वेही भजन कयो ऐं ईश्वर खे बादायो ऐं पुकारियो। सुबूहु थियो त सतरामदास उथी वेही रहियो, जणु निन्ड मां उथियो आहे। गाल्हि कयाईं त मूंखे रेल गादीअ में चाढ़े नईं विलाइत वठी पिए विया, रुगो अन्धकार हो। फकति भगत मंघाराम जो रूप दिसण में पिए आयो। जदुहिं गादी बीठी त भगत खां पुछियुम त गादी छो बीठी? भगत चयो त गादी अगिते कान वेन्दी ऐं मां तोखे घर वठी हलन्दुसि।

शिष्य या चेलाः– भगत साहिब संसार वहिंवार ऐं परमार्थ में सावधान हुआ। भगत बाकाइदे कंहिंखे चेलो कोन कयों। मगर जगियासू ईन्दा हुआ, तिनि खे बोध दीन्दा हुआ। अहिड़ा बोध प्राप्त कयल केतिरा ई ब्रह्म खत्री, सोनारा ऐं बियनि ज़ातियुनि जा हुआ, जे भगत खे सत्गुरू करे सेवीन्दा हुआ। गोठ मिठीअ में हिक बाई आंपो धीअ मूलदान, ज़ाति चारण, बाल विधवा ते संदसि विशेष कृपा थी ऐं खेसि योग्य उपदेश दिनो, जंहिं ईश्वर जे भाणे ते राज़ी रही उनजी शरन वरती। बाहिरां वहिंवार में भगत साहिब जी पुत्री ऐं घर में माइटाणे नमूने वर्ताउ हो। हुनखे मीरां जहिड़ी साध्वी बनाए छदियाऊं।

परलोक पधारिजणुः– सम्बत् १९६८ जे जेठ में भगत बीमारु थियो ऐं बीमारी ७ महिना हली। हिनजो नेम सां सत्संग चालू हो। पोइ पोह सुद्धी चोथि आरतवार दींहुं प्रभात जो ५ बजे राम नाम जपीन्दे देह त्यागियाऊं।

समाधी ऐं मेलोः– मृत्यूअ खां हिकु महिनो अगु P.W.D. जो हिकु S.D.O. मिस्टर मौजीराम शर्मा वेठलु आगरो दर्शन करण आयो, सो फोटू कढी वियो। सुर्गवास थियण बैदि अग्नि संस्कार जे भूमींअ ते हिक देहड़ी बधाई वेई, उन में उन ऑफीसर खां फोटू वठी रखियो वियो। संदसि पीढ़ीअ मां पोंयर कोन्हें। भाउरनि जे औलाद मां अञा उते रहन्दा आहिनि ऐं मेलो लगाईन्दा आहिनि।

(१०) सन्त भगत टऊंरमल जेठोमल छूंछा

जनमुः– जेठोमल नुख छूंछा खे जमालियुनि जे गोठ तैलके टन्डे बागे ज़िले हैदराबाद सिन्धु में हिकु पुटु जाओ, जंहिंजो नालो टऊंरमल रखियो वियो। जनम जी पूरी तारीख़ जो पतो पइजी कोन सघियो आहे, पर सन् अटिकल १८७९ ई० हो। ही कुझु वदो थियो त हिनजो लाड़ो भगितीअ दांहुं थियो ऐं पंहिंजे अबाणे धन्धे में चित्तु न लगो। हिनजो कदु नन्ढो, बदन जो हल्को ऐं कणिक रंगो हो।

गुरू करणुः– हिनजो भगवान जी भगिती करण जो अन्दर में उत्साहु उत्पन्न थियो, सो गोठ में ई हिकु ब्रह्म खत्री सन्त भगत रतनराम रहन्दो हो, सो उन वटि वियो ऐं चयाईं त मूंखे पंहिंजो शिष्य बणाइ ऐं मूंखे उपदेश दे। (हिन लाइ सन्त रतन भगत दिसो बाब १ जे नम्बर ४ ते)। सन्त रतन भगत, टऊंरमल खे पंहिंजो चेलो कयो ऐं उपदेश दिनाईं। हेठि लंगोटु बधन्दो हो, मथां गोदि बधन्दो हो ऐं बदन उघाड़ो रखन्दो हो। कुल्हे में थेल्ही ऐं हथ में माता जो चिमटो खणन्दो हो। भगितीअ जे करे संदसि मुंह मां मणियां पेई बखन्दी हुई।

गुरूअ जी गादीः– जदहिं संदनि गुरू सन्त् भगत रतनराम जोती जोति समाया त उनखे तल्हार में गोभीअ जे कप ते समाधी दिनी वेई ऐं उनजे गादीअ ते भगत टऊंरमल खे विहारियो वियो। समाधीअ वटि ई कुटिया ठहियल हुई उते रहन्दो हो ऐं पंहिंजे वृत्ति एकान्त में ईश्वर जे चिन्तन में गुज़ारीन्दो हो।

करामतः– हिक दफे सन् १६१७ ई० जी ग़ाल्हि आहे त शहिर टन्डे गुलामु अली ज़िले हदराबाद सिन्धु जा ३ खत्री (१) आलूमल वीरूमल (२) खजूमल केओमल (३) भेरोमल कर्मचन्द, टेई नुख कीरी ग़ोठ देहीअ मां घोड़नि ते टन्डे गुलाम अलीअ दे थे विया त भगुत टऊंरमल गदि्युनि ऐं चयाईं त मां वि तव्हां जे ग़ोठ थो हलां । तंहिंते हिननि चयुसि त भगुत पंज मिन्ट तरसु त घोड़नि खे संजू त तव्हां खे बि घोड़नि ते चाढ़े हलूं । वरन्दी दिनाईं त हाओ पर मां थोरो अगिते थो हलां तव्हीं घोड़नि खे हकिले अची मूंखे रसिजो । ही बि पंज मिन्टनि में घोड़नि खे संजे गाशो विझी रवाना थिया ख़ूब घोड़नि खे हकिलायाऊं पर सन्त न गदि्युनि न दिसण में आयनि । वाटहिड़ू जेके आया पिए, तिनि खां पुछियाऊं । तिनि चयुनि त सन्त वञे पियो सद पंध ते हून्दो । हिननि बि घोड़नि खे ख़ूब डोड़ायो पर सन्त कोन गदि्युनि वरी ईन्दड़नि खां पुछियाऊं तिनि बुधायुनि त सन्त वञे पियो ऐं सद पंध ते हून्दो घोड़नि खे ख़ूब भजायाऊं ऐं अची ग़ोठ पहुता । दिसनि त सन्त अगेई संदनि ओताक में वेठो आहे । जेके सन्त रिद्धीअ सिद्धीअ जा मालिक आहिनि से करामतूं ऐं करिश्मा देखारीन्दा कोन आहिनि । पर को अहिड़ो वक्तु ईन्दो आहे जो खुदि बि खुदि करामत जहिड़ो हुकुमु थी वेन्दो आहे । अहिड़ीअ तरह माण्हुनि खे छोटियूं मोटियूं अहिड़यूं घणेई ग़ाल्हियूं दिसण में आयूं ।

गुरूअ जो मेलोः– सन्त रतन भगुत याने टऊंरमल भगुत जे गुरूअ जो मेलो हर साल लगुन्दो हो । भगुत टऊंरमल पंइचनि मां फोड़ी करे हणाईन्दो हो, दस्तूर मूजिब मेले नज़दीक अचण सबबु भगुत टऊंरमल तलहार जे मुखीअ श्री थूमीमल़ वटि विया ऐं चयाऊंसि त मेले लाइ ग़ोठ मां फोड़ी कराए दियो । मुखी अलाजे कहिड़े ख़्याल में वेठो हो, तंहिं भगुत खे अण सुहाईन्दड़ अखर ग़ाल्हाया । भगुत वराणियो त "अबा, नतीजो मिलन्दुइ ।" इएं चई भगुत उतां उथी वियो हलियो । उन बैदि मेले में हिकु वेलो पइंचात दीन्दी, हिकु वेलो खत्री नियात दीन्दी आहे । बाकी बिया वेला जिनि जूं सुखाऊं पूरियूं थीन्दियूं आहिनि, से दीन्दा हुआ ।

सन्त जो गुमु थियणुः– भगुत टऊंरमल उन दींहं १६१८ ई० में हलियो वियो । ख़बर कान पेई त केदांहुं वियो । अजु दींहं ताईं बि संदसि पतो कोन पियो त केदांहुं गुमु थी वियो ।

सन्त जी तीर्थ यात्राः– सन्त तीर्थनि ते बि वेन्दो हो । जहिड़ोकि हरिद्वार, बद्रीनाथ, काशी, प्रयाग, पुष्कर वग़ेरह । सम्बत् १६७१ धारे पुष्कर तीर्थ ते वियो हो जो सिन्धयुनि जे पन्डे जी बंदीअ में संदसि नालो वग़ेरह लिखियल आहे । मूं पाण संदसि पीउ जो नालो नुख वग़ेरह उन बंदीअ तां मइलूमु कई आहे ।

मुखीअ खे नतीजो मिलणुः– उन बैदि मुखीअ जी मिल्कियत नासु थियण लगी । कुझु बाहि में सड़ी वेई, कुझ चोर चोरी करे विया, कुझ घाटनि में वेई । मुखीअ पोइ घणोई पछुतायो त मूं सन्त खे अहिड़ो छो ग़ाल्हायो । सन्त त गुमु थी वियो, हाणे माफी वठे ऐं बख़्शाए त कंहिं खां बख़्शाए ।

लीलाशाह खे गादीअ ते विहारणुः– सन् १६२२ में भगुत टऊंरमल जे हली वञण ते स्वामी लीलाशाह महराज खे गादीअ ते विहारियो वियो । साईं जनि सन्त रतन भगुत जो दिनलु हो ऐं उहोई हकदारु समुझियो वियो । किनि वर्हियनि पुजाणां स्वामी लीलाशाह महाराज बि गादी त्यागे बियनि खे देई पाण हिमालय पहाड़ ते हलिया विया ।

(११) सन्त स्वामी लीलाशाह महाराज वल्द टोपणदास टाटारिया

"माण्हू मिड़ेई न सुहिणा, पखी मिड़ेई न हंज,

कंहिं कंहिं माण्हूअ मंझि, अचे बूंइ बहार जी ।"

अहिड़े सदाबहार ऐं बहारीअ बूंइ वारनि गुलाबी गुलनि मां स्वामी जनि हिक ज़िन्दह मिसालु आहिनि । सच्चा सन्त पूरब जनम जा संस्कार खणी अवतारु धारे हिन संसार में लोकनि जे कल्याण कारण अचनि था ऐं पंहिंजे दया मया सां परउपकार करे प्राणियुनि जो भलो कनि था । अहिड़नि सन्तनि मां आहे स्वामी लीलाशाह महाराज । अहिड़नि महात्माउनि खे गुरू बि सदियो वियो आहे । गुरूअ जी माना आहे ऊंदहि में रोशनी कन्दड़ु । मगर उहे सच्चा सन्त जिनि पाणु जातो आहे, जिनि सच खे परखियो आहे ऐं जेके ब्रह्म श्रोत्री, ब्रह्म नेष्ठी ऐं ब्रह्म ज्ञानी आहिनि, जिनि में गीता जे सोरहें अध्याअ जे पहिरियनि टिनि स्लोकनि में वर्णन कयल दैवी सम्पदी गुण आहिनि, अहिड़ा सन्त ऐं सत् पुरुष संसार में रहन्दे बि कंवल गुल जियां निर्लेप आहिनि । अहिड़नि महापुरुषनि मां हिकु हुआ सत् श्री १००८ स्वामी लीलाशाह महाराज, जिनि जो जगुत में अचणु लोक कल्याण लाइ थियो । जिनि केतिरनि ई लोकनि जो कल्याण कयो ऐं जेके बि सच्ची श्रद्धा सां संदनि वेझो विया, तिनि जे ततल दिलयुनि ते ठारु पियो, संदनि मन जा मूंझारा दूरि थिया, दुख दर्द हटिया ऐं संदनि अन्दर में उजालो थियो ऐं हुननि जीवन जे मक्सद खे समुझी आनन्द पातो ।

लीलाशाह आया अवतार धारे – कयो ख़ूब कल्याण लोकनि संवारे ।

जनमुः– सिन्धु जे दुखण वारे पासे लाड़ डिवीज़न में हिक नन्ढड़े गोठ नाले महराब चांडियो तैलिको टन्डो बागो ज़िलो हैदराबाद सिन्धु में आहे । उते हिक ब्रह्म खत्री श्री टोपणदास वल्द गंगाराम नुख टाटारिया रहन्दो हो, उनखे फ़कति ब नियाणियूं हुयूं ऐं पुटु कोन हो ऐं संदसि सौट परियोमल वल्द मनजीमल तंहिंखे बि फ़कति ब नियाणियूं हुयूं ऐं पुटु कोन हो । तंहिंकरे श्री टोपणदास तलहार तैलिको टन्डे बागे में सन्त रतन भगत जी दरबार में वियो । सन्त रतन भगत ब्रह्म खत्री हो । श्री टोपणदास सन्त खे नमस्कार करे पेरे पई वादाए निमाणी वेनती कई त असां बिन्हीं सौटनि खे पुटु कोन आहे । साईं तव्हीं सर्व शक्तीवान आहियो ऐं दया जा सागर आहियो । तंहिंकरे असांजे पोयां दरु पटण लाइ ऐं वंशु वधाइण लाइ को हिकु पुटिड़ो दियो जो कुटम्ब जी जोति जलाए माइटनि जो नालो रोशन करे । रतन भगत पूर्ण सन्त, सच्चो दरवेश ऐं पहुतलु शख़्सु हो । सन्त अर्जु अघाए टोपणदास खे आसीस कई ऐं चयो "भाई टोपणदास तोखे बारहें महिने हिकु पुटु जमन्दो जो न रुगो कुटम्ब जो नालो रोशन कन्दो मगर सारे ब्रह्म खत्री समाज जो मुंहुं मथे करे चम्काईन्दो ऐं बियनि लोकनि जो बि कल्याण कन्दो पर जदहिं वदो थिए ऐं समुझ लाइकु थिए त हिन दरबार में देई वञिजो । बहार जी मौसम हुई । फगुण फलारियो हो । वणनि जा पन सड़ी किरी, नवां पैदा थिया हुआ ऐं गुलनि फुलनि में ज़ोरदार खुशबूइ ऐं सुरिहाणि अची चुकी हुई । अम्बनि जे वणनि में बूरु उभिरी चुको हो, न रुगो मौसम में गर्मी हुई, न सर्दी हुई त अहिड़े सुहावणे वक्ति बारहनि महिननि खां पोइ बराबर तारीख़ २३ फगुणु सम्वत्

विक्रमी १६३७ माता हेमीबाईअ जे गर्भ मां टोपणदास जे घर में हिक पुट जनमु वरितो। माइट डाढो खुशि प्रसन्न थिया ऐं वाधायूं वरी वेयूं। ओड़े पाड़े वारनि बुधो, से बि खुशि थी वाधायूं दियण आया।

जननी जने तो हर जनि जने या दाता या सूर,
तीनो जे नाहीं जने ओर जने सभु कूड़।

सो ई माता अहिड़े भगत, सन्त, दानी ऐं सूरवीर खे जनमु दिनो। संदनि छठीअ जो नालो लीलाराम रखियो वियो। लीलाराम अजु नन्ढो सुभाणे वदो, जदहिं पंजनि वर्हिनि जो थियो, संदसि पिता टोपणदास सन्त रतन भगत वटि वठी वियो ऐं चयाईं त साईं हीउ छोकिरो अव्हांजी दिनल अमानत आज्ञा अनुसार दरबार में वठी आयो आहियां। सन्त चयो अबा चङो। टोपणदास सन्त खे अर्ज़ु कयो त साईं, मोख्या वठो ऐं पुटिड़ो मोटाए दियो। सन्त खिली लीलाराम जे मथे ते आसीस जो हथु फेराए चयो त अबा मोख्या कान वठिबी, बाकी पुटिड़े खे भलि वठी वञु, असांजो हून्दो त पाणेही ईन्दो। टोपणदास लीलाराम खे घर वठी आयो ऐं छोकर खे वापसि दिसी घर वारा सभु खुशि थिया। संदनि माता त तमामु घणो खुशि थी पर कुछ महिननि खां पोइ सुर्गवास थी। जदहिं अटिकल दहनि वर्हिनि जो लीलाराम थियो त संदसि पिता टोपणदास बि परलोक पधारियो। उनजे विच में लीलाराम जो काको परियोमल बि सुर्गवास थी चुको हो। बाकी घर में चाची याने परियेमल जी घर वारी ऐं लीलराम रहिया। हीअ चाची बि हुई ऐं दादी बि हुई जो हिन टोपणदास खे पुटु करे परिणायो हो। मतलबु त चाची, दादी ऐं माता परियेमल जी घर वारी थी, जंहिंजो नालो समुझ बाई हो। टोपणदास गोठ जो मुखी हो, तंहिंकरे संदसि सुर्गवास थियण ते मुखपाईअ जी पग लीलाराम खे बधाई वेई। लीलाराम संदसि चाचीअ जे हथ हेठि वदो थियो ऐं हिनजी सार सम्भाल लधी।

वैरागः— लीलाराम जदहिं अटिकलें १२ वर्हिनि जो थियो त संदसि चाचीअ लीलाराम जे पुफाट श्री लखूमल वटि दुकान ते छदियो त उते अखर सिखी, दुकान जो कमु सिखे ऐं कुझ कमाई बि करे। महराब चांडिए जो गोठु नन्ढो हो, तंहिंकरे दुकानदार सभु वखर टन्डे बागे मां आणीन्दा हुआ। लीलाराम थोरनि महिननि में दुकान जो कमु सिखी वियो ऐं वाणिका (हिन्दू सिन्धी) अखर बि सिखी वियो। सागीअ तरह लखूमल लीलाराम खे वखरनि जो चिठो ठाहे दीन्दो हो त बियनि दुकानदारनि सां गदिजी वञु जितां हू वखर वठनि। उतां तूं बि चिठे मूजिब वठी अचु। महराब चांडियो ऐं टन्डो बागो वेझा ई हुआ। के घोड़नि ते वेन्दा हुआ, के गदहनि ते वेन्दा हुआ। लीलाराम वखर वठण टन्डे बागे गदह ते वेन्दो हो। इएं कन्दो रहियो। उन वक्ति बरसात न पवण सबबु थर में अची दुकारु पियो सो वेचारा ग़रीब कोल्ही, भील ऐं मेंघिवाड़ वग़ेरह थर मां लदे लाड़ में आया। जदहिं दुकानदार वखर वठी के घोड़नि ते, के गदहनि ते मोटन्दा हुआ त उन्हनि ग़रीबनि जा बार हिननि खे फिरी ईन्दा हुआ त असांखे कुझ खाधे लाइ देई वञो। पर कंहिं बि उन्हनि ते कियासु कोन कयो। लेकिन लीलाराम उन्हनि बारनि खे थोरी घणी का न का शइ दीन्दो हो। जहिड़ोकि खाजा, भुगिड़ा, रेवड़ियूं, बिस्कूट ऐं कत्तल वग़ेरह। चङो ख़ासो ख़रज़ियुनि खे हल्को करे ईन्दो हो, छाकाणि त उन्हनि अंग उघाड़नि ऐं पेट बुख्यिनि बारनि जे लीलड़ाटियुनि खे सुणी लीलाराम खे कहिल अची वेन्दी हुई। लखूमल बि ख़रीद कयल वखरनि जी चिट्ठ मूजिब तोर ऐं गुणप करे हिसाब मिलाईन्दो हो, जो हुनखे पूरो ई मिलन्दो हो। लीलाराम इहा कारि केतिरो ई वक्तु जारी रखी। गोठ जा बिया वाणिया, जे बि टन्डे बागे वखर वठण वेन्दा हुआ, से हीअ रोबकार दिसन्दा हुआ ऐं चिल्म जे कचहरीअ ते जे वाणिया ईन्दा हुआ, से लखूमल खे चवन्दा

हुआ त "ही तुंहिंजो मारोटु लीलाराम हहिड़ीअ तरह रोज़ु वाट ते वखर विराहीन्दो अचे । पर लखूमल लीलारम खे त कुझु बि न चयो ऐं नकी पुछियो । छाकाणि त लखूमल रोज़ चिट्टे सां मिलानु कन्दो हो ऐं हुनखे वखर पूरा ई मिलन्दा हुआ । हिक ड्रींहुं चिल्म जे कचहरीअ में वरी बि अची हीअ ग़ाल्हि निकिती । लखूमल खे चयाऊं त "भाई लखूमल ! ही तुंहिंजो मारोट लीलारम तोखे खुटाईन्दो ।" तंहिंते लखूमल वरन्दी ड्रिनी त "भाई, मां सभु वखर तोरीन्दो आहियां ऐं चिट्टे मूजिब पूरा हून्दा आहिनि । पोइ मारोट खे छो कुझु चवां, जद्रहिं को वखर खुटे ई कोन ।" लखूमल चयो त मूं ब्रियूं बि के आज़माइशूं कयूं आहिनि, पर वखर खुटे त कोन थो पाण वधे थो । जद्रहिं लीलराम इहा ग़ाल्हि ब्रुधी, जो पाण उते वेठो हो त संदसि अन्दर जूं अखियूं खुली पेयूं । दिल में प्रनु कयाई त "जंहिं शक्तीअ मुंहिंजी पइज रखी आहे, उनखे लोचे लहन्दुसि ऐं हाल महिरम हासुलु कन्दुसि ।" खेनि अची वैराग़ु लग़ो । ब्रिए ड्रींहुं सुबूह जो पुफाट लखूमल खे चयाईं त "हाणे मुंहिंजी राम राम, मां वञा थो उनजे तलाश में, जंहिं मुंहिंजी लज़ रखी पूरी पिए कई आहे ।" इएं चई दुकान तां लथो ।

सन्तनि जी गादीः– सन्त रतन भगु़त जे गादीअ ते सन्त, संदसि चेलो भगु़त टऊंरमल वेठो, जो ओचितो गुमु थी वियो । तंहिंकरे लीलाराम खे गादीअ ते विहारियाऊं, जो सन्त रतन भगु़त जो ई ड्रिनलु हो । पर हुनखे जो वैराग़ु लग़ो पियो हो, सो गादी छदे़ पक्को सन्यासी थियणु चाहियो ।

चाचीअ सां प्रतिज्ञाः– लीलाराम चाचीअ वटि अची पेरें पई मोकिलाइण लग़ो त आंऊं वञी थो सन्यासी थियां । चाचीअ चयुसि त दरू पूरिजी वेन्दो । तोखे शादी कराईन्दसि, कुल जो नालो काइमु रखन्दसि ऐं रोई पेई । तंहिंते वरन्दी ड्रिनाईं त तूं हिकु दरू थी पटणु चाहीं, जे किस्मत साथु ड्रिनो त घणनि जा दर पटे छद्रीन्दुसि । चाचियसि ड्रिठो त ही पंहिंजे इरादे ते पक्को आहे त ब्र वचन वरताईंसि । हिकु त हर साल मूं वटि अची मुंहुं द्रेखारिजि, ब्रियो मां मरां त कुल्हो ड्रिजु । जे हिन प्रतिज्ञा करे चयो त वचननि जी पालना कन्दुसि । पोइ मोकिलाए संदसि भेणवीए आसनदास वल्द पहिलाजराम खूहा वटि टन्डे जान महमद तैलिको ढिघड़ी ज़िलो थरपारकर वटि आयो ऐं उते रहियो ।

विद्या, ब्रह्मचारी, प्रतिज्ञा ऐं सन्यासः– भाई आसनदास वटि रही ब्राए नाराइणदास वटि, जो पोकरणो ब्राह्मण हो, जो ही बि पहुतलु हो, हिन्दी सिखी वेदान्त जो अभ्यास करण लग़ो । उन शहिर में सन्त हन्स निर्वाण जे आश्रम में हिकु मारवाड़ी सन्त ऐं विद्वान आयलु हो, लीलाराम उनखां बि वेदान्त सिखण लग़ो ऐं उनखां घणोई पिरायाऊं । लीलाराम खे संदसि भेणवीए आसनदास चयो त तोखे मञायां परणायां, पर हिन न मञियो ऐं चयाईं त ब्रह्मचारी ई रहन्दुसि । आसनदास हुनखे हिक सुहिणी छोकिरी बि द्रेखारी त हिन सां तोखे मञायां, पर हिन साफ इनकार कयो ऐं प्रतिज्ञा कई त ब्रह्मचारी थीन्दुसि । इनकरे टन्डो जान महमद छदे़ गुरूअ जे तलाश में टन्डे महमद ख़ान ज़िले हैदराबाद में आयो ।

गुरू करणुः– लीलाराम टन्डे महमद खान में सन्त केशवराम वटि आयो ऐं खेसि वेनती कयाईं त मूंखे चेलो बनाए पाण वटि रहाइ । सन्त केशवराम संदसि वेनती कबूल करे खेसि दीक्षा द्रेई चेलो करे पाण वटि रहायो, तद्रहिं संदसि उम्र अटिकल १३ साल खनु हुई । हिन गुरूअ वटि रही ख़ूब शेवा कई ऐं वेदान्त बि सिखियो ऐं के लीलाऊं बि कयाईं ।

मन मारणु ऐं मस्तीः– लीलाराम जे गुर भाई सन्त केशवराम जो भाइटियो सन्त तुलसीदास घणो वक्तु गडु गुज़ारीन्दा हुआ । तुलसीदास जे माता पिता पुटु करे ऐं भेण भाउ करे समुझन्दियूं हुयूं । उहे ब्रुई लीलाराम

जे गिचीअ में कपड़ो विझी चवन्दियूं हुयूं त **"नचु लीला नचु"** त हीउ मस्तीअ में अची कछूं ठोके चवन्दो हो त **"मां खुदि खुदा आहियां - मां शाहु आहियां ।"** साधना जे वक्त कदुहिं पंहिंजा कन पटीन्दा हुआ, कदुहिं पाणखे थफड़ू पिया हणन्दा हुआ, कदुहिं छातीअ खे धक हणन्दा हुआ । अहिड़ीअ तरह मन खे मोड़ियाऊं । खाधे जी शइ रखी चवन्दा हुआ त "खाउ लीला खाउ ।" पर ब़ांहूं ब़धी वेही रहन्दो हो । अहिड़ीअ तरह इन्द्रयुनि ते ज़ाब्तो रखियाऊं । मस्तीअ में अची ग़ाईन्दा बि हुआ ।

लीलाशाह शतकः– अटिकल १५ - १६ सालनि जे उम्र में मस्तीअ में अची ग़ाईन्दा हुआ । सुर में मेठाजु होनि ऐं कवीअ जी कुदरती दाति हुअनि ऐं हिकु सौ खनु भजन ठाहे उनजो नालो रखियाऊं **"लीलाशाह शतक ।"** उहो किताब स्वामी जनि खां केरु खणी वियो ऐं मोटायाईं कोन ।

वेदान्त अभ्यासः– गुरूअ खां सारिक्तावली, पंचीकरण, भर्तरी वैराग शतक, वीचार सागर, उपनिशद, गीता, श्रीमद् भागवत ऐं बिया वेदान्त जा ग्रन्थ पढ़ी पक्को वेदान्ती थियो ऐं साक्षात्कार जे धुन में मस्त रहण लगा । गुरूअ चयुसि त **"तूं शाहु आहीं ।"**

योग अभ्यासः– गुरूअ जे परलोक पधारिजण बैदि हिमालय पहाड़ ते उत्तर काशीअ हलिया विया ऐं उते वञी योग अभ्यास कयाऊं । योग जा ८४ आसण, प्राणायाम, नीति ऐं धोती वग़ेरह सिखी कामिल योगी थिया ।

तपस्याः– उत्तर कांशी छदे नैनीताल आया ऐं पहाड़नि ते चढ़ी ख़ूब तपस्या कयाऊं । लागीतो ५ साल उते रहिया, जिनि पहिरियां ३ साल ५ - ७ अन्न गदे उन मां छटांग खनु रात जो पुसाए रखन्दा हुआ । सुबूह जो उन्हनि खे ख़ूब चबाड़े कच्चा अन्न ई खाईन्दा हुआ, पोइ उहे अन्न खाइणु बि छदियाऊं । पहाड़ी बूटियूं पटे ईन्दा हुआ, उन्हनि खे धोई चबाड़े खाईन्दा हुआ । जदुहिं वेदान्ती वहकिरे मां, योग जे यक्तार सां, तपस्या जो तुरहो ब़धी पार पिया त वञी मंज़िल मक्सूद ते पहुता । पोइ रिद्धियूं सिद्धियूं स्वामी जनि जे पुठियां फिरण लगियूं ।

विद्वता ऐं शक्तीः– स्वामी जनि स्कूल या कॉलेज में का विद्या कान वरिती । लेकिन आत्मा जे महाविद्यालय में उहा ज्ञान विद्या वरिती, जो बी कंहिं बि ज़ाण जी ज़रूरत ई न रही । त्याग ऐं तपस्या जी मूर्ति ऐं ब़ाल ब्रह्मचारी हुआ । ९३ वर्हिनि जे उम्र में फुड़त ऐं चुस्त हुआ । हलण में तेज़, ३२ ई दुन्द दाढूं सालिमु ऐं अखियुनि जी नज़र तेज़, अहिड़ी हुई शक्ती ।

शख़सियतः– कदु पूरो पुनो, बदन हल्को, सांवरी सूरत, जंहिं में माता जा निशान ब़हिकन्दा दिसण में ईन्दा हुआ । अखियुनि में चिमकन्दड़ जोति, अन्दर में अजीब मणियां ऐं ज़बरदस्त शक्ती हुई । दाढ़ी मुछूं ऐं मथे जा वार लहिराए छदीन्दा हुआ । संवारत पाण पंहिंजे हथ सां कन्दा हुआ । आवाज़ में तेज़ी, गले में मेठाजु, ब़ोली सादी पर वणन्दड़ हुयनि ऐं हलण में तेज़, सभिनी खे भाउ करे चवन्दा हुआ । **"हरि ओ३म तत् सत् "** ऐं **"जय राम जी की"** त हर वक्त चवन्दा हुआ, इहे जुमला संदनि तक्य कलाम हुआ । संदनि वरितणु अहिड़ो हून्दो हो, जो सभुको समुझन्दो हो त साईंअ जो घणो प्रेम मूं सां आहे ।

पोशाक ऐं बिस्तरोः– स्वामी जनि जी पोशाक तमामु सादी हुई । मथे ते कपड़े जो टुकर ब़धलु, बदन ते गिचीअ खां पेरनि ताईं घघो ऐं हेठां हिकु कच्छो पाईन्दा हुआ । इहे टेई कपड़ा सफेद हथ जे खादीअ जा हुआ । हिकु खादीअ जो अंगोछो हथ वग़ेरह उघण लाइ साणु हून्दो होनि ।

"अथनि सिर ते साफो ऐं कफिनी कुल्हनि में, अगर माणु मापियो त मोतियुनि सच्चनि में ।"

पेरनि में पहिरिंयाईं काठ जूं चाखिड़ियूं पोइ कपड़े ,जो स्लीपर पाईन्दा हुआ । बिस्तरो बि सादो- फरासीअ एवज़ि कप्तान (टाट) जो टुकर, पथिराणी बदिरां कप्तान जा ३ - ४ तह या ३ - ४ गूणियूं, मथां अछी खादीअ जी चादर ओढण लाइ, ऊन्हारे में खादीअ जी चादर ऐं सियारे में बु ऊनी खथा । कपड़ा हथ सां धुअन्दा हुआ । पछाड़ीअ वारी उम्र में संदनि चेलो वीरभान सागर हून्दो हो, जो कपड़ा धुअन्दो हो । फरासीअ जे एवज़ि कदुहिं तालपत्रीअ जो टुकर रखन्दा हुआ ।

खाधोः- खाधो बिलकुल सात्विकी ऐं थोरो हून्दो होनि । पर ख़ूब चबाड़े खाईन्दा हुआ । घणो करे हिकु वेलो ई रोटी खाईन्दा हुआ । तपस्या जे वक्त ५ - ७ अन्ननि जो छटांग खनु रात जो पुसाए रखन्दा हुआ ऐं सुबूह जो चबाड़े खाईन्दा हुआ । पोइ कुझु वक्त थोरियूं पहाड़ी बूटियूं धोई खईन्दा हुआ । फुल्को जंड जे पीठल अटे जो शुद्ध गीह वारो खाईन्दा हुआ । जदुहिं हिमालय लही हेठि शहिरनि में ईन्दा हुआ त श्रद्धालु रोटी त्यारु कराईन्दा हुआ । स्वामी जनि कदुहिं बि डॉक्टर खां दवा न वरिती, न खाधी । तबियत नरम थियण ते योग आसन ऐं खाधे जी फेर घेर कन्दा हुआ ।

शाहु नालो कींअं पियोः- हिन बाबति मूं (याने लेखक) स्वामी जनि खां पुछियो । जिनि बुधायो त पहिरियाईं सत्गुरू स्वामी केशवराम साहिब चयो त "तूं हाणे 'आत्म मार्ग' जे मंज़िल में घणो अगिते वधी वियो आहीं, तंहिंकरे तुंहिंजो नालो लीलाराम मां लीलाशाह रखिजे थो ।" तंहिंखां सवाइ मारवाड़ी सन्त विद्वर धीर स्वामी परमानन्द, जंहिं वटि सन्त हंस निर्वाण जे आश्रम में वेदान्त पढ़न्दा हुआ, से सदीन्दा ई "शाह जी" हुआ । चवन्दो आहे त शाहु आहीं, शाहु थीन्दें । टिएं तरफ सन्त आलाराम सागर बि स्वामीअ खे चयो त तूं बि शाहु आहीं । चोथें तरफ टन्डे महमद ख़ान जे गूनीअ जे कप ते हिकु बाग़ हो, स्वामी जनि उते अची रहन्दा हुआ । मुसलमान बाग़ाईअ खे मन में त आंऊं कुझु खारायां, पर मां मुसलमान ऐं हू हिन्दू, खाईन्दो या न ऐं ख़्याल कन्दे कुझु दींहं गुज़िरी विया । हिक दींहुं बाग़ में बाग़ाई मूरियूं पटे उते ई हौज़ में धोई रहियो हो त स्वामी जनि बि उते अची निकिता ऐं बाग़ाईअ खे चयाऊं त तूं रोज़ रोज़ चवीं पियो त साईं जनि खे खारायां, सो हींअर ई खणी खाराइ । बाग़ाई बोदि में भरिजी वियो ऐं चयाईं त साईं मुंहिंजी दिल जी गाल्हि ज़ाणी वियो, सो पेरनि ते किरी चयो त तव्हां शाहु आहियो; पोइ ३ मूरियूं स्वामी जनि खे दिनाईं, जे उते ई हौज़ वटि बाग़ाईअ जे रूबरू वेही खाधाऊं । अहिड़ीअ तरह चइनी तरफ स्वामी जनि खे शाहु सदियो वियो ।

"हदूं टिपे सो ओल्याउ – बेहदि टिपे सो पीर,
हद बेहदि बुई टिपे – उनजो नालो फकीर ।"

सो ई स्वामी जनि हद ऐं बेहद बुई टिपी विया, जे कामिल ऐं पहुतल दरवेश हुआ ।

स्वामी जनि जो दर्जो ऐं आस्तानः- स्वामी जनि कंचन ऐं कामिनीअ खां परे हुआ, पैसो पाण न खणन्दा हुआ, न रखन्दा हुआ । श्रद्धालु पैसा रखन्दा हुआ त बियनि खे चवन्दा हुआ त ख़णी वञी फलाणे उपकार में लगायो । पछाड़ीअ में कुझु पैसा पाण यात्रा जे भाड़े वग़ेरह लाइ रखन्दा हुआ । सो जेको पैसो श्रद्धालु भेटा रखन्दो हो, सो सभु परोपकार में ई लगाईन्दा हुआ । श्रद्धालु फ्रूट या पताशा अची भेटा रखन्दा हुआ, सा उते हाज़िरीननि खे विराहे छदीन्दा हुआ । जे कुझु बचेनि त पोइ जेके ईन्दा हुआ, तिनि खे प्रसाद

दीन्दा हुआ । ही सदाईं शहिर खां ब्राहिरि एकान्त वारे आस्तान या बाग़ीचे वग़ेरह में अची लहन्दा हुआ संदनि आस्ताने ते ज़ाल ज़ात जे अचण जी मनइ हून्दी हुई ऐं कंहिंखे बि अचणु न दीं‌दा हुआ ।

स्वामी जनि महापुरुषनि में हिकु ख़ासु आस्तानो वालारियो । सिन्धी समाज में हिननि जो तमामु ऊचो पदु हो । हू रुगो सन्त न हुआ, पर ब्रह्म नेष्टी, ब्रह्म श्रोत्री, ब्रह्म ज्ञानी, सन्त श्रोमणी, महा योगीराज, पूरन तपस्वी, महा त्यागी, कुदरती इलाजनि जा माहिर, देश भगत हुआ । सागिए वक्त समाज सुधारक, धर्म प्रचारक, गऊ पालक, हरिजन उद्धारक, ग़रीबनि ऐं अबलाउनि जा हमदर्द, पइंचातुनि जा रहिबर, अड़ियनि जा आधार, औखी पवन्दड़नि जी सहायता कन्दड़, मातृ भाषा (सिन्धी) लिपीअ जा प्रेमी ऐं प्रंचारक, सुठो साहित्य छपाईन्दड़ ऐं विरहाईन्दड़ हुआ । सच्चा कर्मवीर हुआ । गीता जी सिख्या रग रग में समायल हुअनि । सिन्धयुनि या हिन्दयुनि में अहिड़ो को न सुझे जो एदी अवस्ता में हिन्दुस्तान तोड़े विलाइत में वञी लोकनि खे आत्म ज्ञान जो अमृत पियारियो ।

मन्दर, मठ या मढ़ी न ठहिराइणुः– स्वामी जनि चाहीन हा त वदा मन्दर या मढ़ियूं ठहिराए सघनि हा ऐं आराम जी ज़िन्दगी बसर करे सघनि हा । पर हिन पंहिंजो अहिड़ो को बि आस्तानो कोन ठहिरायो । हालांकि खेनि किनि मन्दरनि जूं महंतपिणो ऐं मिलकियतूं बि आछियूं वेयूं पर स्वामी जनि कबूलण खां इनकार कयो । स्वामी जनि माया खां परे हुआ, पर माया स्वामी जनि जे पुठियां पेई फिरन्दी हुई । दानी पुरुष स्वामी जनि खे जो पैसो दीन्दा हुआ, सो उपकार में लगाईन्दा हुआ । जहिड़ोक स्कूल खोलाइणु, पाठशालाऊं बर्पा करण, धर्मशालाऊं ठहिराइणु, खूह खोटाराइणु, विधवाउनि ऐं ग़राबनि जे नियाणियुनि जे शादियुनि में ख़र्च करण लाइ पैसा दियणु, इख़्लाक ऐं तन्दुरुस्तीअ जा किताब ऐं धर्मी पुस्तक छपाए विरहाइणु, नारी शालाऊं चालू करणु, गऊ शालाऊं बर्पा करणु, गांयुनि खे चारे वग़ेरह जो बन्दोबस्तु करे दियण वग़ेरह ते पैसो ख़र्चु कन्दा हुआ । पोइ उनजा ट्रस्ट मुकरर करे छदीन्दा हुआ ऐं पाण परे रहन्दा हुआ । स्वामी जनि आदीपुर में ग़रीबनि लाइ हिक अश्वमेध यज्ञ कामेटी सन् १९६३ ई० में पिणि बर्पा कई, जा उन्हनि खे अन्नु कपड़ो वग़ेरह दीन्दी आहे, जो अञा चालू आहे ।

संकल्पः– स्वामी जनि संकल्प कयो हो त सिन्धयुनि पारां १०१ नारी शालाऊं, १०१ गऊ शालाऊं, १०१ धर्मशालाऊं, १०१ कसरत शालाऊं ऐं १०१ खूह खोटाराइणु काइमु थियणु खपनि । हिननि मां केतिरियूं स्वामी जनि बर्पा कयूं ऐं ठहिरायूं ऐं २२ खूह खोटाराया ।

सैलानी साधू ऐं परीराजक आचार्यः– स्वामी जनि वेदान्त जे पूरे अभ्यास बैदि, योग क्रियाउनि जे क्रिया में कामिल थियण बैदि ऐं तपस्या जे परीक्षाउनि मां पार लंघण बैदि सभु आस्तान छदिया ऐं परीराजक आचार्य (याने सदाईं रटनु कन्दड़ साधू) थी रहिया । स्वामी जनि ३५ - ३६ सालनि जे उम्र खां रटनु शुरू कयो । चवन्दा हुआ त **"लीलाशाह जी रली कुल्हे ते, रोटी राजनि ते ।"** स्वामी जनि जे एकान्त में रहण लाइ श्रद्धालुनि कुटियाऊं ठहिराए छदियूं । स्वामी जनि ऊन्हारे में नैनीताल ऐं सियारे में आदीपुर (कच्छ) में चड्डो वक्तु रहन्दा हुआ ।

परदेस गमनः– हिननि पंहिंजे जीवन में न फकति सजे भारत जो भ्रमण कयो, पर ब्रह्मा, सलून (लंका) थुबेट, नेपाल, भूटान, सिक्किम, सींगापुर, मलाया, हांग–कांग, जपान, इन्डोनेशिया, मनीला, बैंकाक जाकरता,

अडव, सोरभाया, मालंग जो केतिराई दफ़ा रटनु कयो । हरहंधि उपदेश रूपी अमृत जी वरखा कन्दा रहिया । तंहिंखां सवाइ योग क्रियाऊं केतिरनि खे सेखारियूं । स्वामी जनि सां गडु संदनि चेलो वीरभान सागर गडु हून्दो हो । जंहिं स्वामी जनि जा उपदेश टेप कया ऐं खणी आयो ।

चाचीअ सां प्रतिज्ञा पूरी करणुः– चाचीअ जो मथिसि दाढो प्यारु हून्दो हो । सो उनजे विछोड़े में रोई रोई निरत विञाए वेठी । स्वामी जनि हर साल चाचीअ वटि हाजुरु थीन्दा हुआ । जदहिं सुर्गवास थी, पइंचनि त्यारी कई ऐं चयाऊं त कुल्हो केरु दीन्दो? स्वामी जनि अलाजे किथे हून्दा । जदहिं पइंचनि काईअ खे मसण में खणी वञण जी त्यारी कई त दिठाऊं त स्वामी जनि अचनि पिया ऐं अची चाचीअ खे कुल्हो दिनाऊं । अहिड़ीअ तरह प्रतिज्ञा जी पालना कयाऊं ।

गुरूअ जे मेले जो बंदोबस्तः– स्वामी जनि सन्त रतन भगत, जंहिंजे गादीअ ते वेठल हुआ ऐं जदहिं मेलो लगन्दो हो, जंहिं जो सजो बंदोबस्त स्वामी जनि पाण कन्दा हुआ ऐं जदहिं मेलो शुरू थीन्दो हो त झंगल में हलिया वेन्दा हुआ । सन् १९२३ ई० में स्वामी जनि पाण समाधीअ खे चौतरफ़ भितियूं दियारे अन्दरि कुटिया ठहिराई ऐं अन्दरि हिक गुफ़ा बि ठहिराई । सागीअ तरह टन्डे महमद ख़ान सतुरु स्वामी केशवराम जे वर्सीअ जे मेले जो बंदोबस्त पाण ऐं सन्त तुलसीदास गदिजी कन्दा हुआ । मेलो २४ वेसाख जो लगन्दो हो । बंदोबस्त करे स्वामी जनि झंगल में हलिया वेन्दा हुआ पुठियां सन्त तुलसीदास संभालीन्दो हो ।

शिष्य ऐं श्रद्धालूः– स्वामी जनि बियनि संतनि वांगुरु आम तरह चेला कोन कन्दा हुआ । फ़कति के थोरा आङुरियुनि ते गुणण जेतिरा संदनि वेनती करण ते कया, जे हेठियां आहिनिः–

(१) तलिहार में दरबार जे महन्त भाई उधाराम जो भाइटियो भगत आत्माराम, जो हिन वक्ति नीमच में रहन्दो आहे । (२) सन्त कृष्णदास जीः मथुरा में सुर्गवास थी वियो । (३) स्वामी मनोहरदासः ही वेठलु मीरपुर ख़ास जो हो ऐं सोनारो हो । हिनखे स्वामी जनि संस्कृति ऐं वेदान्त कॉलेजनि में जयपुर ऐं काशीअ में पढ़ियो, कुछ वक्तु स्वामी जनि सां गडु रहिया, पोइ स्वामी जनि खेसि अलगि करे छदियो । आख़रि अजमेर में आश्रम ठहिरायो, उते रही उन बि सरीरु त्यागियो । (४) स्वामी वीरभान सागर, जंहिंखे स्वामी जनि हिन्दी ऐं गुजराती सेखारे वेदान्त पढ़ायो ऐं योग क्रियाऊं सेखारियूं । स्वामी जनि हिनखे सफ़र में पाण सां वठी ईन्दा हुआ ऐं स्वामी जनि जी ख़ूब शेवा कई ऐं स्वामी जनि सां १०-११ साल गडु रहियो । आख़रि में पालनपुर में स्वामी जनि वीरभान जी गोदि में कुल्हे ते कन्धु रखी सोहिंग जो जापु जपीन्दे शरीरु त्यागियो । ३-४ सालनि बैदि वीरभान बि परलोक पधारियो । (५) सन्त आशारामः पहिरीं हिनखे डीसा में कुटिया ते रहायाऊं पर हिननि खे बाकाइदे गुरु मंत्र देई, चेलो कोन कयाऊं । पर ही गुरू करे मञीन्दो आहे । पोइ चयाऊंसि त वञी अहमदाबाद में रहु । हींअर हिन जो आश्रम साबरमतीअ जे किनारे आहे ऐं रटनु करे स्वामी जनि वांगुरु उपदेश कन्दा आहिनि। स्वामी लीलाशाह महाराज किनि जे अर्जु करण ते गुप्त चेला बि आङुरियुनि ते गुणण जेतिरा कयाऊं । जींअं लेखक (मोरूमल) खे बि गुप्त चेलो बणाए गुरु शब्दु दिनो । बियो चेतनदेव भोजूमलु धान्धा, टियों चांडूमलु तुलसीदास छत्ताकपूर, चोथों मुखी ज्ञानचन्द, पंजों हेमन्तकुमार तोलाणी झूनागढ़, छहों भोजराज केसवाणी उपलेटा वग़ेरह वग़ेरह । आम तरह सभिनी खे भाउ करे कोठीन्दा हुआ ऐं हज़ारें संदनि श्रद्धालू आहिनि ।

स्वामी जनि जो कार्यः– स्वामी जनि जे त्यागु जी जेतिरी साराह कजे ओतिरी थोरी आहे । न रुगो रुहानी रहबर, भगितीअ जा भन्डार, योग जा यगाना ऐं वेदान्त जा वरियाम हुआ, लेकिन सिन्धी समाज जे

ऊणायुनि तड़ी कढण लाइ ऐं सुधारे आणण लाइ सत्संग कन्दे ख़ूब प्रचार कन्दा हुआ । मथियनि लिखियल संकल्पनि मूजिब धर्मशालाऊं, रात्री पाठशालाऊं, गौशालाऊं, कसरत शालाऊं, नारी शालाऊं, कन्या पाठशालाऊं ऐं लाइब्रेरियूं ठहिरायूं ऐं बर्पा कयाऊं, २२ खूह खोटायाऊं । तंहिंखां सवाइ ब्रह्मचर्य, चरित्र, तन्दुरुस्ती, नशेदार शयुनि न वापिराइण, ज्ञान भग॒तीअ ऐं वेदान्त ते सुठा-सुठा पुस्तक छपाराए विरहायाऊं । हैंड बिल छपाराए विरहायाऊं, मासिक पत्रिका कढारायाऊं । दे॒ती लेती बन्दि कराइण ऐं माण्हुनि जा दु॒खिया मसइला सुलिझाइणु, ग़रीबनि, अनाथनि, विद्ववाउनि ऐं अबु॒लाउनि जी सहायता करणु संदनि उद्देश्य ऐं कार्य हुआ ।

किताब छपाराइणु ऐं माहवारु रसाला कढाइणुः– स्वामी जनि कोबि किताब छपाराईन्दा हुआ त पंहिंजो नालो कोन लिखन्दा हुआ । पोंयनि सालनि में किनि किताबनि में संदनि नालो आहे । स्वामी जनि महाराज लेखराज वेठल चम्बड़ तैलिको टन्डो अलहियार, जो संदनि गुरु केशवराम साहिब जो गुर भाई हो । उनजा लिखियल किताब जहिड़ोकि हाल दरवेश, उलट चालीसी, श्री सार गीता तरिजमा करे ऐं टीका लिखी करे छपाया ऐं बि॒या बि के पुस्तक छपायां । जहिड़ोकि भग॒वत गीता, उपनषद, वीचार सागर, वैराग॒ शतक ऐं पंचीकरण । सिन्धु में मासिक पत्र "तत्व ज्ञान" बि कढारायाऊं ऐं भारत में आत्म दर्शन, जो प्रभुदास ब्रह्मचारीअ अजमेर मां शायइ कयो ।

समाज संगठनः– स्वामी लीलाशाह पइंचात जी एकता ते ज़ोरु दी॒न्दा हुआ ऐं उनजा फाइदा बु॒धाईन्दा हुआ । चवन्दा हुआ त एको करियो, ब॒धी करियो । **"ब॒ त बा॒रहं"** मेलाप सां मिली समाजी कम क़रियो । चयो त **"पइंचनि में परमेश्वरु आहे"** । पूरे न्याअ सां फ़ैसिलो करियो । संदनि प्रेरणा सां लाड़ वारनि जी "अखिल भारत लोअरि सिन्ध पइंचात" ऐं ब्रह्म खत्रियुनि जी "अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात" ठहियूं ऐं उन्हनि जे हर सम्मेलन में ईन्दा हुआ । दर्शन दे॒ई मुहूर्त करे, संदनि सत्संग बैदि कार्रवाई शुरू थीन्दी हुई । विच विच में सलाहूं दी॒न्दा हुआ । स्वामी जनि जे प्रेरणा ऐं आज्ञा सां अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जे ज़ेरि साये हेठि तारीख़ १०-४-६४ सहायता विद्या फन्ड बर्पा कयो वियो ऐं स्वामी जनि उनजा दाइमी चैयरमैन चूंडिया विया । जे १०-४-६४ खां वठी ब्रह्मलीन थियण ताईं याने ४-११-७३ ताईं रहिया ।

कन्याउनि जो उद्धारुः– आमिल ऐं सिन्धी भाईबन्दनि में दा॒जे में घणी दे॒ती लेतीअ जो रवाजु हो । विचोले दर्जे वारनि जे कन्याउनि जी दे॒ती लेती करे उकलाउ कोन थींदो हो । स्वामी जनि दे॒ती लेतीअ जे वरख़िलाफ़ु प्रचार कयो । जंहिं जो चडो असरु थियो । किनि दे॒ती लेती घटाई, किनि बन्दि पेती दि॒नी । ग़रीबनि ऐं विद्ववाउनि जे कन्याउनि जी शादीअ में बि स्वामी जनि सहायता कन्दा हुआ ।

नशेदारु शयूं न वापिराइण जी सलाहः– स्वामी जनि पंहिंजे उपदेशनि में चवन्दा हुआ त नशेदारु शयूं जहिड़ोकि बी॒ड़ी, सिगरेट, शराब, बीयर, आफीम वग़ेरह न वापिराइण जी बि सलाह दी॒न्दा हुआ ऐं उनमां जे नतीजा निकरन्दा हुआ, से बु॒धाईन्दा हुआ । बल्कि चांहिं पीअण जी सलाह बि न दी॒न्दा हुआ ऐं चवन्दा हुआ त हाज़िमो थी बिगाड़े । सिनेमा दि॒सण खां बि रोकीन्दा हुआ त गंदा चित्र चरित्र ते असरु था कनि । बि॒यो सिनेमा नज़र कमजोरु करे इख़िलाकु बिगेड़े ऐं पैसो विञाए थी ।

हरीजननि जो उद्धारः– स्वामी जनि खे हरीजननि (कोल्ही, भील, मेघिवाड़ ऐं सफाई कर्मचारी) जो घणो ओनो हून्दो हो ऐं संदनि झूपिड़ियुनि में वञी हालु अहिवालु वठ॒न्दा हुआ ऐं चवन्दा हुआ त हिन्दू चवायो

धर्म न बदिलायो । उन्हनि खे कपड़ो, बीमारनि खे दवाऊं दि॒यारणु ऐं उन्हनि लाइ स्कूल खोलाइण जहिड़ा कम कन्दा हुआ । बि॒यनि खे चवन्दा हुआ त छूत छाति छदि॒यो, साथ दे॒ई मिली हलो ।

सहायता जा कमः– जदु॒हिं बिहार ऐं बेंगाल में दु॒कारु पियो त संदनि सहायता लाइ कोशिश वरिताऊं । चन्दो कठो करे लाड़ खां सारियूं खरीद करे सेठि रीझूमल मातिलीअ वारे जी इंजिण तां छणाए चांवर करे बे॒ड़ियूं भराए हैदराबाद आन्दा, उतां रेल रस्ते बिहार ऐं बेंगाल में मोकिलियाऊं । अहिड़े नमूने गु॒झीअ तरह सहायता बि घणी कई पर बु॒धाईन्दा कोन हुआ ।

वसाइण जा कमः– सन् १६४७ ई० में हिन्दुस्तान आज़ाद थियो त उनजा ब॒ भाङा थिया ऐं सिन्धु पाकिस्तान में हली वेई । उतां हली करे हिन्दू लदे॒ हिन्दुस्तान में आया । के किथे के किथे पखिड़िजी विया । केतिरनि लाइ सरकार कैम्पूं खोले उन में रहायो । स्वामी जनि कैम्पुनि जो दौरो करे किनि खे रोज़गार ते लगा॒यो। किनि खे नौकिरी दि॒यारी, बीमारनि जे दवाउनि जो बन्दोबस्त करायो। शागिर्दनि खे स्कूलनि जा प्रब॒न्ध कराए दि॒ना वग़ेरह वग़ेरह ।

राज॒नीतीअ में भाग॒ वठणुः– स्वामी जनि सिन्धु में राज॒नीतीअ में चङो पार्ट अदा कयो । इलेक्शन जे टाइम में कांग्रेस पार्टीअ जे उम्मीदवारनि खे कामयाब बणाइण लाइ प्रचार कन्दा हुआ ऐं घणी कोशिश वठन्दा हुआ । कांग्रेस जो मकसद आज़ादी वठण जो पूरो थियो, स्वामी जनि राज॒नीतीअ मां निकिरी विया ।

कल्याणकारीः– हहिड़े लोक कल्याणकारी महात्मा जो थोरे में जीवन चरित्र वर्णन करणु कठिन कमु आहे । इएं चइजे त भुलियल लोकनि खे नईं राह दे॒खारण लाइ दुखियुनि जा दुख दूर करण लाइ अज्ञानियुनि खे अन्धकार मां कढी प्रकाश में वठी हलण वास्ते जग॒त में पधारिया हुआ । केतिरो लिखी केतिरो लिखिजे ।

सारे समुन्ड खे मसु करियां, कलमु करियां वणराह ।
धरतीअ खे पनो करे लिखां लीला लीलाशाह ।
पूरी थिए न राह, स्वामीअ जे गुणनि उपकार जी ।

अवतारु १६ कलाउनि वारोः– स्वामी लीलाशाह महराज १६ ई कलाउनि वारा अवतार हुआ ।

(१) बाल अखण्ड ब्रह्मचारी (२) विद्वान (३) शोरीन ज़िबान (४) सादगी धारीन्दड़ (५) त्यागी॒ (६) योगीराज (७) ध्यानी (८) ज्ञानी (६) निरविकार (१०) समाज सुधारक (११) गऊ शेवक (१२) नारी सन्मान चाहीन्दड़ (१३) हरीजननि जो हामी (१४) हुबलि-वतनी (१५) दुखियुनि जा दिलदार (१६) सच्चो सन्त ।

रिद्धी सिद्धीअ जा मालिकः– स्वामी जनि खे सभु रिद्धियूं सिद्धियूं हासुलु हुयूं । मगर हलाईन्दा कोन हुआ। पर ओचितो ई ओचितो कंहिं महिल प्रघट थी पवन्दी हुई । श्रद्धालुनि खे कई पिर्ता दि॒सण में आया । मगर हिति वर्णन करण सां किताब वधी वेन्दो ।

ब्रह्मलीन थियण जी त्यारी ऐं चिताउः– स्वामी जनि बा॒रहनि महिननि खां अन्दरां ई अन्दरां हिन संसार जो सफरु पूरो करे परलोक जो सांबाहो करण लाइ त्यारियूं करे रहिया हुआ । जेके बि स्वामी जनि जा आश्रम, कुटियाऊं ऐं धर्मशालाऊं वग़ेरह जा ट्रस्ट ठाहे रजिस्टर कराए छदि॒या । ३-४ महिना अगु॒ संदनि शिष्य वीरभान सागर खे चयाऊं त शरीरु त्यागि॒यां त मूंखे जल समाधी दे॒ई समुन्ड में छदि॒जो । वीरभान चयो त

साई, कीअं थीन्दो? असीं तव्हां खे किथे ग़ोल्हियूं ऐं किथे अचूं । मुंहिंजी मर्ज़ी आहे त तव्हांखे आदीपुर आश्रम में समाधी दिजे । स्वामी जनि चयो त समाधी केरु संभालीन्दो ऐं उते पैसा ईन्दा त केद्राहुं वेन्दा । वीरभान चयो त समाधीअ जी शेवा ऐं संभाल मां कन्दुसु ऐं पैसा जीअं तव्हीं परउपकार में लग़ायो था, तीअं मां बि परउपकार जे कम में लग़ाईन्दुसि । स्वामी जनि आज्ञा कई त चङो इएं कजि । सिन्धी ब्रह्म खत्रियुनि जे सम्मेलन ऐं लाड़ाई पइंचात जे सम्मेलन सन् १९७३ में वञण जा इशारा कया । मगर इन्हीअ वक्ति ग़ाल्हि समुझ में कोन आई ऐं ब़ियनि खे बि अहिड़ा इशारा दिनाऊं ।

जोती जोति समाइजणुः– पालनपुर में स्वामी जनि २४ कलाक अग़ु वीरभान सागर खे चयो त सुभाणे सुबूह जो सरीरु त्याग़ीन्दुसि, तूं रोरड़जि कीम । दिल खे मज़बूत करे सरीर खे सम्भालिजि ऐं आदीपुर आश्रम में समाधी दिजि । बराबर २४ कलाकनि बैदि तारीख़ ४ नवम्बर सन् १९७३ बराबर ८ कत्ती सम्बत् २०३० दिहाड़े आरतवार पालनपुर शहिर में शहिर जे ब़ाहिरां हिक सेठि जे बंगिले में ज्ञान जे ग़ाल्हियुनि कन्दे ८.३५ बजे सुबूह जो अखियूं खणी बन्दि कयूं ऐं वीरभान जे हंज में वेही कुल्हे ते कन्धु रखी ओहिंग सोहिंग जो जापु कन्दे सरीरु त्याग़े जोती जोति समाया । जा जाइ हाणे प्रेमियुनि ख़रीद करे स्वामी जनि जो आस्थान ऐं वीरभान जी समाधी ठाही आहे ।

ब्रह्मलीन थियण जो समाचारः– स्वामी जनि जे ब्रह्मलीन थियण जी ख़बर बिजलीअ वांगे सज़े शहिर में पखिड़िजी वेई ऐं खुदि बि खुदि माण्हुनि हड़ताल कई । चौधारी तारूं ऐं टेलीफोन थी विया । पालनपुर जे कलेक्टर मार्फत रेडियो स्टेशन अहमदाबाद खे समाचार मोकिलियो जिनि बरवक्त ई गुजराती, हिन्दी, अंग्रेज़ी ऐं सिन्धीअ में ब्रॉडकास्ट कयो । दुनिया जी कुंड कुड़िछ में ख़बर पइजी वेई । हज़ारें माण्हू दर्शन करण लाइ अची पहुता ।

आदीपुर जी यात्राः– स्वामी जनि जो शरीरु द्रोलीअ में विहारे ट्रक में रखी सर्गस कढियो वियो ऐं सज़े शहिर मां घुमायो वियो । उन सां गदु कलेक्टर ऐं डिस्ट्रिक सुप्रीडेन्ट पुलिस पिणि दर्शन करे यात्रा सां गदु हलिया । यात्रा डीसा राधणपुर ऐं ब़िया नन्ढा वदा ग़ोठ तिनि मां थीन्दा रात जो १२ बजे आदीपुर पहुता ऐं स्वामी जनि जे धर्मशाला में संदल ते सुम्हारे, सज़ी रात कीर्तन कयो वियो । सुबूह जो ब़ीअ द्रोलीअ में विहारे यात्रा शुरू कई । सर्गस में हज़ारें माण्हू हुआ । पोइ सर्गस राम बाग़ सुन्दरपुरी, गोपालपुरी, रेल्वे कॉलोनी, गुरु नगर, गांधीधाम ऐं आदीपुर मां घुमन्दे शाम जो ५.३० बजे आश्रम में पहुता । सर्गस में कई फोटू कढाया विया । द्रीओ समुन्ड में परवान कयो वियो ।

समाधीः– तारीख़ ५ नवम्बर सन् १९७३ ई० शाम जो ६ बजे आश्रम में संदनि रहण वारे क़मरे जे साम्हूं समाधी दिनी वेई ऐं चौतरफ नन्ढियूं भितियूं दिनियूं वेयूं ।

सन्त जो तेरहोः– सन्त जो तेरहो (ब़ारहो) तारीख़ १६ नवम्बर १९७३ ते मुकररु करे चौतरफ चिठियूं लिखियूं वेयूं । तेरहें ते ओसे पासे ऐं ब़ाहिर जा परे परे खां हज़ारें माण्हू आया । क्रियाकर्म पूरो करे, हवन वग़ेरह करे आरती कई वेई । भन्डारो कयो वियो जो सभिनी खे खारायो वियो ऐं सत्संग, भज़न भाउ कीर्तन वग़ेरह थियो । पक्की समाधीअ लाइ माण्हुनि चन्दो दिनो, किनि लिखायो । अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात पारां उनजे प्रेज़ीडन्ट श्री फतूमल टहलराम सोरठिया समाधीअ वास्ते ५१००० (एकवन्जाहु हज़ार)

लिखाया, जे पोइ उगाड़े करे दिना विया, जंहिं मां समाधी ठही। लाड़ पइंचात समाधीअ मथां हाल टहिरायो। बाकी बचियल पंहिंजनि पैसनि मां स्वामीअ जे रहण वारे कमरे में मन्दर करे टहिरायो वियो।

जयन्ती, वर्सी ऐं मेलो:– उते पैंडाल में ज़ाहिरु कयो वियो त जयन्ती जीअं अगे मल्हाईन्दा हुआ, तीअं भले पंहिंजे शहिरनि में मल्हाइनि। बाकी वर्सीअ जो मेलो समाधीअ जी तारीख़ ७-८-६ कती हर साल मल्हायो वेन्दो आहे जो हर साल ट्रस्ट वारा लगाराईन्दा आहिनि। कुछ साल ट्रस्टी श्री महादेवमल सेठ टहलराम समूह शादियुनि ऐं समूह जणियनि जो प्रोग्राम रखी चालू कयों, सो हाणे हर साल कयो वेन्दो आहे।

वधीक विस्तार लाइ पढ़ो: सिन्धी ब्रह्म खत्रियुनि जो धार्मिक ऐं सामाजिक इत्हास सुफ़्हें ४७६ खां ५५२.

(१२) सन्त द्वारकापुरी (बम महादेव) वल्द आसनदास खूहा

जनमु:– सिन्धु जे थरपारकर ज़िले जे मीरपुर ख़ास शहिर जे दुखण में अटिकल १६-१७ मेल परे हिकु नन्ढो गोठु मीरवाह गोरचाणी आहे। उन गोठ में श्री आसनदास वल्द रामनदास नुख खूहा रहन्दो हो। आसनदास खे पंज पुट हुआ: (१) वाधूमल (२) कलूमल (३) सेऊमल (४) रोचीराम (५) जो नालो मइलूमु कोन्हे। वदे पुट मुरबी वाधूमल जो जनमु अटिकल सन् १८६८ ई० में थियो। अजु नन्ढो सुभां वदो। इहो नींगरु वधी जुवान थियो। कद जो डिघेरो, बदन जो हल्को, शिकिलि जो सांवरो हो। हिन स्कूल जा पंज सत दर्जा सिन्धीअ में पास कया। घोड़े जी सवारी कन्दे उन तां किरी पियो ऐं धकु खाधाईं, जंहिं में संदसि हथु मुड़ी पियो, जो सजी जमार हथु मुड़ियलु ई रहियो। आसनदास ४ पुट परिणाया, बाकी नन्ढो पुटु नम्बर ५ कुंवारो ई सुर्गवास थी वियो। पर चइनी पुटनि मां फकति कलूमल खे ई २ पुट जावा: हिकु रतनचन्द ऐं बियो शामनदास। बियनि टिनि खे बाकी पुट जो औलाद कोन हो।

रहण जो शहिरु:– हीअ आकहि असुलु मीरवाह गोरचाणी में रहन्दी हुई। कुछ सालनि खां लदुण खां अगु लदे अची मातिली शहिर ज़िले हैदराबाद में रही। जदुहिं १६४७ ई० में हिन्दुस्तान आज़ाद थियो। भारत जा बि व टुकरा थिया: हिकु हिन्दुस्तान बियो पाकिस्तान। सिन्धु हली वेई। पाकिस्तान में हिन्दू मुसलमान फसाद शुरू थी विया। हिन्दू लदे हिन्दुस्तान में आया त भाई कलूमल जनि मातिलीअ मां लदे हिन्दुस्तान में कानपुर शहिर (यू.पी.) में अची रहिया। संदसि औलाद अञा बि उते रहियो पियो आहे ऐं कपड़े जा दुकान वग़ेरह अथनि।

नौकिरी:– वाधूमल अबाणो धन्धो रङावत जो कोन कयो। थोरे पढ़ियल हुअण सबबु हिनखे नन्ढी सरकारी नौकिरी ढकमुनशी मिली वेई जा वदी ईमानदारीअ सां अदा कयाईं। छाकाणि त ही नन्ढे हून्दे खां ई धर्मी ख़्यालनि जो हो ऐं को बि शहिर में सत्संग थीन्दो हो त हू वञी बुधन्दो हो। पर दींहों दींहुं हिनजी प्रवृतीअ में फेरो ईन्दो ई रहियो ऐं घणो वक्तु सत्संग में गुज़ारीन्दो हो। सो हिन नौकिरीअ मां संदसि दिल खटी थी पेई ऐं इस्तीफ़ा लिखी मोकिलियाईं। पर ऑफ़ीसर हहिड़े सुठे कम कन्दड़ ऐं ईमानदार खे छदुण नथे चाहियो तंहिंकरे हिनजी इस्तीफ़ा मंज़ूर कान कयाईं, तंहिंते वाधूराम बी इस्तीफ़ा जी दरख़्वास्त मोकिली, दफतर (रिकार्ड) खणी खूह में उछिलाए आयो ऐं वञी सन्यास वरिताऊं।

वैराग ऐं गुरू करणु:– जदहिं हिनखे पूरो पूरो वैराग उत्पन्न थियो, नौकिरी छदे ऐं घर वारु छदे त्याग दिनाईं । हिन जी नन्ढे हून्दे शादी कयल हुई । जदहिं घरु त्यागियाईं त संदसि धर्मपत्नीअ अर्जु कयो त मां तव्हां जी अधु शरीरु आहियां, मूंखे कींअं था छदे वञो । मूंखे बि पाण सां गदु वठी हलो । जीअं सीता कम में श्री रामचन्द्र सां गदु हुई तीअं मां बि हर हंधि तव्हां सां गदु हलन्दसि ऐं रहन्दसि । तव्हां जी शेवा करे पंहिंजो जनमु सफल कन्दसि । तंहिंते हू पंहिंजी स्त्रिीअ खे पाण सां गदु वठी वियो । पर ईश्वर जी जोड़ अहिड़ी जो १०-१२ दींहं हयातु हुई, पोइ परलोक पधारी । हिन गुरूअ जी तलाश कई । दिठाईं त संदसि कुल गुरू गोस्वामी रामपुरी हो । उन वटि वियो । उतां थी चोटीअ गुर साईं चेतनपुरीअ वटि वियो । जे मीरवाह गोरचाणीअ में देवीअ जे मढ़ीअ में रहन्दा हुआ । उन्हनि खे पंहिंजो गुरू करे मञियाऊं ऐं संदनि शिष्य थी रहिया । उते कुझ वक्तु बोध वठी तीर्थ स्थाननि ते हलिया विया । उते वञी साधनाऊं कयाऊं ऐं योग पचायाऊं । सन्यास अख़्तियारु करण बैदि संदनि जनम जो नालो वाधूमलु मटाए द्वारकापुरी रखियाऊं । पर हू महादेव जो पूजारी ऐं उपासक हो ऐं उनजे नाले जो ई पाठु जपु कन्दो हो । इनकरे आम माण्हू हिन खे सदीन्दा ई **बम महादेव** हुआ ।

जनम भूमि छदे रटनु करणु ऐं परदेस वसाइणु:– हिमालय पहाड़ ऐं तीर्थ आस्थाननि ते तपस्याऊं करे योग कमाए वरी जनम भूमि मीरवाह गोरचाणीअ में आया । कुझु वक्त उते रही पोइ हलिया विया ऐं वञी टन्डे गुलाम अलीअ में कुटिया ठाहे ३-४ साल रही, पोइ उतां वञी ख़ैरपुर रियासत में देरो कयाऊं ऐं आस पास वारनि गोठनि में जहिड़ोकि मांडण, ठरी, बोज़दार, वदा टालपुर ऐं जलालाणी में घुमन्दा रहन्दा हुआ । जिते वेन्दा हुआ, उते राम नाम जो नालो जपाइणु ऐं कीर्तन कन्दा हुआ । कुछ वक्त सिन्धु जे सैर ते निकिरन्दा हुआ । कुछ वक्त रही पोइ हिन्दुस्तान जे बियनि भाङनि में रटनु करण हलिया वेन्दा हुआ । पर गुजरात में ख़ास करे झूनागढ़ में गिरनार जे कोट में गचु वक्तु रहन्दा हुआ । साल में हिकु दफ़ो सिन्धु में चक्करु देई दर्शन करे कीर्तन वग़ेरह करे वरी हलिया वेन्दा हुआ । जेसताईं संदसि माता जीअरी हुई त साल में हिकु दफ़ो मीरवाह गोरचाणी अची माता साहिब खे पेरे पई आसीस वठी वेन्दा हुआ । जदहिं संदसि भाउ कलूमल मीरवाह गोरचाणी मां लदे मातिलीअ में अची रहिया त सन्त मातिलीअ में बि हर साल चक्करु लगाईन्दा हुआ ।

आस्तान:– केतिरनि सालनि जे सैलानी साधू थी रहण बैदि आख़िर गुजरात जे गोठ सोरठ वन्थली में झूनागढ़ जे वेझो आस्तानो ठाहे उते रहिया ऐं ईश्वर खे ध्याए उनजो भजन कन्दा रहिया, घणेई श्रद्धालू उन आस्तान ते ईन्दा रहिया ऐं केतिरनि ई लोकनि जूं आसूं ऐं मुरादूं पूरियूं कयूं ।

झूनागढ़ खे परिक्रमा:– सन्त झूनागढ़ गिरनार जे कोट जी यात्रा कन्दा हुआ । उते दस नाम सन्यासियुनि जो अखाड़ो लाला नारायण गुर जे नाले सां सक्रियाटीबा ते आहे । जिते महाशिवरात्रीअ ते अनेक साधू गिरनार तलाई में भूनाथ जे भरिसां अची गदु थीन्दा आहिनि ऐं वाटोटी लगुन्दी आहे । हिते दस नाम जा साधू सन्यासी देश जे हर कोने मां ख़ूब अची कठा थीन्दा आहिनि ऐं मरखी कुण्ड में इश्नानु कन्दा आहिनि ।

परलोक पधारिजणु समाधी ऐं मेलो:– हीउ सन्त तारीख़ ६ महिनो सांवण सम्बत् विक्रमी २०१४ बराबर ३ आगस्ट १९५७ ई० दिहाड़े छंछर तिथि अष्टमीअ ते सोरठ वन्थलीअ में संदसि आस्थान ते पंहिंजे इष्ट जो नाम जपीन्दे देह त्यागे ब्रह्मलीन थिया । संदसि भाइटियनि खे कानपुर तार कई वेई ऐं उहो संदसि हिकु

भाइांट्यो उते आयो । पोइ उन शहिर मां गंगनाथ महादेव जे मन्दर भरिसां रेल्वे स्टेशन जे नज़दीक सन्त खे समाधी डिनी वेई । उनजी शेवा ठकुर रंगलदास धीरूमल बूलचन्दाणीअ असुलु वेठल गोठ मांडण, खै़रपुर रियासत, हाणे सोरठ वन्थलीअ वारो कन्दो आहे । संदसि निशानियूं जहिड़ोकि शंख, अलख झूले, खड़तालूं, सिद्धीअ वारो पुस्तक (सन्यास धर्म जो पुस्तक) सांढे रखियूं वेयूं आहिनि । समाधीअ ते हर साल तारीख़ सुद्धी अष्टमी सांवण जे मेलो लगायो वेन्दो आहे, जिते घणेई भगत श्रद्धा रखी अची मुफ्त में भगितियूं विझन्दा आहिनि ऐं चौकियूं डीन्दा आहिनि । मेलो ३ डींहं लगायो वेन्दो आहे । जिते शिव पुराण जो पाठु, गीता जो पाठु ऐं गुरू ग्रंथ जो पाठु वगे़रह बि थीन्दा आहिनि ऐं हज़ारें यात्री ईन्दा आहिनि, अची लाभ वठन्दा आहिनि । शेवाधारी रंगलदास पंहिंजे घर में पिणि स्थापना कई आहे, जिते राम धुनी लगन्दी आहे ।

शिष्यनि ऐं श्रद्धालुनि खे पर्चा:– हिन सन्त वटि जेके बि श्रद्धा रखी सच्चे दिल सां ईन्दा हुआ, तिनि जूं आसूं ऐं उम्मेदूं, मुरादूं ऐं मनो-कामनाऊं पूरियूं थीन्दियूं हुयूं । लोकनि खे अहिड़ा कई पर्चा मिलिया ऐं के डिठा, तिनि जो थोरो ज़िक्रु हेठि कजे थो । सन्त जा चेला बि घणेई थिया । के ब्राह्मण बि संदनि शिष्य थिया । हिकु ख़ास चेलो ब्राह्मणु नाले पढालाल वल्द थांवरदास शर्मा वेठलु बोज़दार (खै़रपुर रियासत सिन्धु) वारो हो । जंहिं सां तमाम घणो प्रेम होनि । श्रद्धालू त कई हुआ ।

(१) सेठ लखूमल जनहरमलाणी बोज़दार वारे खे औलाद कोन हो । सन्त हिनजे घरि वियो ऐं वञी पींघो लोडियो ऐं राम धुनी लगाए, पोइ लोली डिनाईं । बारहें महिने सेठ लखूमल खे पुटु जाओ जंहिंजो नालो वंसीलाल रखियो वियो जो सिन्धु मां लडे बांटवा में अची रहियो । हाणे राजस्थान में रहन्दो आहे ।

(२) सिन्धु में गोठ ठरीअ में रहन्दड़ सेठ गुनोमल वल्द छाडोमल जे बचिड़े खे जीवन दान डिनो । जो हींअर अमिरेली (गुजरात) में रहन्दो आहे ।

(३) भाई विशनदास वल्द छाडोमल ठरीअ वारे जो पोटो पंजनि सालनि जो थियो, पर पंधु कोन कन्दो हो । घणेई डॉक्टरनि जा इलाज कयाऊं पर फाइदो कोन थियो । पोइ माइट सन्त खे अर्जु कन्दा रहिया । हिक डींहुं सन्त संदनि घरि वियो ऐं उन छोकर खे पैसो डेखारे परे उछिलायाईं ऐं चयाईसि त इहो पैसो खणी आउ । छोकरु यकिदमि उथी हलण लगो ऐं पंधु करे पैसो खणी आयो । हाणे हलन्दो रहन्दो आहे ।

(४) डॉक्टर पोपटाणीअ खे पुट जी घुरिज हुई जिनि सन्त खे अर्जु कयो । सन्त जे आसीस सां हिनखे पुटु जाओ, जो उहो हींअर सोरठ वन्थलीअ में रहन्दो आहे ।

(१३) सन्त भगत भेरोमल उर्फु भेरवदास उत्तूमल धान्धा

जनमु: सिन्धू नदीअ जे साजे कप ते उल्हन्दे तरफ़ हिकु शहिर मांझदि ज़िले दादू सिन्धु में आहे । जंहिंखे दरियाहु ब टे भेरा खाध करे खणी चुको आहे ऐं वरी पिए अडायो आहे । शहिर में हिकु ब्रह्म खत्री नाले उत्तूमल वल्द कर्मचन्द नुख धान्धा रहन्दो हो । जंहिं खे ब पुट ज़ावा हिकु भगत भेरोमल उर्फु भेरवदास बियो लाला । कुदिरत जी जोड़ अहिड़ी जो पूरब जनम जे संस्कारनि मूजिब कुछ वक्तु घर में धारण बैदि बई घरु त्यागे वञी सन्यास अख़त्यारु कयाऊं । वडे सन्त भेरवदास शादी कई ऐं नन्ढे सन्त लाला शादी न करे ब्रह्मचारी थी रहियो । हिति सन्त भेरवदास जो ज़िक्रु कजे थो ऐं बाकी लाला नारायण गिर जो अगिते धार बयानु कयो वियो आहे: बाब २ जे नम्बर १० ते ।

भगत भेरेमल जो जनमु अटिकल २० सदीअ जे शुरूआति में शहिर मांझंदि में थियो । तारीख़ महि- ऐं साल जो पतो कोन पइजी सघियो आहे । ही कद बुत जो पूरो पुनो, शिकिलि जो कणिक रंगो सांवराईअ ज हो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई भगवान जी भगितीअ दांहुं लाड़ो हो, बियो राग गाइण लाइ चाहु हुअसि, हिं कविता ठाहिण जो बि शौंकु होसि । रहण में बिलकुल सादो हून्दो हो । पंहिंजे मस्तीअ में ई मस्त हून्दो हो । बियनि सां बिना कम कोन गाल्हाईन्दो हो । को बि सुवाल पुछिबो होसि त उनजी वरन्दी दीन्दो हो । दिल जो सच्चारु, ईमानदारु ऐं उदार-दिल हो । कमीज़ धोती पाईन्दो हो ऐं मथे ते सादी टोपी पाए पटिको बधन्दो हो ।

तइलीमः– ही अरबी सिन्धी पढ़ियलु हो जो संदसि ठाहियलु ग्रंथु पाण पंहिंजे हथ अखरनि सां लिखिय अथसि ऐं उहे अखर तमाम सुठा आहिनि, इनजो मतलब त चङो पढ़ियलु हो ।

धन्धोः– ही अबाणो धन्धो रङावत ऐं हथ जी छपाईअ जो कमु कन्दो हो । कम जी छंभा आलीशान हुअसि ऐं रंग अलेजर जो अहिड़ो रङीदो हो, जहिड़ा मींह वसाड़ा ।

शादी ऐं औलादः– हिन शादी कई हुई ऐं गृहस्थी हो । खेसि ब पुट जावा हिकु मूलचन्द बियो ठाकुरदास । ही बई अञा नन्ढा हुआ त भगत भेरेमल जी धर्मपत्नी सुर्गवास थी वेई ऐं बई छोकिरा दादीअ सम्भालिया । जा बि थोरो वक्तु ज़िन्दह रही ऐं परलोक पधारी । हिनखे जो नन्ढे हून्दे खां ईश्वर जे मिलण जी लिंव लगी पेई हुई सो अची हिनखे तीवर वैराग जागियो सो परमात्मा जो पांधीअड़ो थी, घरु त्यागे अलाजे केदांहुं हलियो वियो । पोइ हिनजा बई छोकिरा भगत जा सौट वेन्सीमल, ईसरदास ऐं ख़ूबचन्द टेई पुट पेसूमल जा तिनि सम्भालिया ऐं पाले वदो कयो । भगत जो पतो ई कोन पियो त केदांहुं वियो ।

रिहाइशी आस्तानः– मथे लिखी चुको आहियां त हिननि जी सजी आकहि ऐं कुटम्ब वारा शहिर मांझदि में वेठल हुआ । भगत जे घरु छदे वञण बैदि कुछ वक्त खां पोइ हिननि जी आकहि लदे मांझहंदनि जे नज़दीक मांझूं शहिर में वेठा । उते छपाईअ जो कमु कन्दा हुआ । छोकिरा हाणि अची वदा थिया । पाकिस्तान थियण वैदि सन् १९४८ ई० में ही बई छोकिरा श्री मूलचन्द ऐं श्री ठाकुरदास सिन्धु छदे हिन्द में आया ऐं अची उल्हासनगर (महाराष्ट्र) में रहिया । कुछ समय बैदि उतां लदे अची जेतपुर (गुजरात) में वेठा । जिते स्क्रीन प्रिन्टिंग जा कारख़ाना खोलियाऊं । बिन्हीं भाउरनि शादी कई श्री मूलचन्द खे सत पुट जावा ऐं श्री ठाकुरदास खे टे पुट आहिनि । जेतपुर में चालीह साल रहिया । उते श्री मूलचन्द परलोक पधारियो । उनजो औलाद ऐं श्री ठाकुरदास उतां लदे अची सांगानेर में वेठा आहिनि । उते ठाकुरदास स्क्रीन प्रिन्ट जो आलीशान कारख़ानो ठहिराए चालू कयो आहे ऐं अग्रवाल फॉर्म, मानसरोवर में पंहिंजी जाइ वरिती आहे । थोड़ी फेरि घेरि करे ढंग सां बणाए उन में रहन्दा आहिनि ऐं मूलचन्द जे पुटनि धार धार किस्मनि जा धन्धा शुरू कया आहिनि ।

कविः– भगत खे नन्ढे हून्दे खां गाइण वजाइण ऐं भगिती कीर्तन जो अघाध प्रेम ऐं अथाहु शौंकु हो । तंहिंखां सवाइ भगवान बि संदसि गले में शीरी बख़्शी हुई जो आवाज़ बुलन्द, सुरीलो ऐं मिठो होसि । माइक्रो फोन ऐं लाऊड स्पीकर जी ज़रूरत ई कान हुई ऐं नको कमु आणीन्दो हो । हिनखे किस्मत सां को काबिल ऐं कामिल गुरू मिली वियो, जंहिं हिनखे शाइर-बाज़ीअ में गायनु ऐं विद्या में हिनखे भड़ करे छदियो । तम्बूरो वजाइणु ऐं खड़ताल वजाइणु बि सिखी वियो । हीउ पंहिंजा ठाहियल भजन तम्बूरे ते गाईन्दो हो त बुधंदड़ सुरत ई भुलिजी वेन्दा हुआ ऐं राग में ई मगन थी वेन्दा हुआ ऐं चाहीन्दा हुआ त अञा भगत गाए त चङो । जेसीं

भजन भाउ या सत्संग पूरो न थीन्दो हो तेसीं पब्लिक न उथन्दा हुइ । भगत पाण बि हिक हथ में तम्बूरो बिए हथ में खड़तालु वजाईन्दे ऐं गाईन्दे अहिड़ो महू थी वेन्दो हो, जो बाहिर जी सुध बुध बि भुलिजी वेन्दो हो । खेसि सभिनी रागनि जे सुरनि जी पूरी पूरी जाण हुई ऐं राग बि सभिनी सुरनि में गाए वेन्दो हो । इहो उनमां ई साबित आहे त हिन जेके बि भजन, शब्द, कविताऊं, कलाम, श्लोक ऐं बैत ठाहिया आहिनि, तिनि जे मथां हरहिक ते सुर जो नालो लिखियो अथसि । उहे सभु सिन्धीअ ऐं हिन्दीअ में ठाहिया अथसि । उन मां पिरूड़े सघिजे थो त हिनखे हिन्दी बोलीअ जी बि चङी जाण हुई । इहा सजी वाणी पंहिंजे हथ अखरनि सां अरबी सिन्धीअ में हिक किताब में कलमबन्द कई अथसि ऐं उन ग्रंथ जो नालो रखियो अथसि **"निरपुख्य नीशानु ग्रंथु"** । हिन ग्रंथ में कुल १८३० भजन काफियूं ऐं श्लोक वग़ेरह आहिनि । हिन ग्रंथ जो साईज़ ७½" X १२½" आहे ऐं हिन में कुल ७८० सुफ़्हा आहिनिः ३० मुहाग जा ऐं ७५० भजन जा ऐं हरहिक सुफ़्हे में १२ लाईनियूं आहिनि । पनो बि सुठो कतबु आयलु आहे ऐं अखर बि सुठा ऐं उम्दी-कारी मसु सां लिखिया अथसि । काफ़ी महिनत कई अथसि । उन मां मइलूमु थो थिए त सन्त महिनती ऐं अविरचु बि हो । उन्हनि भजननि ऐं श्लोकनि में तमाम घणो ज्ञान भरियलु आहे । उन मां समुझिजे थो त सन्त पूरो महाज्ञानी हो । ही ग्रंथु संदसि नन्ढे पुट श्री ठाकुरदास वटि सांढे रखियलु आहे जो मूं याने हिन किताब जे लेखक इहो ग्रंथु चङीअ तरह नज़र मां कढियो आहे । तदुहिं त एतिरी पिरूड़ पेई ।

भगिती, तपस्या ऐं रटनुः– सन्त जीअं घरु त्यागे हलियो वियो तीअं हिनजो वैरागु वधन्दो वियो सो ई हिन्दुस्तान अची हिमालय पहाड़ ते तपस्या कयाईं ऐं रटनु करे कई तीर्थ आस्तान भेटियाईं ऐं सन्तनि महात्माउनि योगियुनि जो संगु कयाईं । उनमें हाणे रची लालु थी वियो ऐं ईश्वर जो साख्यात्कारु दर्शन कयाईं, घुमन्दे फिरन्दे हिन सन्त अची नसीराबाद में आस्तानो ठाहे उनमें रहन्दो हो ऐं उते सत्संग ऐं कीर्तन वग़ेरह कन्दो हो ।

हिकु भाईबन्द नाले श्री हासानन्द, जो सिन्धु में ई सन्त जो वाकुफु हो, सो बि किस्मत सां १९४८ में लदे अची नसीराबाद में रहियो, जंहिंजी हिन सन्त में तमाम घणी श्रद्धा हुई । तंहिं सन्त जो बुधी दर्शन लाइ वियो त हिनखे सुञाताईं ऐं रोजु संदसि सत्संग ऐं कीर्तन में वेन्दो हो । सन्त उतां वरी नसीराबाद छदे वञी सतना (म.प्र.) में रहियो । उते जगत देव तलाअ जे किनारे कुटिया बणाए रहियो पियो हो । सन् १९५५ ई० में श्री हासानन्द बि नसीराबाद छदे सतना वञी वेठो ऐं रोजु सन्त वटि वेन्दो हो ऐं हर आरतवार ते सन्त सत्संग ऐं कीर्तन कन्दो हो । हासानन्द बि उनमें वेन्दो हो ऐं सिन्धी कॉलोनीअ में रहन्दड़ सिन्धियुनि ऐं बुर्जुगनि खे सन्त खे वुधण लाइ ऐं दर्शन कराइण लाइ वठी वेन्दो हो । उहे कीर्तन बुधी आनन्द वठन्दा हुआ । वरी सन्त तलाअ वारी कुटिया छदे गऊशाला जे भरिसां बणाए, उते अची रहियो ।

चालीहे जो व्रतुः– हिन कुटिया में अची सन्त चालीहे जो व्रतु रखियो । फ़कति रोजु सुबूह जो हिकु भंग जो गिलास पीअन्दो हो । बियो कुझ न खाईन्दो हो, न पीअन्दो हो । अहिड़ीअ तरह ४० दींहं व्रतु रखी चालीहो पूरो कयो। उते जा माण्हू इहो दिसी ऐं बुधी तपरस में पइजी विया, चयाऊं त बराबर सच्चो सन्त आहे।

सन्त जो आश्रमुः– भाई हासानन्द सतना खां धन्धे जे ख़्याल खां कोटा हलियो वियो । जो हू सन् १९६० में वरी वापस आयो । उन ऐं कॉलोनीअ जे माण्हुनि जी इच्छा दिसी सन्त वरी उहा कुटिया बि छदी ऐं सिन्धी कॉलोनीअ में सन्त लाइ आश्रमु ठाहियो वियो, जो पोइ उनमें ई रहन्दो हो ऐं आख़िर ताईं उन में ई रहियो ।

सत्संग ऐं कीर्तनः– उन सन्त जे आश्रम में हर आरतवार ते शाम जो सत्संग ऐं कीर्तन थीन्दो उन बैदि प्रसाद विरहायो वेन्दो हो । हू सत्संग में रूहानी गाल्हियूं चवन्दो ऐं गाईन्दो हो । जंहिं में सभिनी आत्मा प्रसन्न थी वेन्दी हुई । हू फ़िल्मी रागु या कंहिं जो नकुलु करे रागु कोन गाईन्दो हो । हू पंहिंजा ठाहि मार्गी शब्द ऐं ज्ञानी पंथ जा गीत गाईन्दो हो । संदसि ज़िबान में देवी सरस्वतीअ जो वासो हो । ही पूरो ब्रह्मज्ञानी ऐं योगी हो ऐं खेसि ईश्वर जो साख्यात्कारु दर्शन थीन्दो रहन्दो हो ।

भन्डारोः– सन्त जो भन्डारो सदाईं भरिपूरु रहन्दो हो । कंहिं खां घुरन्दो बि कीन हो । उन राज़ खबर सन्त खे, बी ईश्वर खे, बाकी लोकनि खे का बि ख़बर कान हुई त किथां थो अचे ऐं केरु थो डिए

परलोक वञण जी त्यारीः– सन् १९७४ ई० जे महिने डिसम्बर में सन्त जी तबियत नाखुश थी पेई सो अस्पताल में भर्ती करायो वियो । ४ डींहंनि खां पोइ चयाईं त मूंखे आश्रम में वठी हलो । सिन्धी बुजु सन्त खे आश्रम में वठी आया । सन्त आश्रम में पहुचण खां पोइ हाज़ुरु सिन्धी बुजुर्गनि ऐं श्रद्धालुनि खे चये त आऊं बारहें डींहुं प्राण त्यागींदुसि ऐं मंगल जे डींहुं चोलो छडींदुसि ऐं मुंहिंजी समाधी ठहिराइजो ऐं समाधीअ ठाहिण लाइ जाइ पिणि वधायाईं जा १० फुट ऊन्ही खोंटी वेई ।

ब्रह्मलीन थियणुः– बराबर १२ डींहनि खां पोइ सतना शहिर में संदसि आश्रम में तारीख़ ३० डिसम्बर सन् १९७४ में रात जो ८ बजे प्राण त्यागे परमात्मा में लीन थी वियो । तारीख़ ३१ डिसम्बरु सन् १९७४ ई० ते सन्त जे मृतक शरीर खे सींगारे, सजायल डोलीअ में विहारे, सर्गस कढी सारे शहिर में घुमायो वियो । सभिनी मन्दरनि ऐं गुरुद्वारनि वटि सरु निमाए समाधीअ वारी जाइ ताईं नियो वियो । जिते विधीअ पूर्वक सन्त खे समाधी डिनी वेई । उन डींहुं सजी कॉलोनीअ सजो कारोबारु बन्दि रखियो ऐं सर्गस सां हलिया ऐं श्रद्धांजली डिनी ।

समाधीः– समाधी शहिर खां बाहिरि परे शिव मन्दर जे साम्हूं ठाही वेई आहे ।

सत्संग ऐं भन्डारोः– समाधीअ वटि हर आरतवार ते सत्संग थीन्दो आहे ऐं प्रसाद विरहाइबो आहे ।

मेलोः– हर साल ३१ डिसम्बर ते वर्सीअ जो मेलो लगायो वेन्दो आहे । सत्संग ऐं भन्डारो चालू रहन्दो आहे । किथे किथे जा माण्हू ईन्दा आहिनि ऐं सुखाऊं बासीन्दा आहिनि, जे पूरियूं थीन्दियूं आहिनि ।

सन्त जो आश्रमु ऐं मन्दरः– सिन्धी कॉलोनीअ में जो सन्त जो आश्रमु ठहियलु हो ऐं सन्त रहन्दो हो, उन में मन्दर ठहिरायो वियो आहे । मन्दर में सन्त जी मूर्ती रखी वेई आहे, जिते माण्हू दर्शन करण ईन्दा आहिनि ऐं वक्त ते सत्संग बि थीन्दो आहे ।

चमत्कारः– सन्त माण्हुनि खे कई परचा डिना ऐं चमत्कार डेखारिया, पर सन्त उहे ज़ाहिरु करणु न डीन्दो हो ऐं सभु लिकल रखिया विया । नाले ख़ातिर मिसाल डिजनि था ।

(१) भाई हासानन्द जो पुटु सख़्तु बीमारु थी पियो ऐं लेपण में विधो वियो । पोइ हासानन्द सन्त खे सुमिरे आराधिना कई त सन्त हाणे ही मुंहिंजो पुटु तव्हां खे सुपुर्द करियां थो ऐं तव्हांजो आहे । पोइ डॉक्टरनि जे दवाउनि बिना ई चङो भलो थी पियो ऐं बीमारी ग़ाइबु थी वेई, जो हाणे हयात् आहे ।

(२) हिक बुजुर्ग औरत सन्त जी शेवा कन्दी हुई । हिक डींहुं सन्त उनते प्रसन्न थियो ऐं चयाईंसि त घुरि जेकी घुरिणो अथेई । उन माईअ वेनती कई त मुंहिंजी पुत्री वांझ आहे, उनखे सन्तान थिए । सन्त

बार बार चयुसि त बियो कुझु घुरि, पर हिन सागियो ई सुरु आलापियो। आख़िर सन्त वरदान डिनो त चवो उनखे औलाद थीन्दो ऐं उनखे निशानी हून्दी। जो माईअ खे औलाद थियो त बार खे निशानी बराबर हुई।

(३) भाई हासानन्द तारीख़ ३१ डिसम्बर १९८५ ई० ते वर्सीअ वक्ति आरतीअ बैदि सन्त जी समाधीअ अगियां डुंडवत करे प्रणाम कयाऊं ऐं उते ई ओढ़ी महिल प्रान डिनाईं।

हासानन्द जो औलादः– हासानन्द जो वडो पुटु श्री जेठानन्द जयपुर रहन्दो आहे ऐं संदसि नन्ढो पुटु श्री नानकराम सतना में रहन्दो आहे। उन्हनि जी सन्त में घणी श्रद्धा आहे।

सन्त जो औलादः– सन्त जो नन्ढो पुटु ठाकुरदास कदुहिं कदुहिं सतना वञी समाधीअ ते मथो टेके ऐं मन्दर में वञी दर्शन करे ईन्दो आहे। उन जा पुट ऐं सन्त जे वडे पुट मूलचन्द जा पुट याने भगत जा पोटा बि समाधीअ ऐं मन्दर ते वेन्दा आहिनि, मथो टेके नमस्कार करण ईन्दा रहन्दा आहिनि।

(१४) सन्त बूंदरमल (बाबा मस्तराम) टहलराम खूहा

जनमुः– सन्त बूंदरमल जो जनमु श्री टहलराम वल्द मोटियोमल नुख खूहा जे घरि शहिर मटियारी तैलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में अटिकल सन् १९१३ ई० में थियो। हिनजो कदु डिघो, बदन में भरियलु ऐं शिकिलि जो सुहिणो हो, पर उस में रटन कन्दे हिनजी शिकिलि कणिक रंगी थी वेई। ही मस्तीअ में मस्त हो। घणो न गाल्हाईन्दो हो। केरु को सुवालु पुछन्दो हो त जवाबु डीन्दो हो याने शान्त सुभाअ वारो हो। हुनजो नन्ढे हून्दे खां ई ईश्वर सांहुं लाड़ो हून्दो हो।

तइलीमः– हीउ अलाजे केतिरो पढ़ियो, पर अरबी सिन्धी लिखी पढ़ी ज़ाणन्दो हो। हिन्दुस्तान में अचण बैदि हिन्दी बि गाल्हाइणु सिख्यो। पर घणो वक्तु झूनागढ़ में गिरनार कोट जे आसपास रहण करे गुजराती बोली गाल्हाइणु सिखी वियो। ही सिन्धी, हिन्दी ऐं गुजराती बोलियूं गाल्हाए ज़ाणन्दो हो। हिनजो माहिरो गुजरातीअ डांहुं घणो हो। तंहिंकरे सिन्धी ऐं हिन्दी गाल्हाईन्दे, उनमें गुजराती लफ्ज़ गाल्हाए वेन्दो हो।

धन्धोः– ही अबाणो धन्धो रङाईअ ऐं छपाईअ जो कन्दो हो।

शादीः– हिन शादी कई ऐं फकति नियाणी ज़ाई हुयसि ऐं चइनि पंजनि सालनि खां पोइ संदसि धर्मपत्नी परलोक पधारी। संदसि नियाणी घर में पिए निपनी। सन्त जो हिकु भाउ रुघूमल नाले हो, जो कुंवारो ई गुज़ारे वियो। पोइ उहा छोकिरी संदसि ब्रादरीअ वारे श्री दूल्हानेमल वल्द चोइथराम निपाई ऐं सम्भाली। वडी थियण ते श्री मूलचन्द वल्द जेठानन्द धान्धा मटियारनि वारे सां परणाए छडी, जा बि हाणे सालु डेढु थीन्दो त सुर्गवास थी वेई।

वैरागु ऐं घरु त्यागः– संदसि घर वारी गुज़ारे वञण बैदि हिनखे सन् १९४० ई० में अची वैरागु लगो, सो घरु त्यागे वञी साधनि जो संगु कयाईं ऐं सन्यासी बणियो। सो सिन्धु छडे सन्यासियुनि सां गडु हिन्दुस्तान में हलियो वियो। तीर्थ आस्तानिनि जो रटनु कन्दो रहन्दो हो ऐं योग पचाईन्दो रहन्दो हो। सिन्धु में कदुहिं कदुहिं ईन्दो हो ऐं चक्करु हणी वापसि हलियो वेन्दो हो। घणो वक्तु हिन्दुस्तान में गुज़ारीन्दो हो। पाकिस्तान थियण बैदि पोइ सिन्धु में कोन वियो। संदसि सौट ऐं ब्रादरीअ वारा सन् १९४८ ई० में लदे अची उज्जैन वेठा। ही पोइ घणो वक्तु सौराष्ट्र में झूनागढ़ जे गिरनार कोट ऐं उनजे आसपास रहन्दो हो।

सन्यास बैदि रहिणी करिणीः– सन्यास धारण खां पोइ दाड़ी मुछूं ऐं मथो कूड़ाए छदीन्दो हो । हेठि लांगोट मथां हिकु चोलो गिचीअ खां पेरनि ताईं पाईन्दो हो ऐं हथ में हिक डिघी लठि खणन्दो हो ।

वृतिः– सन्यास धारण खां पोइ ईश्वर जो नालो जपीन्दो रहन्दो हो, योग पचाईन्दो रहन्दो हो ऐं कीर्तन बि कन्दो रहन्दो हो । भजन ऐं काफियूं, सिन्धीअ, हिन्दीअ ऐं गुजरातीअ में गाईन्दो रहन्दो हो ।

नेमः– हिनजो नेम हो रोज़ सुबूह जो प्रभात में निन्ड मां उथी इश्नान कन्दो हो । पोइ वेही भजन ऐं काफियूं गाईन्दो हो । पोइ भलि कोई बुधण वारो हुजे या न हुजे ।

लोकनि जी श्रद्धाः– गिरनार जे ओसे पासे रहन्दड़ माण्हुनि जे मन में तमाम घणी श्रद्धा हून्दी हुई ऐं पूरो वेसाहु हो जो उन्हनि सन्त जो चमत्कार दिठो हो, जो ही पूरो तपस्वी हो । हिन मंझि मण्यां हुई ऐं उन ई लोकनि खे छिके सन्त जे वेझो आन्दो । ही घणो करे पंहिंजी मस्तीअ में ई मस्त हो । इनकरे लोक सन्त खे सदाईन्दा ई हुआ "बाबा मस्तराम" ।

नियातियुनि वटां भेरोः– ही गिरनार जे आस पास शहिरनि में वञी नियातियुनि वटां भेरो करे दर्शन डेई मोटी ईन्दो हो । जहिड़ोकि बांटवा, सोरठि वन्थली, जेतपुर, राजकोट, परे कोटा ऐं उज्जैन ।

परलोक पधारिजणुः– हाणोकनि पंजनि सतनि सालनि में कंहिं बि नियातीअ वटि न आयो आहे ऐं नकी कंहिं दिठो आहे । गिरनार जे कोट जे पस्गरदाईअ में बि पुछा कई वेई आहे त हिनजो पतो कोन पियो आहे, तंहिं मां महसूस थिए थो त सन्त देह त्यागे वञी वैंकुण्ठ वासी थियो ।

(१५) सन्त नारूमल आसूमल दावड़िया

भगत करे पाताल में, प्रघटि होए आकास ,
रजब तीनो लोक में, छिपे न हरि का दास ।

जनमुः– भगत नारूमल जो जनमु श्री आसूमल वल्द कंवरमल नुख दावड़िया जे घरि गोठ बचल सांद तैलिके टन्डे अलहियार ज़िले हैदराबाद सिन्धु में थियो । जनम जे तारीख़, महिने ऐं साल जी सुद्धि कान पइजी सघी आहे । ही कद बुत जो पूरो पुनो ऐं शिकिलि जो कणिक रंगो हो। हिनजो सुभाउ निमाणो ऐं सादो हून्दो हो । विना कम जे कोन गाल्हाईन्दो हो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां भगितीअ ऐं सत्संग डांहुं लाड़ो हून्दो हो । रहिणी सादी रहन्दा हुआ। ही ख़मीस धोती पाईन्दा हुआ । मथे में सादी टोपी पाए मथां पटको बधी छदीन्दा हुआ।

तइलीमः– हिन स्कूली विद्या कान वरिती । बाकी असुलोका खत्रिका अखर सिखियलु हो ।

धन्धोः– ही अबाणो धन्धो रङाईअ ऐं छपाईअ जो कन्दो हो । छपाईअ में माहिरु हो ।

शादी ऐं औलादः– ही शादी कयलु गृहस्ती हो । खेसि टे पुट हुआः (१) चन्दोमल, (२) जेठूमल, (३) चेलाराम । टेई पुट संदसि परलोक पधारिजण बैदि लदे अची टन्डे अलहियार में वेठा । जेठूमल ऐं चेलाराम जे औलाद मां हींअर केरु बि हयात् कोन आहे । बाकी चन्देमल जा पुट श्री तेजूमल ऐं श्री रेलूमल सन् १९४८ ई० में लदे ब्यावर अची वेठा, जे उते सुर्गवास थी विया ऐं संदसि टियों पुटु श्री मेठाराम लदे अची पालनपुर वेठो । जंहिंजो औलाद हींअर उते रहे थो, जे छोकिरा धार धार धन्धनि ते लगल आहिनि ।

घोड़े सवारीः– हिनखे घोड़े जी सवारी ड्राढी पसन्द हुई । हू जिते बि वेन्दो हो त घोड़े ते चढी वेन्दो हो । जेकदुहिं कंहिं गोठ या शहिर में न वञिणो हून्दो होसि त शाम जो घोड़ो सन्जे शहिर जे पस्गरदाईअ में चक्कर हणी ईन्दो हो ।

भगिती ऐं सत्संगः– हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई भगिती करण ऐं सत्संग ड्रांहुं लाड़ो हो, सो घर में ई एकान्त वारी जाइ ते वेठो स्मरणु कन्दो हो । किथे बि भजुन भाउ ऐं सत्संग थींन्दो हो त उते वेन्दो हो ऐं वञी बुधन्दो हो । रफ्त रफ्त सन्तनि साधनि सां संगु कयाईं ऐं घणो ई वक्तु उन्हनि सां गदु गुज़ारियाईं । संदसि मुंहं में मण्यां हुई, लोकनि जो मंझिसि घणो विश्वास हो । आम तरह माण्हू हिनखे वदी श्रद्धा सां दिसन्दा हुआ ऐं मञीन्दा हुआ । सचु पचु सन्त हो बि अहिड़ो, हू ईश्वरी रंग में रची लाल थी वियो हो । घर वारा बि हुनजो अदब रखन्दा हुआ । ही घर में बि सत्संगु ऐं भजुन भाउ कराईन्दो ई रहन्दो हो । बुधण लाइ चङा ई माण्हू अची शामिल थीन्दा हुआ ।

सुर्गवास ऐं समाधीः– हिनजे सुर्गवास जी तारीख़, महिने ऐं साल जी मइलूमियत कान थी सघी आहे, पर चवनि था त वदी उम्र जो थी, गोठ बचल सांद में ई होलीअ खां ब दींहं पोइ परलोक पधारियो । चवनि था त पाण चई छदियो हुआईं त मूंखे समाधी दिजो, सो ई सन्त जे आज्ञा अनुसार हिनखे समाधी दिनी वेई ।

वर्सी ऐं मेलोः– सन्त जा पुट गोठ बचल सांद में समाधीअ ते हर साल होलीअ खां ब दींहं पोइ वर्सी मल्हाए, मेलो लगाईन्दा हुआ । भजुन भाउ थीन्दो हो ऐं रोटु विरहाइबो हो । सन्त जी समाधी त सिन्धु में रही, हिन्दुस्तान में पालनपुर (गुजरात) में संदसि पोटो श्री मेठाराम मेलो लगाईन्दो हो । उनजे परलोक पधारिजण खां पोइ सन्त जा पड़पोटा होलीअ खां ब दींहं पोइ वर्सी मल्हाईन्दा आहिनि ऐं मेलो लगाराईन्दा आहिनि । आख़िर में प्रसाद विरहाईन्दा आहिनि । हिनजे पड़पोटे भगत भैरेमल जो अहिवालु पढ़ो बाब ६ जे नम्बर ४ ते ।

शाम जे वक्ति लक्ष्मी घर में ईन्दी आहे, उन वक्ति घर बन्दि हून्दो त लक्ष्मी "जय कृष्ण" चई मोटी वेन्दी ।

ॐ

बाबु बियो
सन्त ऐं भगत

(१) सन्त भगत रासींगराम ईसरदास सोमेसर

जनमुः– श्री ईसरदास वसन्दाणी नुख सोमेसर ज़ाति ब्रह्म खत्री शहिर मटारियों तैलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में रहन्दो हो । उनखे तारीख़ २४, महिनो असू सम्बत् १८८२ विक्रमी बराबर सन् १८२५ ई० में हिकु पुटु जनमियो, तंहिंजो नालो रासींगराम रखियो वियो। अजु नन्ढो सुभां वदो । अची जुवान थियो । ही कद जो डिघो ऐं बदन में पूरो पुनो हो । दाढ़ी रखियल हून्दी हुअसि । मथे ते पटिको, बदन ते कमीस ऐं धोती पाईन्दो हो । सदाईं निमाणो थी भजन में महू रहन्दो हो ।

किरतः– हिनजी शादी कराई वई ऐं घर गृहस्ती हो । अबाणो धन्धो कपड़े जी रङाई छपाई कन्दो हो । बियनि कुटम्बयुनि सां गदु कमु कन्दो हो जो सभेई गदु हुआ ।

भगिती ऐं गुरूः– नन्ढे हून्दे खां हिनजो लाड़ो ईश्वर दांहुं हो । जदहिं २५ सालनि जो थियो, तदहिं सजो ध्यान ईश्वर में लगाइण लगो ऐं भगितीअ दांहुं पूरो ऐं पक्को लाड़ो थी वियुसि । गुरूअ जी तलाश कन्दो रहियो । आख़िर तनूअ जी वसी गोठ में भाई परमहंस शिष्य भाई गुलाबदास जो दसु मिल्युसि । ही उन वटि वियो ऐं चयाईं त मूंखे पंहिंजो चेलो बणाइ । जंहिं हिनजी वेनती कबूल कई । पोइ हिनखे गुरू करे खांउसि गुर मंत्र वरिताईं। गुरु गुलाबदासी पंथ जो हो सो हिन बि उहो पंथ अख़्त्यार कयो, जो आख़िर ताईं गुलाबदासी पंथ में रहियो। संदसि पोयां बि पाण खे गुलाबदासी सदाईन्दा आहिनि। हिननि जे नमस्कार ऐं खीकार जा लफ़्ज़ **"जय महाराज"** आहे । हिनखे भगितीअ जी एतिरी लगन लगल हुई जो रोज़ानो प्रभात जो टे मेल पंधु करे मटारयुनि मां तनूअ जी वसीअ गुरूअ वटि दरबार में वेन्दो हो ऐं उतां मोटी अची पंहिंजे रोज़ाने कम कार खे लगन्दो हो ।

कविः– जदहिं परमात्मा जो पूरो-पूरो इश्कु लगुसि, तदहिं उन्हीअ जा गुणाद-वाद गाइण लगो ऐं बे-अख़्त्यार भजन ऐं श्लोक वियो चवन्दो । वरी उन्हनि खे याद करे वेही लिखन्दो हो । हिकु किताब लिखियाईं जंहिं में ब टे सौ भजन ऐं केतिराई श्लोक संदसि ठहियल आहिनि । इहो संदसि हथ अखर लिखियल कलमी किताब संदसि औलाद वटि सांढियल आहे । हिन किताब जो मूं नकुल करे पाण वटि रखियो आहे । ही किताब अञा छपायो कोन वियो आहे ऐं कलिमी नुस्ख़ो आहे । संदसि वाणीअ में घणा लफ़्ज़ हिन्दी ऐं पंजाबी भाषाउनि जा आहिनि । किथे-किथे निजु सिन्धी लफ़्ज़ बि कतबु आन्दा अथसि ।

परलोक पधारजणुः– नवाबशाह में तारीख़ १० कती सम्बत् १९६५ बराबर सन् १९०८ ई० में हिन फ़ानी दुनिया खे अलविदा करे वञी वैंकुण्ठ में वासो कयाईं । संदसि के निशानियूं अञा संदनि पोंयनि वटि सांढे रखियल आहिनि ।

लदणुः– हीअ आकहि मटारयुनि मां लदे सम्बत् १९९१ बराबर सन् १९३४ में नवाबशाह में आई ।

(२) सन्त भगुत खीमूं या खीमनदास दावड़िया

जनमुः– भगुत खीमूं नुख दुावड़िया ब्रह्म खत्रीअ जो जनमु अटिकल साल सन् १६४१ ई० में गोठ दुचर तैलिको मीरपुर बठोरो ज़िले कराची सिन्धु में थियो । पूरी तारीख़ महिने ऐं साल जी ख़बर कान मइलूम थी सघी आहे ऐं नकी संदसि पिता जो नालो मइलूम थियो आहे । पोइ ही दुचरनि मां लदे सिन्धू नदीअ जे ओलह किनारे गोठ खामिड़यूं तैलिको कोटिड़ी ज़िलो पहिरीं कराची पोइ दादूअ में अची रहियो । घर मां संदसि माता खां सवाइ बियो को बि भाती कोन हो । ही शिकिलि जो कणिक रंगो, कद जो पूरो पुनो ऐं बदन में भरियलु हून्दो हो । हिन जी पोशाक हुई हेठि धोती मथे बदन ते अंगरखो, वक्ते कमीस मथां अछो डिघो गले बन्दि कोटु पाईन्दो हो । कपड़ा सभु अछा पाईन्दो हो । मगर मथे ते गेड़ूअ रतो पटिको बुधन्दो हो ऐं गिचीअ में चांदीअ में मढ़ियलु रूद्राक्षु रखिया वांगुरु पाईन्दो हो । हिन शादी कान कई ऐं बाल ब्रह्मचारी थी रहियो । सुभाअ जो तेज़ ऐं बेपरवाहु हो ।

भगिती ऐं गुरूः– हिनजो नन्ढे हून्दे खां वठी भगितीअ दांहुं घणो लाड़ो हो । इनकरे सन्तनि ऐं साधनि जे संग में घणो वक्तु गुज़ारण लगो । गाइण जो सुठो ऐं काबिल हो । आवाज़ बुलन्द ऐं मेठाज वारो हो, बुधंदड़नि खे आनन्द पियो ईन्दो हो । भगुवान जी वाणीअ जा भजुन ख़ास करे निरगुण भगितीअ ते ख़ूब गाईन्दो हो । हिनजो नेम हो, संझा महिल पंज इश्नानी करे गाइण विहन्दो हो । हिन बाओ गुसाईं धर्मगिर वेठल शहिर टन्डे महमद ख़ान ज़िले हैदराबाद वारे खे पंहिंजो गुरू कयो । जंहिं खेसि घणो ई ज्ञानु दिनो । हू भ्रमनि खां परे हो । बावनि ऐं बाम्भणनि खे कीन मञीन्दो हो । बाकी ज्ञानवाननि सां हिनजी लगुन्दी हुई । पोइ खणी कहिड़ी बि ज़ाति जो हुजे । ऊच नीच खे कोन दिसन्दो हो । छूत छाति कोन कन्दो हो । सुबूह शाम पंहिंजे भजुन में मस्त रहन्दो हो । खेसि कबीर जी वाणी तमाम घणी याद हुई । शब्द भजुन श्लोक एतिरा त बरज़बान याद हुअसि जो महिना लागीतो गाईन्दो ऐं सारियूं रातियूं गाईन्दो हो, पर सागियो भजुन या श्लोकु न चवन्दा हुआ, नित नवां । इनजो अर्थु करे बुधाईन्दो हो । दृष्टांत बि नसीहत वारा घणेई बुधाईन्दो हो । मां नन्ढो होसि । हिन जा भजुन कोन समुझन्दो होसि । बाकी दृष्टांत आखाणियुनि वारा हुआ, जे बुधन्दो होसि जे वणन्दा हुआ । बाकी मुंहिंजो भाउ जयसिंघमल साणुसि गदु गाईन्दो हो ।

कविः– ही कुदरती कलिबी कवि हो । संदसि केतिरा ई शब्द भजुन ऐं श्लोक ठाहियल आहिनि जे वटिसि हिक किताब में लिखिया हुआईं, जो वटिसि हो । मूं बि कुझ भजुन ऐं श्लोक ब्रादरम जयसिंघमल खां भगुत खीमे जा ठाहियल लिखाया, जे मूं वटि हिन वक्ति बि लिखियल आहिनि । मतलब त गाइण सां गदु कविता जी बि दाति दातार वटां मिलियल हुअसि ।

विद्याः– भगुत स्कूल में का बि विद्या कान वरिती हुई, बाकी वदुनि खां खत्रिका अ़खर सिखियो । खत्रिका अखर वाणिकनि अ़खरनि सां मुशाहिबत रखन्दड़ हुआ । उन्हनि में थोरो ई फ़र्कु हो । पर वाणिकनि अखरनि खे मात्राऊं कोन आहिनि पर खत्रिकनि अखरनि खे हिन्दीअ जहिड़ियूं मात्राऊं हुयूं । हिन जा हथ लिखियल किताब खत्रिकी लिपीअ में ई हुआ । पर अफ़्सोस इहा लिपी हींअर अण लभु आहे । भगुत जंत्र ऐं मंत्र बि ख़ूब ज़ाणन्दो हो । मूं जेकी वटिसि संदसि हथ जा किताब दिठा, से हेठियनि विषयनि ते लिखियल हुआ । हिक किताब में रुगो भजुन ऐं श्लोक संदसि ठाहियल लिखियल हुआ । बिए किताब में कबीर जी वाणी ऐं बियनि सन्तनि जा भजुन श्लोक लिखियल हुआ । टिएं किताब में रुगो नसीहत भरिया दृष्टांत दर्ज थियल हुआ । चोथें किताब में रुगो जंत्र मंत्र ऐं तावीज़ रखियाऊं लिखियल हुयूं । भगुत जदहिं बुढो थियो त मुंहिंजे

पिता चेतनदास भगुत खे चयो त भगुत हाणे बुढो थियो आहीं । हाणे हिननि किताबनि खे छा कन्दें? हलु त किताब कुंब तलाव में ब़ोड़े अचूं । भगुत बि मञियो । फ़कति किताब जंहिं में दृष्टांत ऐं संदसि कुछ भजन हुआ सो ब्रादरम कारेमल घुरी खांउसि वरितो । जो असांजे घर में केतिरा साल पियो हो । जदुहिं आंऊं वडो थियुसि ऐं खत्रिकनि अखरिनि सिखण जो शौंकु थियो । गोल्हा कयमि पर किताब कोन लधो । बुधायाऊं त उहो बि कुंब में विझी आयासूं । पोइ भगुत पूज पिता साहिब सां गदुजी किताबनि जी हड़ बधी उनमें पत्थर बधी, कुंब तलाअ में उहा हड़ खणी उछिलाई, जंहिं वञी तर वरितो ऐं उते ई उहे किताब सड़ी ख़तमु थी विया। वदा खत्री लिपि ज़ाणंदड़ त सुर्गवास थी विया बाकी उन्हनि किताबनि में उम्मेद हुई से बि किताब ख़तमु थिया, अहिड़ीअ तरह उहा लिपी अलूपु थी वेई ।

सैलानी सन्तः— ही भगुत किथे बि टिकाणो ठाहे कोन वेठो हो । सदाईं पियो घुमन्दो हो । कदुहिं किथे त कदुहिं किथे, सज़ी सिन्धु जी कुन्ड कुढ़िछ में रटनु कन्दो हो । किथे रात किथे ब़ रातियूं । मथे कोन टिकन्दो हो । तंहिं खां सवाइ सज़ो सफ़रु पैदल कन्दो हो । हिक हड़ जंहिं में ब़ टे कपड़नि जा वगा ऐं ब़ टे किताब संदसि हथ जा लिखियल ऐं पूज़ा जो सामान वग़ेरह होसि, पुठीअ पाए खणन्दो हो ऐं हिक लठि बि हथ में हून्दी हुअसि । जदुहिं उम्र जो वदो थियो त हिकु गदहु वरिताईं, उनते चढ़ी घुमन्दो हो । जदुहिं वधीक पीरीं आई ऐं ८०-८५ वर्हि ज़मार थी त पोइ गदहु बि छदियाईं, पोइ हिक शहिर खां बिए शहिर जेका बि सवारी मिले, भाड़े ते करे गश्त कन्दो हो । किथे हिक किथे ब़ रातियूं टिकन्दो हो । पर ख़ास बिनि टिनि शहिरनि में पछाड़ीअ जे वक्त में दुह बारहं दींहं बल्कि १५ दींहं बि तरिसन्दो हो । जहिड़ोकि टन्डे फज़ुल में असां वटि, मातिलीअ में ओढरमल हेमनदास आचार्य वटि, मुलनि कातियारनि में रूपचन्द मामतोरा वटि । वदी उम्र में प्रवृत्ति सागी, तंदुरुस्ती ठीकु, घुमण, भज़न गाइणु वग़ेरह चालू हुआ । भेटा को दीन्दो होसि त वठन्दो हो, पर घुरन्दो कंहिं खां बि कोन हो ।

वसीयत ऐं परलोक पधारिजणुः— अटिकल सन् १९३४ ई० धारे मुलनि कातियारनि मां उठ ते टन्डे फज़ुल अची रहियो हो त वाट ते मइलूमु थियुसि त टन्डे फज़ुल पहुची कोन सघंदुसि, सो उठ वारे जत खे चयाईं त उठ वराइ वापसि हलूं सो वापसि मुलनि कातियारनि में आयो ऐं चयाईं त ब्रह्म खत्री पइंचो, मां हाणे शरीरु त्यागियां थो, मुंहिंजा ब़ाम्भण न खाराइजो, नकी क्रियाकर्म ब्राह्मणनि खां कराइजो । बाकी नियाणियूं खाराइजो । उन वक्ति ईश्वर जो नाम वठन्दे देहि त्यागियाईं ऐं वञी वैंकुण्ठ वासी थियो । खत्रियुनि बि संदसि शरीर जो अग्नी संस्कार करे, नियाणियूं खाराए संदसि आज्ञा जो पालनु कयो ।

(३) सन्त भगुत सांवलदास मूलचन्द दावड़िया

जनमुः— गोठ चिटोड़ी तैलिके शहिदादपुर ज़िले नवाबशाह सिन्धु में हिकु ब्रह्म खत्री मूलचन्द नुख दावड़िया रहन्दो हो । जंहिंखे मालिक जी महिर सां छह पुट हुआः (१) सांवलदास (२) छाङोमल (३) लीलाराम (४) बसरमल (५) ख़ानूमल (६) ईसरदास । सांवलदास सभिनी भाउरनि में वदो हो । हिनजे ज़भण जी तारीख़, महिने, साल जी ख़बर कान आहे । अटिकल सन् १८५० ऐं १८६० जे दरमियान ज़ाओ हो ।

शादीः— हिन शादी कई हुई, घर गृहस्थी हो । हिनखे हिकु पुटु नाले पारूमल हो ऐं पोटो मिर्चूमल हो जो गुज़ारे वियो । हिनजी पीढ़ी उते ई ख़तमु थी वेई । भाउरनि सां गदु धन्धो रोज़गार वग़ेरह कन्दो हो ।

वृतिः– हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई ईश्वर दांहुं लाड़ो हो । जेको बि गोठ या ओसे पासे में सत्संग या भजन थीन्दो हो त हीउ उते वञी शामिल थीन्दो हो । हीउ नेम साँ रोजु सत्संग कन्दो हो ऐं चालू ई रहन्दो हो । जेको को संदसि आस्तान ते ईन्दो हो, सो ढोढो खाई, जल पी वेन्दो हो । हीउ पंथ जो गुलाबदासी हो । हिनजो सुभाउ ऐं सत्संग अहिड़ो कशशि कन्दड़ु हो, जो हिकु दफ़ो आयो सो छिकिजी ईन्दो हो । अहिड़ी तरह लोकनि जी हिन भगत में घणी श्रद्धा हून्दी हुई, सभु जातियूं हिनखे मञीन्दियूं हुयूं । केतिरा ई हिन सन्त जा शिष्य थिया । हिन जा केतिरा ई भजन श्लोक ठाहियल आहिनि ।

परलोक पधारिजणुः– हीउ भगत अटिकल ७० खनु वर्हिनि जी उम्र में परलोक पधारियो ।

(४) सन्त आसूराम मास्तर दांदूमल हरगुण

जनमुः– जदहिं पूरब जनम जा संस्कार सुठा हून्दा आहिनि त अहिड़ियुनि आत्माउनि खे संसार में अचण लाइ ईश्वर चङे घराणे या घर में ई जनमु कराईन्दो आहे । तहिड़ीअ तरह आसूराम जो जनमु श्री दांदूमल वल्द नाजकमल नुख हरगुण ज़ाति ब्रह्म खत्रीअ जे घरि ऐं शहिर हाला पुराणा ज़िले हैदराबाद सिन्धु में सन् १८५४ ई० बराबर १९१० विक्रमी में थियो ।

तइलीमः– हिन सन् १८७१ में सिन्धी वरिनेक्यूलर फाईनल एगज़मिनेशन पास करे टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज हैदराबाद में टिनि सालनि जो कोर्स पढ़ी पास कयो ऐं मास्तरीअ जो सर्टिफिकेट हासुलु कयो । अरबी ऐं फारसी बि ज़ाणन्दो हो । तंहिं सां गदु हिकमत ऐं शाइरीअ जो बि शौंकु हुअसि ।

सरकारी नौकिरीः– हिनखे असिस्टन्ट स्कूल-मास्तर मुकररु करे, गोठ फकनि तैलिके जोही ज़िले लाड़काणे सिन्धु में रखियो वियो । हितां बदिली थियण बैदि हैडमास्तर कयो वियो । बियनि शहिरनि जहिड़ोकि खन्डू, सैदाबाद, ख़ानोट में नौकिरी करे आख़िर पंहिंजे गोठ हालनि में बदिली थी आयो । जिते सन् १९०९ ई० में रिटायर्ड कयो वियो ।

भगितीः– फकनि जे गोठ में हिकु मुरशिदु कयाईं ऐं मास्तरीअ सां गदु भगवान जी भगिती करण लगो । हिनजो मतो सूफी हो, इनकरे झोक शरीफ़ तैलिके बुलिड़ीअ ज़िले हैदराबाद में ज़ियारत करण लाइ वक्त बि वक्त वेन्दो रहन्दो हो । साहिबनि जी सत्रहीं मल्हाईन्दो हो । संदनि शहिर में पिणि संदसि मुरशिद ऐं झोक शरीफ जो घणो ज़िक्रु कयो अथसि ।

शाइरः– हिनख़े शाइरी करण जो बि घणो शौंकु हो, हिन कईं भजन, काफ़ियूं, बैत ऐं श्लोक कविता में ठाहिया ऐं किताब बि लिखियो अथसि, जंहिंजो नालो लिखियो अथसि **दीवान आसू** । ही किताब १८६७ ई० में लिखी पूरो कयो । अखर बि तमाम सुठा हुअसि । हिन जो नकुलु मूं वटि सांढियलु आहे ।

हिकमतः– ही हिकमत बि सिखियो । ग़रीबनि ऐं दुखियुनि खे दवा बिना फी ई दीन्दो हो । किनि खे नुस्ख़ो दीन्दो हो । हथ में शफ़ा हून्दी हुयसि । दवा सां गदु दुआ बि कन्दो हो ।

शिष्यः– सन्त आसूराम जा चेला बि हुआ । जिनि मां हिकु सन्त टेऊंराम मशहूर आहे । असुलु वेटल खन्डू तैलिके हाला जो आहे पर हिन टन्डे आदम अची डिब वसाई । हिनजो बि पहिरीं मतो सूफी हो,

पर पोइ मतो छदे मुसलमानको तरीको छदे भगिती करण जो हिन्दू तरीको अख़त्यार कयो, सिन्धु मां लदण के संदनि आस्थान जयपुर, अजमेर, कोटा ऐं उल्हास नगर में आहिनि । पर सन्त आसूराम पंहिंजो को बि स्था कोन ठाहियो ।

जोती जोति समाइजणुः– ही तारीख़ १५ फेबरवरी सन् १९४१ बराबर १८ मांघु सम्वत् १९९७ छंछ जो सुबूह जो सवाए सतें बजे फानी दुनिया खे त्यागे परलोक पधारिया । संदसि पंजनि ततनि जे सरीर खे चिख्या चाढ़े संखनि ते समाधी हालनि में दिनाऊं जा अञा बि उते काइमु आहे । चवनि था त चिख्या दियण बैदि हाठियूं चूंडियाऊं त हिक हदीअ मां साबितु वारु निकितो । इहो वारु, संदसि कम आणण वारियूं शयूं, दीवान आसू ऐं बिया किताब संदसि औलाद वटि सांढे रखियल आहिनि ।

औलादः– सन्त आसूराम खे हिकु पुटु वेन्सीमल नाले ऐं चार पोटा आहिनि । हिकु गुलाबराय जो नागपुर में सुर्गवास थियो, बियो कोदणमल जो हालनि में सुर्गवास थियो । टियों भगत उधवदास ऐं चोथों कुन्दोमल, जे बुई कोटा (राजस्थान) में रहन्दा आहिनि ।

गादीः– सन्त आसूराम जे जोती जोति समाइजण बैदि संदसि औलाद संदसि गादी काइमु कई ऐं हींअर गादीअ ते संदसि पोटो भगत उधवदास आहे, जो साहिबनि जी सत्रहीं मल्हाईन्दो आहे । भजन भाउ कन्दो आहे । सन्त जूं मथे ज़िक्रु कियलं शयूं हिन वटि ई सांढे रखियल आहिनि । ही बि भगितीअ सां गदु हिकमत कन्दो हो ऐं होश्यार हकीम हो पर हाणे वृद्धा अवस्था सबबु हिकमत कीन कन्दो आहे । हिन वक्ति कोटा (राजस्थान) में रहन्दो आहे । भगत उधवदास जो अहिवालु पढ़ो बाब ७ जे नम्बर २ ते । भगत उधवदास १९६९ में लदे हिन्दुस्तान में आयो, पोइ समाधीअ जी सम्भाल लेखराज कोदणमल कन्दो हो हाणे ताज़ो श्री हरीराम गुलाबराय, आसूराम जी १९९२ में अमानत ऐं समाधीअ ज़ो सभु सामान पाण सां खणी नागपुर में आया, हिनजो वीचार आहे त मन्दर ठहिराए, उते इहो सभु सामान रखियो वञे ।

रिहाइशः– हिन वक्ति बुज़ुर्ग झोक शरीफ (सिन्धु) में पंहिंजी रिहाइश मुरशिद शहीद सूफी फकीर शाह इनायत शाह जी दरगाह कई अथनि ऐं बग़िदाद शरीफ (इराक) में पंहिंजे मुरशिद बादशाह पीर दसतगीर ग़ोस ला आज़म जी दरगाह में वेन्दा रहन्दा आहिनि ।

(५) सन्त भगत लौंगराम जेठोमल वारदे

जनमुः– भगत लौंगराम जो जनमु भाई जेठेमल वल्द पोहूमल नुख वारदे जे घर में शहिर हालनि नवनि ज़िले हैदराबाद सिन्धु में तारीख़ २१ मार्च सन् १८५६ ई० में थियो । पोइ लदे वञी सांघड़ि वेठा, वरी लदे अची हैदराबाद सिन्धु में रहिया ।

भगितीः– भगवान जो भजन ऐं नेम सां सत्संग कन्दा हुआ । संदसि केतिराई भजन ऐं श्लोक ठहियल आहिनि जे गाईन्दा रहन्दा हुआ । बियनि सन्तनि जी बाणी पिणि चवन्दा हुआ । के भाईबन्द संदसि शिष्य बि थिया । जहिड़ोकि मोतीराम मुखी सहिजराम । हिननि जो औलाद हींअर बड़ोदे ऐं उज्जैन में रहे थो ।

अदभुत कमः– भगत जो भाइटियो गोविन्दराम हेमनदास आगरे वारे लिखियो त २७ जेठ जे हैदराबाद में गर्मी तमाम घणी हुई ऐं मूंखां गिलास पाणीअ जो घुरियाऊं । दिठमि त घुघी खाली ऐं नल वन्दि आहे । सो

फ़र्मायाऊं त नल खे चओ त भगुत लौंगराम खे प्यास लगी आहे। पाणी दे। मूं वि आज्ञा जो पालन करे नल खे सागियो लफ़्ज़ चयमि। नल खोलियुमि त वहण लगो।

परलोक पधारिजणुः– तारीख़ १५ जनवरी सन् १९३६ ई० ८० वर्हियनि जी उम्र में शाम जो चयाऊं त भजुन भाउ शुरू कयो, जो गोबिन्दराम ३ कलाक गायो ऐं रात जो ११ बजे भगुत परलोक पधारियो।

भजुन छपाइणुः– गोबिन्दराम संदसि पोटे ऐं खेताराम रहन्दड़ मारवाड़ हाणे बड़ोदे, बिन्हीं भगुत खे चयो त भजुन ऐं श्लोक छपारायूं त चयाऊं त न छपारायो। गोबिन्दराम जो अहिवालु बाब ३ जे नम्बर ६ ते पढ़ो।

(६) सन्त भगुत पुरुसूराम

जनमुः– भगुत पुरुसूराम जो जनमु अटिकल सन् १८७० ई० धारे गोठ ख़ानोठ तैलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में थियो। कद जो बिन्दिरो शिकिलि जो सांवरो बदन जो पूरो पुनो हो। कपड़ा पटिको कमीस ऐं धोती, खादी हथ जी उणियल पाईन्दो हो। हिनखे चार पुट हुआ।

भगितीः– हिन जो नन्ढे हून्दे खां ई भगितीअ दांहुं लाड़ो हून्दो हो। जिते भजुन भाउ थीन्दो हो उते वञी बुधन्दो हो ऐं सिखण जी कोशिश कन्दो हो। तां जो वदे हून्दे तमाम सुठा भजुन बणायाईं ऐं गाईन्दो वि ख़ूब हो, पूरन भगुत हो। रमतो राम थी पियो घुमन्दो हो। सांघड़ि में भगुत लौंगराम वटि वेन्दो हो ऐं रिहाणि कन्दो हो। पाण में चङो प्रेम होनि। इनकरे सांघड़ि सिघो सिघो वेन्दो हो।

शेवाः– मंझिसि शेवा भाउ झझो हो। हिक दींहुं सांघड़ि में नेम अनुसार प्रभात जो लोटो पाणीअ जो भरे झंग में वियो त दाढी देरि लगायाईं। तंहिंते भगुत लौंगराम उन अवेर जो सबबु पुछियुसि। वरन्दी दिनाईं त ग़रीब झंगल में किरी पियो ऐं पिए कीकड़ायाईं, सो उनजी शेवा में लगी वियुसि ऐं ज़ख़मनि ते मलम पटी पिए कई। भगुत पुछियुसि त झंग में मलम पटी किथां आई। बुधायाईं त पटिके मां पटी फाड़ियमि, मलम फेणी (थुक) बणायमि। किथे त पेशाब मलम ऐं लोशन जो कमु दीन्दो आहे। अहिड़ीअ तरह बीमार खे फीणी मखे पटी बधी पाणीअ जा छंडा मुंहं ते हणी दिलदारी देई हलियो आयुसि। अहिड़ा हुआ दयालू भगुत। सत्संग बि कन्दा हुआ ऐं भजुन बि गाईन्दा हुआ। संदसि केतिराई भजुन ठाहियल आहिनि। हू घणो करे रटनु पैदल कन्दा हुआ। हीउ सन्त वदी उम्र जो थी पोइ परलोक पधारियो।

(७) सन्त भगुत तेजनदास (तेजाराम) ख़टणमल हरगुण

जनमुः– भगुत तेजनदास जो जनमु भाई खटणमल वल्द कौड़ोमल नुख हरगुण जे घरि शहिर कोटिड़ीअ ज़िलो कराची (हाणे दादू) अटिकल सन् १८७० ई० में थियो। कद जो पूरो पुनो, बदन जो हल्को ऐं शिकिलि जो सांवरो हो। बदन ते कमीस, कोटु ऐं धोती सफेद पाईन्दा हुआ, बाकी मथे ते गेड़ू रतो पटिको बुधन्दा हुआ। संदसि सुभाउ बिलकुल दरवेशी हो। हू सादो, निमाणो, निहठो, सांतीको ऐं हलीमत वारो हून्दो हो। का वि वदाई कान हून्दी हुयनि।

गुरू ऐं सत्संगः– नन्ढे हून्दे खां ई संदनि भगितीअ दांहुं लाड़ो हून्दो हो। गुरूअ जी तलाश कन्दे हुसिड़ीअ तैलिके ऐं ज़िले हैदराबाद सिन्धु में आयो। जिते भाई चोइथराम बालचन्द वलेरा खे पंहिंजो गुरू करे

मञियाऊं ऐं हिनखां गुरु शब्द वठी उनजो अभ्यास करण लगो । उते रही गुरूअ जी शेवा बि कन्दो रहियो । गुरूअ में सच्ची सिक, श्रद्धा ऐं सिदिकु हून्दो हो । भगितीअ जो अहिड़ो शौंकु हून्दो होसि जो उन शौंक ते केतिरनि ई शास्त्रनि जो अभ्यास करे, उन्हनि मां मुख़्तसरु ततु कढी पंहिंजा ३-४ किताब त्यारु कया । हो अरबी सिन्धी पढ़ियलु हो । पंहिंजा केतिरा ई मार्गी शब्द ऐं श्लोक बणाए किताब बि लिखियाई ।

रिहाइशी आस्थानः– हिनजो कुटम्बु कोटिड़ीअ मां लदे मुलां कातियार ज़िले हैदराबाद आयो, उतां बि लदे छदे अची मातिली शहिर में रहिया । वरी उतां बि सन् १९२६ ई० में लदे अची टन्डे अलहियार वेठा । मुलां कातियारनि में हिक कुटिया ठाही हुआऊं, जिते भजन भाउ ऐं सत्संग कन्दा हुआ ।

नेमः– हिनजो रोज़ानो नेम संझा महिल यक्तारो खणी अखियूं बन्दि करे वेठो भजन गाईन्दो हो, पोइ को वेही बुधे या न बुधे । हू पंहिंजे ई रंग में रङिजी वेन्दो हो । हू पंहिंजा ठाहियल शब्द ऐं बियनि सन्तनि ऐं आश्किनि जा भजन पिणि गाईन्दो हो । पंहिंजे भगितीअ जे रंग में मौज में अची जेकी ईन्दो होसि, सो गाईन्दो, पोइ सुरु कहिड़ो बि हुजे ऐं उनजे गाइण जो वक्तु हुजे या न हुजे, कंहिंखे वणे या न वणे, मगर हू पंहिंजीअ धुनि में गाईन्दो हो ।

गृहस्त ऐं किरतः– हिन शादी कई ऐं गृहस्ती हो । हिनखे हिकु जुमोंमल नाले पुटु हो, उनखे टे पुट आहिनिः परमानन्द,, शिवनदास ऐं वाशदेव । भगत जा टेई पोटा ऐं संदनि औलाद भुज ऐं सांगानेर में रहनि था । छपाईअ जा कारख़ाना ऐं दुकान अथनि । भगत साहिब अवाणी किरत छपाईअ ऐं रङाईअ जो कमु कन्दो हो पर हिनखे अची वैराग लगो, सो जुवानीअ में ई रङावत जो कमु क़रणु छदे दिनाईं । भगितीअ में मगन थी वियो, तंहिंसां गदु हिनखे हिकमत करण जो बि शौंकु हून्दो हो, जो पंहिंजे गुरूअ मुखी चोइथराम खां सिखियो, जो काबिल हकीम पिणि हो । भगत झंग में निकिरी वेन्दो हो, उतां के बूटियूं पटे ईन्दो हो ऐं उन्हनि मां दवाऊं ठाहीन्दो हो । दवाऊं माण्हुनि खे दीन्दो हो, पैसो पाई कोन वठन्दो हो ।

कविः– भगत जी केतिरी वाणी चयल आहे । ब चार ग्रन्थ लिखियल हुअसिं । संदसि लिखियल किताब, संदनि जीवन चरित्र समेत पाकिस्तान मां लदे हिन्दुस्तान में अचण वक्त गादीअ मां संदनि हिक गुणि, जंहिं में किताब बि हुआ, केरु लाहे वियो । बाकी हिकु किताब भजननि ऐं सत्संग जो वचियो, जो संदसि पुट जुमेंमल वटि रखियल हो । हाणे संदसि पोटनि वटि हून्दो ।

परलोक पधारिजणुः– पाकिस्तान थियण सबबु टन्डे अलहियार मां लदे हिन्दुस्तान जे गुजरात परगिणे जे डीसा शहिर में अची रहिया । हिते बि सागी कारि, संझा महिल यक्तारो खणी, अखियूं पूरे भजन गाईन्दो रहन्दो हो । वक्तु पूरो करे पोइ उथन्दो हो । कदहिं कदहिं समाधीअ में ८-८ कलाक वेठो हून्दो हो । ही तारीख़ २३ आखाड़ सम्बत् २०१० विक्रमी बराबर तारीख़ ४ आगस्ट सन् १९५३ ई० में डीसा जे शहिर में हिन फानी दुनिया मां लादाणो करे परलोक पधारियो ।

लेखक जो सम्बन्धुः– मां सन् १९२६ ई० खां १९३१ ई० ताईं टन्डे अलहियार में अंग्रेज़ी पढ़न्दो होसि त मुंहिंजो बि हिन भगत सां संगु थी वियो ऐं रोज़ानो संझा महिल संदसि भजन बुधण ईन्दो होसि ऐं उन

बैदि वक्त ते ज्ञान जूं गाल्हियूं बि बुधाईन्दो हो। जे झंग मां बूटियूं पटे ईन्दो हो, उहे देखारे उन्हनि जा गुण बुधाईन्दो हो, जो मूंखे बि हिकमत जो शौंकु हो। मूं ते चङो प्यारु होसि ऐं चवन्दो हो त रोज़ानो ईन्दो करि।

औलादः– मथे लिखी चुको आहियां त खेसि हिकु पुटु ऐं टे पोटा आहिनि। पोइ डीसा मां लदे जयपुर विया। पोइ संदसि वडो पोटो परमानन्द ऐं संदसि औलाद भुज (कच्छ) में रहे थो ऐं ब पोटा शिवनदास ऐं वाशदेव ऐं संदनि औलाद सांगानेर (राजस्थान) में रहन था। वदे खे कपड़े जो दुकान ऐं विचें ऐं नन्ढे खे छपाईअ जा कारख़ाना आहिनि।

(८) सन्त भगुत ढालूमल टोपणदास सोरठिया

जनमुः– भगुत ढालूमल जो जनमु सिन्धु जे ज़िले हैदराबाद तैलिके हाला जे शहिर मटियारनि में भाई टोपणदास वल्द मूलचन्द नुख सोरठिया जे घर में सन् अटिकल १८८२ ई० में जाओ। बिनि टिनि सालनि बैदि संदसि माइट लदे भरि वारे गोठ खेबिरन में वञी रहिया। किनि सालनि बैदि मोटी मटियारनि में आया।

किरत ऐं वैरागुः– हिन शादी कई ऐं गृहस्ती हो। अबाणो धन्धो रङावत जो कन्दो हो। औलाद थियुसि। जदहिं चालीहनि वर्हिनि जो थियो त अची तीबरु वैराग लगो। छाकाणि त सन्तनि महात्माउनि सां संगु ऐं मेलापु त हुनजो थीन्दो ई रहन्दो हो। जिते सत्संग थीन्दो हो, उते वेन्दो हो। हिक दींहुं ओचितो ई घरु छदे फकीरनि जे संग में हलियो वियो। माइट गोल्हे गोल्हे हिक साल खां पोइ शहिर सेवहण ज़िले दादूअ मां वठी आयसि ऐं समुझायाऊंसि त भगिती गृहस्त में बि थीन्दी आहे, न घरु त्यागुण में। पोइ हू पंहिंजे सहुरे सन्त आसूराम मास्तर वटि हालन में वियो ऐं वञी खेसि गुरू कयाईं ऐं बोधु वरिताईं। मास्तर जो मतो सूफी हो त भगुत ढालूराम बि सूफी तरीको अख़्त्यारु कयो, जो अगेई सेवहण में कलन्दर शहबाज़ जे कुबे में मुसलमान फकीरनि सां संगु त करे आयो हो। हिक साल बैदि हिनखे अचानक वरी छिरकु पियो ऐं हलियो वियो सूफियुनि जे आस्तान मीरांपुर झोक में, जो गोनी तैलिके लाड़ में आहे। उते ब साल रही सूफियुनि मां कुझु पिरायाईं।

वटः– मीरांपुर में हिकु कामिल दरवेश मिली वियुसि। उनखे हिन लाइ हमदर्दी पैदा थी ऐं चयाऊं त हिन पांधीअड़ूअ खे राह बताए मंज़िल ते पहुचाइजे। पोइ उन दरवेश ढालूराम जी पुठी ठपरे वट दिनी। भगुत खे उन वक्त ई भगितीअ जो रंगु चढ़ी वियो ऐं रची लाल थी वियो ऐं वञी हकीकत खे हासुलु कयाईं। उते बिनि सालनि रहण बैदि मोटी गोठ आयो। घर जो कमु ऐं ईश्वरी भगिती बई कन्दो हो।

औलादः– हिनखे ४ पुट गागूमल, चिमनदास, थाऊंमल ऐं जेठानन्द आहिनि। ही ऐं हिननि जो औलाद आगरे में रहन्दा आहिनि।

परलोक पधारिजणुः– आख़िरी वक्त सभिनी अज़ीज़नि खे घुराए, मोकिलाए, आगरे में तारीख़ ४ आखाड़ सम्वत् अटिकल २००७ विक्रमी जो परलोक पधारिया। हिनजो अग्नि संस्कार त कयो वियो पर समाधी टाहिण लाइ मनइ कयाईं।

(६) सन्त भगुत मनण (लालू लठि वारो) नारूमल दगिया

जनमुः– ज़िले हैदराबाद सिन्धु जे तैलिके हाला में नन्ढड़ो गोठ नाले बंगलो आहे। उते श्री नारूमल नुख दगिया रहन्दो हो, जो मटारिके छत्रे जो परियो मुड़सु हो। उनखे अटिकल साल सन् १८६० ई० में भगुत मनण ज़ाओ। संदसि पिता जे सुर्गवास थियण ते भगुत मनण खे छत्रे जे परिए मुड़स जी पगु पहिराई वेई। हू बंगले गोठ मां लदे शहिदादपुर ज़िले नवाबशाह में अची रहियो। हिनजो कदु पूरो पुनो, शिकिलि जो कणिक रंगो ऐं दिसण जो सादो हो। सफेद पटिको, ख़मीस ऐं धोती पाईन्दो हो। हिनजे कंध ऐं टंग में नुक्स हो।

भगितीः– हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई भगितीअ दांहुं लाड़ो हो। जिते बि भजन भाउ या सत्संग थीन्दो हो, उते वेन्दो हो। कुझु हासुलु थियण ते भजन ऐं श्लोक ठाहिण लगो। जदहिं वैरागु उत्पन्न थीन्दो होसि त झंगल में हलियो वेन्दो हो। शहिदादपुर शहिर जे ब़ाहिरिएं पासे हिक डिबु ते झूने किरड़ जे वण हेठां वेही तपस्या कयाई। अहिड़ीअ तरह पाण पचाइण जो अभ्यास कन्दो रहन्दो हो। ग़ाईन्दो बि हो। आवाज़ में रस हून्दो होसि।

कविः– कविता ठाहिण जी खेसि कुदरती दाति मिलयल हुई। केतिरा ई भजन ऐं श्लोक ठाहियाई ऐं हिकु वडो किताब लिखियाई। गुरमुखी अखर ज़ाणन्दो हो, इनकरे उहो किताब गुरमुखी अखरनि में लिखियाई। संदसि सुर्गवास थियण बैदि उहो किताब लालचन्द परूमल मामतोरा ब़ांटवा वारे वटि हो, उन खां वटी आयुसि। के शब्द ऐं श्लोक इत्हासी किताब में लिखियम। मूं वटां बि उहो किताब केरु खणो वियो। उन किताब में ४७५ शब्द ऐं कविताऊं हयूं।

लालू लठि वारोः– कंहिं बीमारीअ सबबु संदसि कंध में गोड़हो थी पियो। इनकरे संदसि कंधु हमेशह निमियलु रहन्दो हो। टंग में बि का तकलीफ हुअसि, इनकरे मंडकाईन्दो हो। हलण में टेक वास्ते लठि हथ में खणन्दो हो। संदसि जनम जो नालो मनण हो, पर भगितीअ जे राह में घिड़ण बइदि लालू नालो रखायो। आम तरह माण्हू हुनखे लालू लठि वारो चवन्दा हुआ। पाण भजननि जे सभोगु में लालू लठि वारो या लालू या लालणु चवन्दो हो।

सिन्धु मां लदण बैदि हिन्दुस्तान में:– पाकिस्तान पैदा थियण बैदि सन् १६४८ ई० में सिन्धु छदे हिन्दुस्तान में आयो ऐं मुल्क जो गमनु कन्दो रहन्दो हो। कदहिं किथि त कदहिं किथि। आख़िर पीरीअ ऐं बदन में नुक्सु हुअण सबबु पंधु करणु कोन पुजन्दो होसि। इनकरे ब़ांटवा ज़िले झूनागढ़ (गुजरात) में अची रहियो। भाई पुरुसूमल सामनदास सराया गोठ दड़े तैलिके मीरपुर बठोरे वारे भगुत जे मानीअ वग़ेरह जी शेवा कई। पुरुसूमल जे मांगरोल लदे वञण बैदि श्री चांडणमल तुलसीदास कपूर ऐं श्री लालचन्द परूमल मामतोरा भगुत मनणमल जी सार सम्भाल ऐं शेवा कई।

परलोक पधारिजणुः– अटिकल ६५ वर्हिनि जी ज़मार में अटिकल सन् १६५५ ई० में शहिर ब़ांटवा में हिन फानी दुनियां खे त्यागे वञी वैकुण्ठ में वासो कयाई। संदसि आकहि मां हिन वक्त केरु बि कोन थो दिसजे।

(१०) सन्त लाला नाराइण गिर उत्तूमल धान्धा

जनमु:– सिन्धु में सिन्धू नदीअ जे साजे किनारे शहिर मांझंद तैलिके कोटिड़ी ज़िले दादू सिन्धु में हिकु व्रह्म खत्री नाले उत्तूमल वल्द कर्मचन्द नुख धान्धा रहन्दो हो । उनखे ब पुट ज़ावा: हिकु भेरोमल उर्फु भेरवदास, बियो लालोमल । लालोमल सन् १६३० ई० में । बुई पुट अजु नन्ढा, सुभां वदा । दरियाह जे पाइण सबबु मांझंद जे भरिसां ग़ोठ मांझूअ में अची वेठा । ही कद बुत में पूरो पुनो, शिकिलि जो कणिक रंगो, मथे ते वार ऐं दाढ़ी मुछूं रखाईन्दो हो । धोती ऐं कमीस पाईन्दो हो, गेड़ू रंग जो दुशालो पाईन्दो हो ।

किरत ऐं वैराग:– ही अबाणो धन्धो रङावत जो कन्दा हुआ । कुदरत अलाए बिन्हीं भाउरनि खे अची वैराग लगो ऐं बुई सन्यासी बणिया । भगत भेरवदास जो अहिवालु बाब १ जे नम्बर १३ ते दिसो । भगत लाले शादी कान कई ऐं ब्रह्मचारी थी रहियो । हिन पहिरियाईं गुरू बाओ लालदीन कयो, जो परिए मुड़स सम्भूमल मंघूमल जो पुटु हो । बाए लालदीन जो गुरू बाओ सद्धरावल हो, जो लाले भगत जे काके भगत ऐं गवैये केवलराम जो गुरू हो । पोइ घर त्यागे सन्यासी थियो ऐं लाला नाराइण गिर नालो रखियो वियो ।

भगिती ऐं तपस्या:– नन्ढे हून्दे खां ई हिनजो लाड़ो ईश्वरी उपासना ऐं सत्संग दांहुं हो । सन्यास वठण बैदि पहाड़नि ते वञी तपस्याऊं कयाईं ऐं तीर्थ आस्ताननि ते वञण ऐं तपस्याउनि जो सिलसिलो जारी रखियाईं । जदहिं साधनाऊं पूरियूं कयाईं त पोइ सजे हिन्दुस्तान में सैलानी साधू थी घुमन्दो रहियो ।

कवि:– कविता जी दाति दातार खां मिलियल हुअसि । संदसि केतिरा ई भजन ऐं श्लोक ठाहियल अथसि । संदसि ब छपियल चौपड़ियूं मूं वटि आहिनि ।

आस्तान:– संदसि भाउ भगत भेरवदास जीअं घरु त्यागे वियो त कंहिंखे वि सुद्ध कान हुई त किथे आहे? रटनु कन्दे हुनखे मइलूम थियो त संदसि भाउ जी समाधी शहिर सतना (मध्य प्रदेश) में आहे । हिन उते वञी तहिकीकात कई ऐं ख़ातिरी कयाईं त बराबर संदसि भाउ जी समाधी उते आहे । पोइ हीउ बि उन शहिर में ई आस्तानो ठाहे उते वेही रहियो । उम्र जे पछाड़ीअ वारनि कुछु सालनि में हिन सन्त जे नेणनि जी नूत ग़ाइबु थी वेई हुई । हिनजी शेवा उते हिकु रहन्दड़ डॉक्टर माटा दिल व जान सां कन्दो हो । भगत भेरवदास जो अहिवालु बाब १ जे नम्बर १३ ते लिखियलु आहे ।

परलोक पधारिजणु:– सन्त लाला नाराइण गिर हयातीअ जो सफरु पूरो करे सतना शहिर में ई परलोक वासी थियो ऐं उते जे श्रद्धालुनि संदसि अंत्येष्ठी संस्कार कयो ।

(११) सन्त भगत पिर्तोमल भगत नाजोमल खूहा

जनमु:– सिन्धु जे ज़िले नवाबशाह जे तैलिके शहिदादपुर में हिकु नन्ढो ग़ोठु कुंब दाड़ू आहे । हिकु ब्रह्म खत्री नुख खूहा जो श्री टऊंरमल उते रहन्दो हो । उनखे चार पुट ज़ावा । हिनजो हिकु पुटु भगत ईसरदास हिकु वदो सन्त थी गुज़िरयो आहे, उनजो ज़िक्र बाब १ सन्त ऐं महात्मा जे नम्बर ५ ते आहे । भगत ईसरदास खे ब पुट हुआ: हिकु भगत विशनदास, बियो भगत रूपचन्द । गादीअ ते भगत विशनदास वेठो, जंहिंखे हिकु पुटु नाजोमल हो, जंहिं संदसि गादी सम्भाली । नाजेमल खे भगत पिर्तोमल ज़ाओ, जंहिं पिता जे सुर्गवास थियण

बेदि गादी सम्भली । इनकरे इएं खणी चइजे त भगुत पिर्तेमल जो जनमु कुंब दाड़ूअ में ई थियो, पर जनम तारीख़ जी सुद्धि कान्हे । पोइ ही लदे अची शहिदादपुर वेठो ।

भगिती:– भगुताणो घरु हो, इनकरे हिनजो लाड़ो बि ईश्वर दांहुं थी वियो ऐं उनजे बंदगीअ में वक़्त गुज़ारीन्दो हो । गादीअ ते विहण खां पोइ ही पक्को सन्त थी पियो ऐं नेम सां सत्संग वग़ेरह कन्दो रहन्दो हो । माण्हू बि खेसि बुधण ईन्दा हुआ ।

सिन्धु छदुणु:– पाकिस्तान थियण बैदि ही भगुत सन् १६४८ ई० में सिन्धु मां लदे हिन्द में आयो ऐं अची दिल्लीअ रहियो, जिते हिन पंहिंजो आस्तानो ठाहियो ऐं नेम टेम सां भगिती ऐं सत्संग कन्दो ई रहन्दो हो । ही घणो करे बाहिरि रटन ते कोन निकिरन्दो हो ।

परलोक पधारिजणु:– ही तारीख़ १७ सेप्टम्बर सन् १६७५ ई० में दिल्लीअ जे शहिर में हिन संसार मां लादाणो करे परलोक पधारियो । हिनजी समाधी दिल्लीअ में ई ठाही वेई ।

औलाद:– भगुत ईसरदास जे पुट विशनदास जी पीढ़ी पोटे ताईं ख़तमु थी । बाकी भगुत ईसरदास जे नन्ढे पुट रूपचन्द खे ३ पुट हुआः लेखराजमल, खटूमल ऐं आसूमल; जिनजो औलाद सिन्धु में टन्डे अलहियार में रहन्दो हो, हिंति जेतपुर (गुजरात) में रहे थो । सभेई रूपाणी आकहि सदाईन्दा आहिनि, छपाईअ जा कारख़ाना अथनि । सन्त ईसरदास जो अहिवालु बाब १ जे नम्बर ५ ते पढ़ो ।

(१२) सन्त भगुत महाकाल गिरी छत्ताराम वीरूमल भूत

जनमु:– श्री छत्ताराम जो जनमु श्री वीरूमल वल्द फुलूमल नुख भूत जे घर शहिदादपुर ज़िले नवाबशाह सिन्धु में सन् १६४२ ई० में थियो । ही कद जो डिघो, बदन जो पूरो पुनो, हदु वेकिरो, शिकिलि जो सांवरो आहे । दाढ़ी मुछूं रखियल अथसि । ही कमीस ऐं गोदि गेड़ू रंग जी पाईन्दो आहे । ही अरबी सिन्धी ५ दर्जा ऐं हिन्दी ६ दर्जा पढ़ियलु आहे । सिन्धी ऐं हिन्दी बोलियूं गाल्हाए ज़ाणन्दो आहे । ही असुलु शहिदादपुर जा वेठल हुआ । सन् १६४८ ई० में उतां लदे अजमेर अची रहिया, पोइ उनजो भाउ बड़ोदे हलियो वियो ऐं हीउ जयपुर अची रहियो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई परमात्मा जे पासे दांहुं लाड़ो हो । भगुवान जो भजन कन्दो ई रहन्दो हो । हिन सन् १६७६ ई० में नांगो बाओ तीर्थ गिरी वेठल गोठ तुच्छा वेझो आदीपुर ऐं भुज (कच्छ - गुजरात) खे वञी गुरू कयो ऐं सन्यास अख़त्यारु कयाईं । पोइ हिनजो नालो छत्ताराम मां बदिलाए महाकाल गिरी रखियो वियो । हीउ देवीअ जे मन्दर में रहन्दो आहे ऐं उनजी रोज़ानो आरती ऐं पूजा वग़ेरह कन्दो आहे । सिन्धी ब्रह्म खत्रियुनि हिन खां ज़मीन वठी उते ट्रस्ट ठाहियो आहे, जंहिंजो प्रेज़ीडन्ट श्री लौंगमल बूलचन्द हरगुण आहे । हिननि उहो डहिराए पटु करे नएं सिर हिंगलाज माता जो मन्दर ठहिरायो आहे ऐं महाकाल गिरीअ खे हिक कोठी दिनी अथनि, जंहिं में रहन्दो आहे ऐं सुबूह शाम आरती वग़ेरह कन्दो आहे । देवीअ जा चेट ऐं असूअ वारा नवरात्रा बि पोखीन्दो आहे ऐं देवीअ जो उपासक आहे, उनखे ई पूज़ीन्दो आहे । हिन मन्दर में ३० सालनि खां शेवा कन्दो रहन्दो आहे ।

(१३) भगुत वधणमल हेमनदास दावड़िया

भगुत वधणमल जो जनमु श्री हेमनदास वल्द राइचन्द्र नुख दावड़िया जे घरि सन् अटिकल १८५० ई० में गोठ फ़तहख़ान मरी तैलिके टन्डे अलहियार ज़िले हैदराबाद सिन्धु में थियो । ही कद जो डिघो, बदन जो पूरो पुनो ऐं शिकिलि जो सुहिणो हून्दो हो । जेतोणीकि ही पीउ खे हिकु पुटु हो, संदसि आकहि वदी हुई, काका, सौट वगेरह हुआ जे सभु गदु हुआ । हिनखे ज़रई ज़मीन हून्दी हुई ऐं पोख कराईन्दा हुआ । ही ज़मीनदार हुआ ऐं आबादी हारियुनि खां कराईन्दा हुआ। फसुलु लुणण ऐं गाहण बैदि बटई करे हिस्सो हारियुनि खे देई बाकी अन्नु पाण खणन्दा हुआ। वउणनि मां फुटियूं निकिरन्दियूं हुयूं से पाण ज़मीन्दार खणन्दा हुआ ऐं विकिणी हिस्सो हारियुनि खे दीन्दा हुआ। हीअ मशहूरु आकहि सदिबी हुई। हिननि खे रोपाही खत्री चवन्दा हुआ, जो देहि रोपाह भरिसां हून्दी हुई ।

हिनखे नन्ढे खां ई भगितीअ दांहुं घणो लाड़ो हो । तंहिंकरे उन नन्ढिड़े गोठ में हिकु शिवालो ठहिरायाईं ऐं गचु वक्तु शिवाले में वेही भगुवान जो भजुन कन्दो हो । हिनजो नालो मशहूर हो । तंहिंकरे हिक दफ़े हिननि ते धाड़ेलनि काह कई । जंहिं सां हिन ऐं संदसि आकहि वारनि ख़ूब मुकाबिलो कयो । उन मुकाबिले में हिननि जो हिकु माण्हू ख़ून बि थी वियो । मिलकियत कुछ धाड़ेल खणी विया । बाकी हिननि बचाए वरिती । उन बैदि पोइ ही फ़तह ख़ान मरीअ मां लदे बिनि मैलनि जे मुफ़ासिले ते गोठ झन्डे मरीअ में अची वेठा । पर ही भगुत घणो वक्तु उन शिवाले में गुज़ारीन्दो हो। आख़िर अटिकल सन् १९२४ में हिन फानी दुनिया खे तर्कु करे वञी सुर्गवास थियो । हिनखे टे पुट हुआ । हिननि जा पड़पोटा हिन वक्ति के अजमेर में के कोटा में रहनि था । हिनजे सुर्गवास थियण ते बियनि कुटम्बयुनि जे लदे वञण बैदि शिवाले जी सार सम्भाल कंहिं कान लधी ऐं फिटी वियो। लेखक जी सरकारी नौकिरी (आबदार) उते बि हुई ऐं हिन उहो फिटलु ऐं ज़बून हालत में शिवालो दिठो।

(१४) भगुत मनूमल मंघनमल दुलेरा

भगुत मनूमल जो जनमु श्री मंघनमल वल्द आइलदास नुख दुलेरा जे घरि गोठ चम्बड़ तैलिके टन्डे अलहियार में अटिकल सन् १८६७ में थियो। कद जो डिघो, बदन जो पूरो पुनो, शिकिलि जो कणिक रंगो हो। ही मथे ते भरियल टोपी कदहिं मथांउसि शाल रंङियल जो पटिको, कमीस ऐं धोती पाईन्दो हो । हू स्कूल में कोन पढ़ियो मगर वाणिका अखर जाणन्दो हो । अबाणो धन्धो रंङावत जो कन्दो हो । ही कम तांडणी याने वहिराड़ियुनि में हथ जी उणियल खादी जंहिं में रजायूं, सवड़ियूं, विहाणा, बजिका वगेरह कन्दो हो । पसगरदाईअ मां पंधु ई पंधु वञी माल खणी ईन्दो हो, रङे छापे धणियुनि खे देई रंङाई वठी ईन्दो हो । कंहिं वक्ति टन्डे अलहियार मां कोरो माल खणी ईन्दो हो, उहो रंङे छापे देई ईन्दो हो । हिनजी नियाणी वराण सां लेखक याने मोरूमल शादी कई । ही सुभाअ जो हलीम, निहठो ऐं ईश्वर में अटल श्रद्धा रखन्दडु हो । सच्चारु हो ऐं को बि माण्हू का बि गाल्हि चवन्दो होसि त उनते एतबार करे सचु समुझन्दो हो । हिनजो नेम हो त संझा वक्ति पंज इश्नानी करे दर ते लोटी ढारे देवीअ जो गुगुर जो वास करे भजुन वेही कन्दो हो । शब्द बि चङा याद हुअसि ऐं सुरु वि सुठो होसि । बिना साज़ ई वेही गाईन्दो हो । पाड़े वारा अची उन रागु जो रस वठन्दा हुआ । भजुन भाउ करे पोइ रोटी खाईन्दो हो । ही सच्चो विश्वासी ऐं भगुवान जो भगुत हो । महमान-नवाज़

बि ख़ूब हो, घर में को महमान ईन्दो होसि त ख़ूब ख़ुशि थीन्दो हो ऐं उनजी शेवा कन्दो हो । हिनखे हि‌ पुटु पारूमल नाले हो । ही सन् १९२६ में चम्बड़नि मां लदे अची टन्डे अलहियार में रहियो, जिते सन् १९.. ई० में परलोक पधारियो । हिनजा पोटा हींअर पालनपुर में रहनि था । चोइथराम, जो सरकारी ट्रांसपोर्ट ... में नौकिरीअ ते हो, हाणे रिटायर थियो आहे । ब़ियो झामनदास, टियों लालचन्द, जिनि खे हाणे अलगि ... धन्धा आहिनि ।

हिनजे पोटे झामनदास जो अहिवालु पढ़ो बाब २५ जे नम्बर ४ ते ।

(१५) भगुत लालूराम (लालचन्द) भगुत पुरुसूमल खूहा

सिद्धनि जो आस्थान ठोड़हा लुतिड़यनि वारा ग़ोठ वेझो हाला ऐं खन्डू शहिरनि जे पासे में हो, उन... यारहें गादी-नशीन भगुत पुरुसूमल हो, जंहिंखे ब़ पुट ज़ावाः हिकु भगुत गोधूमल, जो ब़ारहें गादी-नशीन थियो ऐं ब़ियो भगुत लालूराम (लालचन्द) । लालचन्द जो जनमु ग़ोठ सैद अजनि शाह तैलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में सन् १८६० ई० जे आस पास थियो । थोरे वक्त बैदि संदसि मुरबी वडो भाउ ऐं गादी-नशीन भगुत गोधूराम लदे अची हालनि नवनि में रहियो ऐं भगुत लालूराम लदे वञी शहिर शहिदादपुर ज़िले नवाबशाह में वेठो । ही कदावरु, बदन जो भरियलु, शिकिलि जो सुहिणो हो । हू कमीस ऐं धोती पाईन्दो हो, मथे ते गाढ़ो शाल जो पटिको ब़धन्दो हो । हू बदनी ताकत में पंहिंजो मटु पाण हो । तमाम सघारो नौजुवान हो । जुवानीअ में मेंहिं जो खीरु अठ सेर पी वेन्दो हो । पिञरी देढ मण वारी कई दफ़ा हिक हथ में ब़ांहं मथे करे खणी वेन्दा हुआ । भंग पीअण जा बि शौंकीन हुआ । जुवानीअ में हिकु पाउ भंग पीअन्दा हुआ ऐं मस्त रहन्दा हुआ । संदसि अखियूं हमेशह लाल रहन्दियूं हुयूं । जहिड़ो नालो होनि लाल त ताकत में बि हून्दा हुआ लाल ऐं अखियुनि में बि हून्दा हुआ लाल, वरी ग़ाइण ऐं अर्थ करण में बि हून्दा हुआ लाल । जदुहिं तम्बूरो खणी ग़ाईन्दा हुआ त ब़ुधण वारा झूमण लगुन्दा हुआ । सिन्धु में छपाईअ जो कमु बि कन्दा हुआ ।

सन् १९४८ में सिन्धु मां लदे अची जयपुर शहिर में रहिया । उते कुछ वक्त मेंहियूं ख़रीद करे रखियूं वेयूं ऐं उन्हनि जो खीरु विकिणन्दा हुआ । पर पोइ इहो बि धन्धो छदे दिनाऊं । हिन में एतिरी मणिया हुई, जेतिरी भगुत पुरुसूराम में हुई । हिनजो धाग़ो फीणो ऐं झाड़ं माण्हुनि ते असरु कन्दियूं हुयूं ऐं माण्हुनि खे शफ़ायाबी मिलण ते बि उन्हनि जो सिदिकु वधियो । पोइ इहो ई कमु कन्दा हुआ ऐं वदी उम्र हुअण सबबु ब़ियो को ख़ास धन्धो या कमु कोन कन्दा हुआ । खेसि हिकु पुटु नाले भगुत लेखूराम आहे । उहो बि पहिरीं ब़ियो कमु कन्दो हो ऐं रोज़ी कमाईन्दो हो पर पोइ छपाईअ जे कम खे लग़ी वियो । अहिड़ीअ तरह हिननि जो गुज़रु पियो थीन्दो हो । अहिड़ो को छिडो पाडो नियाती हून्दो हो, जेको भगुत लालूराम खे न सुञाणन्दो हो या संदसि नाले खां ग़ैर वाकुफु हून्दो । बल्कि भाईबन्द बि खेसि मञीन्दा हुआ ऐं उहे बि वटिसि ईन्दा हुआ । जेतोणीक गादीअ ते संदसि वदो भाउ भगुत गोधूराम हो पर ही बि सिद्धीअ जा मालिक हुआ । चवनि था त हिक दफे जदुहिं गादीअ ते भगुत गोधूराम साहिब जनि वेठा हुआ, सिन्ध जे टन्डे आदम शहिर जी मशहूर आकहि मंघनाणीअ वारनि जी हिक जुवान छोकिरी हुई, तंहिंखे वासो ईन्दो हो । सिद्धनि जे मेले वक्त उनखे साधनि जे आस्ताने ते वठी आया त नियाणीअ खे वासे खां छोटिकारो मिले । जंहिं वक्ति छोकिरी झूलण लग़ी त उनजो ताब दिसी माण्हू हदी विया ऐं कंहिंजी बि हिम्मत न थी, जो उन सां ग़ाल्हाए ब़ोल्हाए सघे । आख़रि में

भगुत लालूराम पंहिंजे भाउ गोधूराम जी आज्ञा पाए, इहो कमु पंहिंजे ज़िम्मे खंयो ऐं छोकिरीअ खे हमेशह लाइ वासे खां छदुाए आजो कयो । पंहिंजे रीतियुनि रस्मुनि ऐं रवाजनि जा वि ख़ूब जाणूं हुआ ऐं पइंचात जे मेड़नि ऐं सम्मेलन में बि बहिरो वठन्दा हुआ ऐं उते गाल्हाईन्दा ऐं सुवाल जवाब बि कन्दा हुआ । नियाती भाउर सभु हिनजो अदबु रखन्दा हुआ । हिन्द में सिद्धनि जो आस्थान ब्यावर में स्थापन कयो वियो आहे ऐं भगुत साहिब मेलनि में वेन्दो हो । अहिड़ो लाल २७ फेबरवरी सन् १९७५ ई० में शहिर जयपुर में पंहिंजी जीवन लीला समेटे दारलिफना खे छदे दारलिबका में वञी दाख़िल थिया ।

हिनजो फ़र्ज़मन्द अर्ज़मन्द भगुत लेखूराम बि संदसि नक्श कदमनि ते अमल करे रहियो आहे ऐं सिद्धनि जे आस्तान में पूनम जी छमाही ऐं बारहंमाही मेलनि में वञी शरीक थीन्दो आहे ऐं हर महिने जे पूनम जे मेले ते कदुहिं कदुहिं वेन्दो रहन्दो आहे ।

हिनजे वदुनि सिद्ध सवाई साहिब जनि जो अहिवालु पढ़ो बाब १ जे नम्बर १ ते ।

(१६) भगुतियाणी कुन्दी बाई गेहीमल वलेरा

कुन्दी बाईअ जो जनमु गोठ खेबिर तैलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में लालचन्द वल्द कलूमल छंछिरिया जे घर में तारीख़ ५ बडो सम्बत् अटिकल १९७० में थियो । हिनजी शादी शहिर हूसिड़ी तैलिके ऐं ज़िले हैदराबाद जे गेहीमल वल्द धर्मदास बालाणी नुंख वलेरा सां थी । हिनखे औलाद कोन हो । तंहिंकरे गेहीमल पंहिंजे नन्ढे भाउ सीतलदास जो टियों नम्बर पुटु टोपणदास गोदि में वरितो । संदसि पति गेहीमल जुवानीअ में गुज़ारे वियो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां मन भगिंतीअ में मगन हो । रोज़ानो शास्त्रनि जो पाठ ऐं अभ्यास कन्दी हुई ऐं घर में सत्संग बि शुरू कयो । ओड़े पाड़े जूं ज़ालूं इनजो लाभ वठन्दियूं हुयूं । सन् १९४८ ई० में सिन्धु छदे अजमेर रही, उते हिक कमरे में गुरू ग्रंथ साहिब रखी दरबार बणाई, रोज़ानो ग्रंथ जो पाठ कन्दी हुई, जिते ओड़े पाड़े जूं ज़ालूं ईन्दियूं हुयूं । हिनजूं के चेलियूं बि थियूं । हिनजो आस्थान अजमेर में हिन्दू मुस्लिम मोची मोहल्ले में मकान नं. २१४/७ में आहे । हीअ गुरमुखी अखर जाणन्दी हुई, लिखी पढ़ी सघन्दी हुई । अटिकल ७० सालनि जी जमार में तारीख़ ६ वेसाख सम्बत् २०४१ विक्रमी बराबर ८ मई १९८४ ई० में परलोक पधारी । उनजे सुर्गवास बैदि संदसि पुट टोपणदास जी घर वारी देवी बाई याने कुन्दी भगुतियाणीअ जी नुंह रोज़ानो सत्संग कन्दी आहे । हिनजो बि भगवान जी भगितीअ दांहुं लाड़ो आहे । संदसि दरबार में पंहिंजी माता कुन्दी भगुतियाणीअ जी संगमरमर जी मूर्ती ठहिराए स्थापित कई आहे । संदसि पुटु ऐं नुंहुं हर साल भगुतियाणीअ जी वर्सी तारीख़ ४-५-६ वेसाख ३ दींहं मल्हाईन्दा आहिनि । हर रोज़ सुबूह शाम जो भजन भाउ थीन्दो आहे । तारींख़ ६ भोग पवन्दो आहे ऐं भन्डारो चालू कयो वेन्दो आहे । संदसि पुटु टोपणदास आक्टोबर १९९७ ई० में परलोक पधारियो ।

❀ भगवान जंहिं ते कृपा करे थो, उनजो मन शुद्ध थिए थो ।
❀ शाम खां पोइ ज़ालुनि खे घर खां बाहिरि न भिटकणु घुरिजे ।

बाबु टियों

भगुत ऐं भगुवान जो कीर्तन कन्दड़

(१) भगुत टिल्लोमल

वदुनि खां मइलूमु थियो त पंहिंजे समाज में भगुत नाले टिल्लोमल थी गुज़िरयो आहे जंहिंजे पिता जे नाले, नुख ऐं शहिर जो पतो कोन्हे। हिकु सैलानी भगुत हो, जो घुमन्दो रहन्दो हो। इहा बि ख़बर पेई आहे त ही भगुिती कन्दड़ भगुत हो ऐं पंहिंजे ई रंग में रतलु हो। कंहिं खां बि घुरन्दो कुझु बि कीन हो। केरु बि खणी भेटा अगियां रखन्द़ो होसि त उहा ख़र्च पखे लाइ खणन्दो हो। कमीस धोती पाईन्दो हो ऐं मथे ते गेड़ूअ रतो पटिको बुधन्दो हो। हिक डिघी लठि हथ में हून्दी हुयसि ऐं हिक गोुठ मां बिुए गोुठ में पंधु हलियो वेन्दो हो। किथे रात किथे बु रातियूं रही हलियो वेन्दो हो। किथे ऐं कदुहिं ही सरीरी चोलो छदि़याई, सो पतो कोन्हे।

(२) भगुत किश्नोमल ग्वालदास मामतोरा

भगुत किश्नेमल जो जनमु श्री ग्वालदास नुख मामतोरा जे घर शहिर मुलां कातियार तैलिके गोनी ज़िले हैदराबाद सिन्धु में अटिकल सन् १६५७ ई० में थियो। जनम जी तारीख़ वग़ेरह जी ख़बर कान पेई आहे, पर साल अटिकल तोरि लिखियो वियो आहे। हीउ कद जो डिघो, बदन जो पूरो पुनो, शिकिलि जो कणिक रंगो हो। ही धोती कमीस गले बन्दि कोटु ऐं मथे ते पटिको पाईन्दो हो। हिनजो सुभाउ सांतीको ऐं भगिताणो हो ऐं कंहिंसां बि कड़ो न गाल्हाईन्दो हो। ही हिन्दू सिन्धी वाणिका अखर ज़ाणन्दो हो। दुकान जा काग़ज़ उन्हनि ई अखरनि में लिखन्दो हो। हिनजो सत्संग दांहुं लाड़ो हो ऐं तीर्थ आस्थान जी यात्रा कन्दो हो। हिनजो नेम हो संझा महिल पंज इश्नानी करे एकान्त में वेही, कुझ न कुझ ईश्वर जो स्मरण कन्दो हो। ही पहिरीं अबाणो धन्धो रङाई छपाईअ जो पंहिंजे शहिर मुलनि कातियारनि में कन्दो हो। पर पोंयनि सालनि में शहिर बदीन में कपड़े जो दुकान कढियाई। उन दुकान में श्री झामनदास वल्द बसरियोमल नुख गोरातेला वेठल गोुठ राजो निज़ामाणीअ खे भाईवार कयाईं, जो दुकान सुठो हलन्दो हो।

हिनजी शादी कयल हुई मगर औलाद कोन हुयसि। हिनजो हिकु भाउ गयामलदास नाले हो पर हिनजो बि को पोंयर कोन्हे। हिक सौट नाले खटणमल वल्द लालचन्द हो। उनखे हिकु पुटु ख़ानचन्द हो जो मुलनि कातियारनि मां लदे अची मातिली शहिर में वेठो। सिन्धु मां सन् १६४८ ई० में लदे अची जयपुर वेठो, जंहिंखे बु पुटः हिकु श्री कोदुमल, बियो श्री केवलराम आहिनि, जिनि खे कपड़े जा दुकान आहिनि। भगुत किश्नोमल हयातीअ जे पछाड़ीअ वारनि सालनि में हर साल तीर्थ यात्रा ते वेन्दो हो। सो ई सन् १६३२ ई० में हरिद्वार जे तीर्थ आस्तान ते सुर्गवास थी वियो। जंहिंजी ज़ाण पंडनि संदसि भाइटिये श्री ख़ानचन्द खे सिन्धु में दिनी। पोइ भगुत किश्नेमल जो क्रियाकर्म श्री ख़ानचन्द ऐं उनजी औलाद ई करायो। अहिड़ीअ तरह भगुत जी जीवन लीला हिन संसार में समाप्त थी ऐं वञी वैकुण्ठ वसायाईं।

(३) भगुत सोमजीमल फतनमल सोमेसर

भगुत सोमजीमल जो जनमु फतनमल वल्द कल्याणमल नुख सोमेसर जे घर शहिर मटियारी तलिके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में तारीख़ १५ जनवरी सन् १८६० ई० में थियो । हिनजो कदु डिघो, बदन भगि्यलु ऐं शिकिलि जो कणिक रंगो हो । ही धोती कमीस ऐं कोटु पाईन्दो हो । मथे ते पटिको बुधन्दो हो । ही सिन्धी पढ़ियलु हो ऐं हिन्दी ऐं थोड़ी गुजराती बोलियूं ज़ाणन्दो हो । ही शादी कयलु गृहस्थी हो । ही अबाणो धन्धो रंङावत ऐं छपाईअ जो कन्दो हो । हिनखे कविता जो शौकु हो ऐं भगितीअ ढ़ांहुं बि लाड़ो होसि । ही भजन ऐं श्लोक ठाहीन्दो ई रहन्दो हो । कुल १०८ शब्द ऐं श्लोक ठाहियाईं । ही गाईन्दो बि हो । पंहिंजा ठाहियल भजन ऐं मार्गी शब्द गाईन्दो हो । उन्हनि जो अर्थु बि करे बुधाईन्दो हो । ही शंकर भगवान जो उपासक हो ।

ही सिन्धु में घोड़नि जे बीमारियुनि जो बि इलाजु कन्दो हो ऐं माण्हुनि खे दुस बि दीन्दो हो ।

उम्र जे पछाड़ीअ वारनि सालनि में संदसि अखियुनि जी रोशनाई ग़ाइबु थी वेई हुई, तंहिंकरे दिसण ऐं कम कारि खां वेही वियो । खेसि पंज पुट आहिनि, जे संदसि शेवा कन्दा हुआ ।

ही सिन्धु मां लदे सन् १९४८ ई० में अची राजकोट (गुजरात) में वेठा । जिते भगुत सोमजीमल तारीख़ १६ डिसम्बर १९८३ ई० में परलोक पधारियो । संदसि पुटनि भगत खे राजकोट में समाधी दिनी ।

भगत जा पुट के राजकोट रहनि, त के जयपुर रहन्दा आहिनि ।

(४) भगत हरूमल ईसरदास छाटपार

जनमुः– भगत हरूमल जो जनमु ईसरदास वल्द टोपणदास नुख छाटपार जे घर गोठ मीरवाह गोरचाणी ज़िलो थरपारकर सिन्धु में सम्बत् १९५६ विक्रमी बराबर सन् १८९९ ई० में थियो । ही पंजनि भाउरनि में सभ खां नन्ढो हो । ही नन्ढे हून्दे खां ई वेश्नू हो । ही सुभाअ जो निहठो, रिलिणो मिलिणो, खिलमुख, हमदर्द, दानी, सत्संगी ऐं आत्म चिन्तन वारो हो । ही सफ़ेद धोती, कमीस, गले बन्दि डिघो कोटु पाईन्दो हो । मथे ते गांधी टोपी टाट वारी नासी रंग जी पाईन्दो हो । कद जो डिघो, बदन जो पूरो पुनो, शिकिलि जो सुहिणो हो ।

तइलीमः– ही स्कूल में अरबी सिन्धी चार दर्जा पढ़ियो ऐं हिन्दू सिन्धी वाणिका अखर बि सिखियो । ही भजन काफ़ियूं कलाम, श्लोक ऐं बैत वग़ेरह अरबी सिन्धीअ में लिखन्दो हो ऐं धन्धे जा काग़ज़ पट, हिन्दू वाणिका अखर बि लिखन्दो हो ।

शादीः– हिन २५ वर्हियनि जी उम्र में शादी कई ऐं गृहस्थी बणियो । हिनखे पंज पुट ऐं टे धीअरु आहिनि ऐं सभिनी खे वहीअ में अचण ते शादी कराए छदियाईं ऐं वदो अयाली थी पियो । हिननि जे पुटनि जा नाला: जयकिशनदास, बलराम या बलदेव, तेजभानदास, मनोहरालाल, वाशदेव आहिनि ।

रहण जो आस्थानः– हिनजा वदा असुलु मीरवाह गोरचाणी गोठ में रहन्दा हुआ । उतां लदे अची बदीन शहिर ज़िले हैदराबाद में अची वेठा । पाकिस्तान ठहण बैदि सन् १९४७ ई० में सिन्धु छदे अची ब्यावर (राजस्थान) में वेठा, जिते पंहिंजी जाइ वरिताऊं । उन बैदि उनमें पंहिंजो असुलोको धन्धो बीड़ियुनि जो कारख़ानो खोलियाऊं । समे बैदि शहिर जे बाहिरिएं पासे हिकु शाही प्लॉट ख़रीद करे पंजनि भाउरनि जा पंज बंगिला उन्हीअ प्लॉट अन्दरि ठहिरायाऊं । उनमें हिक मोटर गैरेज वग़ेरह बि ठहिरायाऊं । हिकु नन्ढो मन्दर

बि उन एराज़ीअ अन्दर बणायाऊं। बाकी खुलिए मैदान में बाग़ीचो रखायाऊं। हाणे ही सदिबा ई पं बंगिलनि वारा आहिनि। हिन खां अगु विछूं छाप बीड़ियुनि वारा सदिबा हुआ।

धन्धोः– हिननि ब्यावर में बि सिन्धु वारो धन्धो बीड़ियुनि त्यार करण जो कारख़ानो लगाए होलसेल जो धन्धो शुरू कयो। संदसि देसी बीड़ियुनि लाइ रजिस्टर्ड मार्को विछूं छाप आहे। संदनि त्यार करायल बीड़ियूं हिन्दुस्तान जे केतिरनि ई शहिरनि में वेन्दियूं आहिनि। सुठे तमाक, पननि ऐं बुधाईअ जे करे आम बीड़ियुनि छिकीन्दड़नि खे दाढियूं पसंद पवन्दियूं आहिनि। इनकरे डिमांड घणी आहे। कुटम्ब जे वदे हुअण सबब संदसि वदे फ़रज़न्द श्री जयकिशनदास आज जे पींघनि ठाहिण जो कमु शुरू करायो ऐं संदसि नन्ढे पुट श्री वासदेव रेडियनि जो दुकान खोलियो। कुछ वक्त खां पोइ उन्हनि ही बई कम बन्दि करे वरी संदनि पुटनि पंहिंजे बंगिलनि जे परियां पसारदाईअ में पत्थरनि जे पीसाईअ जो कारख़ानो चालू कयो ऐं पॉउडर त्यार करे विकिणन्दा हुआ। रफ़्त रफ़्त कम खे वधाए वरी ऊन साफ करण जो कारख़ानो कढियाऊं। भगत साहिब जा ब वदा पुट भगत जयकिशनदास ऐं श्री बलदेव सुर्गवास थी विया ऐं संदनि औलाद आहे। इहे ऐं बिया टेई नन्ढा पुट गदिजी बीड़ियुनि, पत्थरनि जे पीसाईअ जो, ऊन साफ करण जो कमु हलाईन्दा आहिनि।

भगितीः– भगत हरूमल जो नन्ढे हून्दे खां ई भगितीअ दांहुं लाड़ों हो। इनकरे चोदहनि वर्हिनि जी जमार में याने सन् १९१३ ई० में बाए नाराइणदास पोकरणी ब्राह्मण खे, जो शहिर टन्डे जान महमद ज़िले थरपारकर में रहन्दो हो ऐं उते हिकु वदो टिकाणो हो, उनखे पंहिंजो गुरू करे बोध वरिताईं। तंहिंखां सवाइ राग गाइण ऐं सिखण जो बि घणो शौंकु होसि। इनकरे गायनि विद्या संदसि भाउ हीरानन्द ऐं बियो वसितारामखां पिराई। संदसि गलो मिठो ऐं शीरीन हो ऐं आवाज़ बुलन्द होसि। जदहिं ही गाईन्दो हो त संसार भुलिजी वेन्दो हो। मीरां बाईअ वांगुरु हरी कीर्तन में मगन थी वेन्दो हो। जदहिं गाइण जी मौज मस्तीअ में ईन्दो हो त पेरनि में घुंघुरू बधी बीही नचन्दो हो ऐं गाईन्दो हो। बुधन्दड़नि खे तमाम घणो आनन्द ईन्दो हो। जेसीं गाइणु चालू हून्दो हो, तेसताईं श्रोता वेठा या बीठा हून्दा हुआ। वञण जी कान कन्दा हुआ। अहिड़ो हो संदनि गाइण में रस। ही उपदेश कोन कन्दो हो। पर भगत कबीर, गुरू नानक, दादू, फ़रीद, नामदेव, रविदास, पीपो भगत, शाह अब्दुल्ल-लतीफ, बुल्ले शाह ऐं तुलसीदास वग़ेरह जूं वाणियूं प्रमाण रूप में चवन्दो हो। जिते सत्संग थीन्दो हो, उते वञी भागु वठन्दो हो। पंहिंजे घर में बि सत्संग कराईन्दो हो। संदसि नेम हो, रोज़ संझा महिल भजन वग़ेरह गाईन्दो हो।

साधनि सन्तनि सां प्रेम ऐं रोटी खाराइणुः– भगत जो साधनि ऐं सन्तनि सां दाढो प्रेम हून्दो हो। रोज़ानो ५-७ वटिसि वेठा ई हून्दा हुआ बल्कि कदहिं त १५ ताईं साधू थी वेन्दा हुआ। उन्हनि सभिनी आयलनि खे रोटी खाराए ऐं रोक दखिणा बि दीन्दो हो। घुरिजाउनि खे कपड़ो लटो बि दीन्दो हो। हथ जो खुलियलु हो। संदसि गुरू बाए नाराइणदास जी वर्सी बि हर साल मल्हाईन्दो हो। संदसि औलाद बि साधनि संतनि खे रोटी खाराइण, दखिणा दियण ऐं गुरूअ जी वर्सी मल्हाइण वारनि नेमनि जी पालना कन्दा आहिनि।

माता जी शेवाः– ही अञा सतनि वर्हिनि जो हो त संदसि पिता ईसरदास सुर्गवास थी वियो। हिन माता जी ख़ूब शेवा कई। दींहं जो बीड़ियूं बधन्दो हो ऐं रात जो देरि रात ताईं माता जा चरन दबाए ज़ोर दीन्दो हो। कईं दफ़ा माता खे निन्ड अची वेन्दी हुई त बि ही ज़ोर दीन्दो रहन्दो हो। जेसताईं माता प्यार सां आराम करण लाइ चवन्दी हुई। हिक दींहुं ज़ोर दीन्दे हिनखे वीचारनि में हिन संसार जे असुलियत जो दर्शन

थियो ऐं वैरागु वृत्ति थी वेई । माता खे निन्ड में चरण वन्दना करे घर छदे गुरूअ जी खोज में निकितो । उन वक्ति हुनजी उम्र १४ साल हुई । वैरागु में हिनखे दिल में सुवाल पैदा थियो त ही संसार छा आहे? हिक महिने जे भिटिकण खां पोइ टन्डे जान महमद में बाए नाराइणदास जे आश्रम में पहुतो ऐं उते ई उन सुवाल जो जवाबु मिलियो । पोइ बाए नाराइणदास खे पंहिंजो गुरू कयाईं । गुरूअ हिनखे उपदेश दिनो त गृहस्थ में रही राम नाम सुमिर, माता जी शेवा करि, बुखिए खे रोटी, ऐं प्यासे खे पाणीअ जी शेवा करि । गुरूअ जी आज्ञा मञी घरि मोटी आयो । वीहनि वर्हिनि जी उम्र में भगुत हरूमल माता खे तीर्थ कराइण हरिद्वार, बृजभूमि, अमृतसर ऐं पुष्कर वग़ेरह आस्ताननि ते वठी वियो ऐं तीर्थ कराए आयो ।

सुर्गवासः– भगुत हरूमल ८७ सालनि जी उम्र में ऋषी दयानन्द ऐं जैन तीर्थांकर भगुवान वर्धमान महावीर वांगुरु दियारीअ जे शुभ मौके ते तारीख़ २२ नवम्बर १९७६ ई० में ब्यावर शहिर में हिन बे-बका दुनिया खे त्यागे परलोक पधारियो ऐं वञी वैंकुण्ठ वासी थियो ।

(५) भगुत लीलाराम जसूमल खूहा

जनमुः– भगुत लीलाराम जो जनमु श्री जसूमल वल्द खीमनदास नुख खूहा जे घरि शहिर मांझूअ ज़िले दादू सिन्धु में तारीख़ १७ फेबरवरी सन् १९०१ ई० में थियो । ही स्कूल में अरबी सिन्धी सत दर्जा पढ़ियलु हो ऐं हिन्दू वाणिका अखर बि जाणन्दो हो । ही गृहस्थी हो । ही कद जो डिघो बदन जो पूरो पुनो शिकिलि जो सुहिणो हो । धोती, कमीस, डिघो गले बन्दि कोटु पाईन्दो हो । मथे ते पटिको बुधन्दो हो । सुभाअ जो रिलणो मिलणो, खिलमुख, शांत सुभाअ वारो ऐं मुंह ते सचु चवन्दड़ु हो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई भगितीअ दांहुं लाड़ो ऐं ईश्वर जे मिलण जी प्यास हुई । सत्संग दांहुं बि घणी चाह हुअसि । हिनखे गाइण जो बि घणो शौंकु होसि, सो सिखियो । गलो सुरीलो ऐं मिठो आवाज़ होसि । भजन ऐं श्लोक बि घणेई याद हुअसि । जिते बि भजन भाउ या सत्संग थीन्दो हो त उते वञी शरीक थीन्दो हो । बुधन्दो बि हो ऐं गाईन्दो बि हो । केतिरा दृष्टांत बि याद हुअसि, उहे बि बुधाईन्दो हो । घणो करे संझा महिल या रात जो जोड़ो चौंकड़ी शब्दनि जो गाईन्दो हो । इहो संदसि रोज़ानो नेम हो । ३५ सालनि जी उम्र में भगुत तेजभानदास खटणमल हरगुण जंहिंजो अहिवालु बाब २ जे नम्बर ७ ते आहे, उन खां गुरू मंत्र वरिताईं ।

ही समाजी रीतियुनि रस्मुनि ऐं रवाज़नि जो ज़ाणू हो । तंहिंकरे अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जी वर्किंग कामेटीअ जो मेम्बर तारीख़ ४-९-१९७८ ई० ते चूंडियो वियो जो १७-९-१९८० ई० ताईं रहियो । हिनखे संदसि शेवा करण जे सबबु सांगानेर सम्मेलन में तारीख़ १०-९-१९८६ ई० ते मान-पत्र देई सन्मान कयो वियो ।

ही सन् १९४८ ई० में मांझू (सिन्धु) मां लदे अची कोटा (राजस्थान) में रहियो । हिनखे चार पुट हुआः रूपचन्द, ख़ानचन्द, टहलराम, टेकूमल । नन्ढो पुटु टेकूमल सिन्धु में ई गुज़ारे वियो हो । बाकी टे पुट परिणायाईं जे औलादी आहिनि ऐं पंहिंजा दुकान, कपड़े, रेज़िकी, पान बीड़ीअ जा अथनि ऐं रहण जी जाइ पंहिंजी अथनि । भगुत लीलाराम पीरसन थी वञण करे धन्धो कोन कन्दो हो । पंहिंजो वक्तु सत्संग ऐं भजन में गुज़ारीन्दो हो । संदसि बु पुट ख़ानचन्द ऐं टहलराम बि जुवानीअ में ई गुज़ारे विया । संदसि औलाद कम खे लगो पियो आहे । बाकी रूपचन्द खे हींअर किराने ऐं रेज़िकीअ जो दुकान आहे जो हलाईन्दो आहे ।

भगुत लीलाराम कोटा शहिर में अटिकल सन् १९९० ई० जे हिन संसार मां कूच करे परलोक पधारियो ऐं वञी वैंकुण्ठ वासी थियो ।

(६) भगुत जयसिंघमल चेतनदास धान्धा

***जनमुः*–** भगुत जयसिंघमल जो जनमु पूज चेतनदास वल्द मंघनमल नुख धान्धा जे घर में शहिर ट्न्डे फ़जुल तैलिके ऐं ज़िले हैदराबाद सिन्धु में तारीख़ ८ मार्च १६०४ ई० में थियो । ही लेखक याने मोरूमल जो चोथों नम्बर भाउ हो । हिनजो कदु पूरो पुनो, बदन जो हल्को, शिंकिलि जो कणिक रंगो हो । पोशाक नन्ढे हून्दे अंगरखो ऐं धोती ऐं मुकीस भरियल टोपी पाईन्दो हो । वडे़ हून्दे कमीस, धोती, कोट ऐं गांधी टोपी पाईन्दो हो । वक्ते मथे ते शाल जो पटिको वि ॿधन्दो हो । सुभाउ सच्चो, विश्वासी ऐं शेवा जी भावना रखंदड़ु हो । हू समाजी ॻाल्हियुनि, [illegible] रस्मुनि जी ॼाण बि रखंदड़ु हो । भगितीअ ॾांहुं बि लाड़ो होसि ।

***तइलीमः*–** हिन स्कूल में अरबी सिन्धी पंज दर्जा पास कया ऐं हिन्दू सिन्धी वाणिका अखर [illegible] हो । अखर सुठा हुअसि ऐं लिखण जो शौंकु हुअसि । सो ई अछनि पननि जे नोटवुकनि ते [illegible] भजुन, काफ़ियूं ऐं श्लोक लिखन्दो हो । हिन्दी मार्गी शब्दनि जी ॼाण बि हुअसि ।

***गृहस्थी ऐं धन्धोः*–** ही शादी कयलु गृहस्थी हो, हिनखे ॿ नियाणियूं आहिनि । जे ॿई परिणयल आहिनि । हिक वॾी भगुत सिद्ध सवाई साहिब जे हिन वक्त गादेसर भगुत ईश्वरदास सां परिणयल आहे जो आस्तान ब्यावर में आहे । ॿी लोकूमल लीलाराम खूहा रहन्दड़ मानसरोवर जे पुट माधवदास सां परिणयल आहे । ही धन्धो अबाणी किरत रङाई छपाई कन्दो हो । सिन्धु में हुरनि जी लूटमार ऐं मार धाड़ सबबु सभेई भाउर भगुत जयसिंघ समेति सन् १६४४ ई० में टन्डे फजुल मां लडे़ वञी मातिली ज़िले हैदराबाद में वञी रहिया । उतां सन् १६४८ ई० में लडे़ अची पुष्कर में रहिया । उन बैदि ब्यावर, अलवर वरी पुष्कर उन बैदि अजमेर में रहिया ।

***भगितीः*–** नन्ढे हून्दे ॻाइण ऐं भगितीअ जो शौंकु होसि । तंहिंकरे सन्तनि ऐं भगुतनि सां घणो प्रेम होनि । मार्गी शब्द घणा सिखियो । ख़ास करे भगुत खीमनदास, जंहिंजो अहिवालु बाब २ जे नम्बर २ ते आहे, उन खां घणां भजुन ऐं ज्ञान सिखियो । हिनजो रोज़ानो नेम हो त पंज इश्नानी करे देवीअ जो वास करे तम्बूरो खणी वेही भजुन ॻाईन्दो हो । उन बैदि रोटी खाईन्दो हो । मार्गी शब्द एतिरा याद हुअसि, जो केतिरा ॾींहं ऐं रातियूं वेही ॻाईन्दो हो त साॻियो शब्दु कोन ॻाईन्दो हो । रोज़ नवां शब्द ऐं काफ़ियूं ॻाईन्दो हो । विच विच में श्लोक ऐं शाह जा बैत बि चवन्दो हो । मार्गी शब्दनि जे ॼाणण करे उन्हनि मां घणो ई ज्ञान पिरायाईं । ही जिते वि सत्संग या भजुन भाव जो ॿुधन्दो हो, उते ज़रूरु वेन्दो हो । हिनजो इहो नेम हो त रात जो सुम्हण महिल कुझु वक्तु वेही बन्दगी कन्दो हो ।

***परलोक पधारिजणुः*–** पछाड़ीअ पीरीअ में संदसि तबियत नरमु रहन्दी हुई । आख़िर तारीख़ १० फेबरवरी सन् १६७६ ई० बराबर १२ मांघ २०३५ विक्रमी शहिर अजमेर में परलोक पधारियो ऐं वञी वैंकुण्ठ में वासो कयाईं । संदसि पत्नी बि अजमेर में तारीख़ २७ मार्च १६६० ई० बरावर २६ फगुण सम्वत् २०४६ में परलोक पधारी । हिनखे पुट कोन हो ।

हिनजे वडे़ भाउ कारेमल जो अहिवालु पढ़ो बाब २६ जे नम्बर २ ते ।

हिनजे नन्ढे भाउ मोरूमल जो अहिवालु पढ़ो बाब १० जे नम्बर १ ते ।

(७) भगुत संभनमल हीरानन्द सोनेजा

सिन्धु जे हैदराबाद ज़िले गूनी तैलिके जे नन्ढे गोठ राजो निज़ामाणीअ में भगुत संभनमल जो जनमु श्री हीरानन्द वल्द लखूमल नुख सोनेजा जे घरि अटिकल सन् १८६७ ई० में थियो। हिनजो कदु नन्ढो, बदन जो भरियलु ऐं शिकिलि जो कणिक रंगो हो। हिनजी रहिणी कहिणी सादी हून्दी हुई। सुभाअ जो सांतीको ऐं थधो हो। हिनजो रागु गाइण ते शौकु ऐं भगितीअ दांहुं लाड़ो हो। तम्बूरो ऐं कंझूं बि वजाए जाणन्दो हो। ही कमीस ऐं धोती पाईन्दो हो। मथे में भर्त भरियल टोपी पाए मथां रङियल ऐं छापियल शाल जो पटिको बुधन्दो हो। ही फ़कति हिन्दू वाणिका अखर जाणन्दो हो। सिन्धी गाल्हाईन्दो हो। ही अबाणो धन्धो रङाई छपाईअ जो कन्दो हो। जगुहि पंहिंजी हुयसि। किथे बि भजुन भाउ या सत्संग थीन्दो हो त उते हलियो वेन्दो हो। बुधन्दो बि हो त पाण मार्गी शब्द ऐं कलाम बि गाईन्दो हो। हिनसां गदु संदसि भाइटियो भगुत घुमणमल बि गाईन्दो हो। हिनजो अहिवालु बाब ६ जे नम्बर ३ ते आहे।

ही पेंयनि सालनि में राजे निज़ामाणी गोठ मां लदे अची शहिर मातिलीअ में वेठा। सन् १६४८ में सिन्धु छदे अची जयपुर रहिया। जयपुर में छपाईअ जो कारख़ानो कढियाईं। कमु चङो पिए हलियो। हिनखे ३ पुट हुआः वदो हरूमल, जो जुवानीअ में ई संसार मां कूच करे वियो। बियो पुटु हासानन्द ऐं टियों धर्मदास कारख़ानो सम्भालीन्दा हुआ। इहे बुई बि भगुवान जा प्यारा थी विया। हरूमल ऐं हासानन्द खे पुट कोन हो। बाकी नन्ढे पुट धर्मदास खे हिकु पुटु चन्दीराम आहे, जो कारख़ानो सम्भालीन्दो आहे। कारख़ानो ऐं घर जी जाइ पंहिंजी अथनि।

मूं मथे लिखियो आहे त गाईन्दो बि हो। सो ही मार्गी भजुन, काफियूं, कलाम, श्लोक वग़ेरह गाईन्दो हो, पर जे किथे भजुन भाउ न थियो त तम्बूरो खणी घर में ई वेही गाईन्दो हो। पोइ ओसे पासे वारा बि अची बुधन्दा हुआ। ही जयपुर में अटिकल सन् १६७० में परलोक पधारियो ऐं वञी सुर्गु में वासो कयाईं।

(८) भगुत थूमीमल उर्फु चूहड़मल उर्फु चुन्नीलाल छत्ताराम वारदे

जनमुः– भगुत चूहड़मल जो जनमु श्री छत्ताराम वल्द गंगाराम नुख वारदे जे घर गोठ खेबिर तैल़िके हाला ज़िले हैदराबाद सिन्धु में सन् १६१८ ई० में थियो। हिनजे जमण ते थूम विरहाई हुआऊं। तंहिंकरे हिनखे थूमीमल बि करे सदीन्दा हुआ। हिन्द में अचण बैदि लोकल माण्हुनि खे चूहड़मल नालो न पिए समुझ में आयो ऐं सही उच्चार न थे करे सघिया त पोइ पाण खे चुन्नीलाल सदायाऊं, इनकरे ही भगुत टिन्ही नालनि सां मशहूरु आहे। ही थल्हे वारा साध जंहिंजो बयान पहिरिएं बाब में आहे, उन कुटम्ब मां आहे। साधनि जे कुटम्ब में जनमु वठण ऐं उन्हीअ वातावरण ऐं पूरब जनम जे संस्कारनि करे हिनजो लाड़ो भगितीअ ऐं सत्संग दांहुं हो। संदसि बालपिणे वारी हयाती सन्तनि ऐं भगुतनि जे महफ़िल में शुरू थी। हिनजो कदु डिघो, बदन जो पूरो भरियलु ऐं शिकिलि जो कणिक रंगो हो। हीउ सुभाअ जो ख़ुशि मिजाजु, उदार-दिल, हमदर्द ऐं सच्चार हो। कंहिं ते कावड़ि गुस्सो कोन कयाऊं। आए विए खे आदर ऐं बार तोड़े बुढे खे पूरो मान दीन्दा हुआ। दरवेश ऐं सन्तनि जो मर्तिबो करे सन्मान कन्दा हुआ। पंहिंजी ज़िन्दगी सादगी ऐं सरफे में बसर कयाऊं।

पोशाकः– ही धोती, कमीस ऐं कोटु पाईन्दो हो ऐं मथे ते पटिको बधन्दो हो।

तइलीमः– ही अरबी सिन्धी ऐं हिन्दू वाणिका अखर जाणन्दो हो। ही सिन्धी, हिन्दी, गुजराती बोलियूं गाल्हाए सघन्दो हो।

गाइणु ऐं कविता ठाहिणु:– हिनखे नन्ढे हून्दे खां गाइण जो शौंकु हो जो रागु सिखियो ऐं साज़ वजाइणु सिखियो । संदसि गले में मेठाज जी कुदरती दाति हुई त कविता ठाहिण जी बि दातार खां दाति मिलियल हुअसि । कई भजन ऐं काफ़ियूं ठाहियाईं । गीतनि में पंहिंजो नालो **"चूहड़"** विझन्दा हुआ । ज़माने जे गर्दिश बाबति संदसि ख़्याल क्रांतिकारी हून्दा हुआ, जंहिं लाइ पंहिंजू रचनाऊं मज़ाकी नूअ में दीन्दा हुआ । अनेक रागिणयूं बर-ज़बान याद हुअनि । संदसि रूहु रागु सां जुड़ियलु हो । साज़नि ते पूरो ज़ाब्तो होसि । हू असुलु सिन्धी बोलीअ जा कलाम, काफ़ियूं, दोहीड़ा ऐं श्लोक ऐं मार्गी शब्द गाईन्दो हो । गले में मेठाज, सुर ताल में पूरो, गाइण में बुंलन्द आवाज़, सो बुधन्दड़नि खे मोहे छदीन्दो हो । सत्संग में अनेक वारताऊं बुधाईन्दो हो ।

धन्धो:– ही अबाणो धन्धो रङाई ऐं छपाई कन्दो हो । उनसां गदु सत्संग ऐं भजन भाउ बि कन्दो हो ।

रिहाइशी आस्थान:– ही खेबिरन मां लदे मांझूअ में रहियो । उते सत्संग मण्डली ठाहियाईं उहा मण्डली रोज़ प्रभात फेरी गाइण वजाइण सां कन्दा हुआ । भगत चवन्दो हो **"सत्गुरु सहाय"** साम्हूं वारो चवन्दो **"स्मरत, गुरू सहाय"** । ही सन् १९४८ में सिन्धु छदे हिन्द में आया ऐं अची बांटवा में रहिया । उतां अची राजकोट वेठा ।

परलोक पधारिजणु:– ही राजकोट शहिर में तारीख़ १८-१-१९८८ में परलोक पधारिया । हिन सिन्धु वारो थल्हे वारनि जो आस्तानो हिति बणायो हो । जिते संदसि संख समाधीअ में रखिया विया ऐं वञी पिपिर जी छाया में रहिया । संदनि वदा थल्हे वारा साध, तिनि जो अहिवालु पढ़ो बाब १ जे नम्बर २ ते ।

(६) भगत गोबिन्दराम हेमनदास वारदे

जनमु:– भगत गोबिन्दराम, भगत लौंगराम जो पोटो हो । हिनजो जनमु श्री हेमनदास वल्द भगत लौंगराम (दिसो बाब २ जो नम्बर ५) जे घर शहिर सांघड़ि ज़िलो थरपारकर, हींअर खुदि सिन्धु में सन् १९०५ ई० में थियो । पोइ ही माइटनि सां उतां लदे अची हैदराबाद सिन्धु में रहिया । ही कद बुत जो पूरो पुनो शिकिलि जो मोचारो हो । ही कमीस, पाइजामो, मथे ते टोपी (गांधी कैप) ऐं सदिरी (जवाहर जैकेट) पाईन्दो हो । ही स्कूल में अरबी सिन्धी पढ़ियो ऐं हिन्द में अची हिन्दी सिखियो, ही सिन्धी हिन्दी लिखी पढ़ी जाणन्दो हो । ही सिन्धी हिन्दी बोलियूं गाल्हाए जाणन्दो हो । हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई शेवा करण, धर्म भगितीअ दांहुं लाड़ो हो, ही शांत सुभाअ जो हो । हिनखे हैदराबाद में दरिज़को दुकान हो । नन्ढी उम्र में ही साधुनि सन्तनि सां गदु रहण पसंद कन्दो हो । तंहिंकरे संदसि दादे भगत लौंगराम पंहिंजी नज़र हेठि रखियो ऐं धीरे धीरे उन्हनि जा संस्कार ई ग्रहण कयाईं । थोड़े ई वक्त ४०० भजन बर-ज़बान याद करे पंहिंजी जगियासी वृत्तिअ जी जाण दिनाऊं । तंहिंखां सवाइ स्वामी लीलाशाह महाराज, स्वामी ब्रह्मानन्द साहिब, सामी साहिब, कबीर, गुरू गुलाबदास ऐं सन्त गुरू नानक देव महराज जनि जी सामग्री ऐं श्लोक, छन्द ऐं सिहरफ़ी वग़ेरह जो पूरो अभ्यास कयाऊं । १५ सालनि जी उम्र में वैदिक ज्ञान जी प्राप्तीअ लाइ स्वामी लीलाशाह महाराज जनि जी छत्र छाया में अची विया ऐं हैदराबाद में श्री केवल शक्ती आश्रम जा भगत थी विया ऐं सजी ज़िम्मेवारी स्वामी जनि जी ग़ैर हाज़िरीअ में सम्भालीन्दा हुआ । उते आर्य समाज में पद ग्रहण करे उते बि शेवा कन्दा रहिया । पूज्य सिन्धी ब्रह्म खत्री समाज जे विस्तार ऐं वाधारे लाइ बि काफ़ी सहयोग दिनाऊं । पाकिस्तान पैदा थियण बैदि १९४८ ई० में लदे अची जोधपुर रहिया, जिते सिलाईअ जो दुकान खोलियाऊं ऐं गदोगद

अध्यात्मक ऐं समाजिक चेतना जो अलख जागाईन्दा रहिया । सन् १९५४ ई० में लदे अची आगरे वेठा, उते बि पंहिंजो दुकान दरिज़को खोलियाऊं । उते स्वामी लीलाशाह ज़ी ब्रर्षा कयल श्री कृष्ण गऊशाला में हिक गुफ़ा अन्दरि हिक कोठी ठहियल आहे । जिते रोज़ानो सुबूह जो ७ बजे वञी वेद कथा कन्दा हुआ । वेद कथा सन् १९५४ खां २७ जनवरी १९८६ ताईं अखण्ड पाठ वांगुरु हलन्दी रही । संदनि गले में पिणि सुरीलो आवाज़ हो ऐं सत्संग वक्ति अगियां या पछाड़ीअ में भजन गाईन्दो हो । बुधन्दड़नि जा मन मस्त थी वेन्दा हुआ । स्वामी लीलाशाह जनि जदहिं बि आगरे ईन्दा हुआ त सत्संग वग़ेरह वक्त पंहिंजे अगियां विहारीन्दा हुआ । पहिरीं हिनखे चवन्दा हुआ त कुझ सत्संग करि, पोइ स्वामी लीलाशाह जनि कन्दा हुआ । समाजी सम्मेलन में बहिरो वठन्दो हो । हिनखे आगरे में जगहि पंहिंजी हुई । हिनखे ब पुट आहिनि । संदनि वदो पुटु सूर्य प्रकाश आगरे में रहन्दो आहे ऐं दरिज़को दुकान हलाईन्दो आहे ऐं उते जो सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात जो मुखी बि आहे ऐं संदसि नन्ढो पुट चन्द्र प्रकाश बड़ोदे में रहन्दो आहे । उनखे बि उते पंहिंजी जाइ आहे ऐं ऑइल कम्पनीअ में इंजीनियर जी नौकिरी अथसि । आख़िर श्री गोबिन्दराम तारीख़ २८ जनवरी सन् १९८६ में आगरे में हिन् फानी संसार मां मोकिलाए वञी परमात्मा जी गोदि में शरनि वरिताईं ऐं सुर्ग में वासो कयाईं । संदसि दादे भगत लौंगराम जो अहिवालु पढ़ो बाव २ जे नम्बर ५ ते ।

(१०) भगत चांडणमल तुलसीदास छत्ताकपूर

जनमुः– भगत चांडणमल जो जनमु श्री तुलसीदास वल्द देवनदास नुख छत्ताकपूर जे घरि गोठ दड़े तैलिके मीरपुर बठोरो ज़िले कराचीअ में तारीख़ २ मांघु सम्वत् १९९५ विक्रमी बराबर सन् १९२८ में थियो । हिनजो कदु नन्ढो, बदन पूरो पुनो, शिकिलि जो कणिक रंगो आहे । ही अछी ड्रेस, कमीस, पतलून (पाइजामो) ऐं गांधी टोपी पाईन्दो आहे । सियारे में स्वेटरु ऐं कोटु पाईन्दो आहे । ही निहठो, निमाणो, शांत ऐं गंभीर सुभाअ जो हो । तंहिंखां सवाइ ही सुमझू, खिलमुख, धर्मी वृत्तिअ वारो आहे । समाजी शेवा भाव जो बि मंझिसि अंशु अथसि ।

तइलीमः– ही स्कूल में अरबी सिन्धी सत दर्जा पढ़ियल आहे । हिन्द में अचण बैदि हिन्दी ऐं गुजरातीअ जो अभ्यास कयो अथसि ऐं इहे बुई अखर लिखी पढ़ी जाणे । ही सिन्धी, हिन्दी ऐं गुजराती बोलियूं गाल्हाए जाणे ।

धन्धोः– हिनजे पिता खे सिन्धु में कपड़े जो दुकान हो ऐं हिन्द में अचण खां पोइ हित बि अची कपड़े जो दुकान कढियो । संदसि पिता पीरसन हो, तंहिंकरे रिटायर्ड हयाती गुज़ारीन्दो हो । दुकान, श्री चांडणमल हिकु नौकर रखी हलाईन्दो हो, जो छोकिरा अञा नन्ढा हुआ । जदहिं छोकिरा वदा थिया त नौकर कढी छदियाईं ऐं छोकिरा दुकान सम्भालीन्दा आहिनि । ही घणो वक्तु दुकान जे मथां माड़ीअ ते वञी एकान्त में विहन्दो आहे ऐं ध्यान ऐं चिन्तन में रहन्दो आहे ।

रिहाइशी आस्थानः– ही असुलु दड़े जे गोठ में रहन्दा हुआ । सन् १९४८ में सिन्धु मां लदे हिन्द में आया ऐं अची बांटवा (गुजरात) में वेठा ऐं कपड़े जो दुकान कढी गुज़र जो वसीलो बणायाऊं । रफ़्त रफ़्त दुकान ऐं घर जे रहण जी जाइ खरीद कयाऊं ।

लाइब्रेरीः– धर्मी ख़्यालनि जे करे धर्मी किताब घुराईन्दो ई रहन्दो आहे । घुराईन्दे-घुराईन्दे चङी ख़ासी लाइब्रेरी ठही वेई आहे, जा दुकान जे मथां माड़ीअ ते आहे । पोइ उन्हनि पुस्तकनि मां को न को खणी वेठो पढ़न्दो ऐं अभ्यास कन्दो आहे ।

भगिती ऐं श्रद्धाः– हिन जा अगियनि जनमनि जा के संस्कार अहिड़ा आहिनि, जिनि करे नन्ढे हूंदे खां ई धर्म डांहुं लाड़ो हो ऐं ईश्वर जी उपासना ऐं भगिती कन्दो ई रहन्दो आहे । घणो करे ही गोशिए-नशीनी अख़्त्यार कन्दो आहे । मथे माड़ीअ ते अकेलो वेही संदसि लाइब्रेरीअ मां को न को शास्त्र कढी वेठो अध्ययन कन्दो आहे ऐं कंहिं महिल शांत चित सां ईश्वर जी उपासना ऐं भगिती कन्दो ई रहन्दो आहे या तन खे तसियो डेई साधना साधीन्दो रहन्दो आहे । पूरब जनम जे कर्मनि सां पंहिंजी नियात जो कामिल ऐं पहुतलु सन्त स्वामी लीलाशाह महाराज बि हिनखे मिली वियो । जंहिं में अटल विश्वास ऐं बेहदि श्रद्धा अथनि । जिनिखे सतगुरू करे मञीन्दा आहिनि । वक्ति बि वक्ति बांटवा तोड़े बियनि शहनि में या स्वामी जनि जे नैनीताल ऐं आदीपुर आश्रमनि में स्वामी जनि वटि वेन्दा हुआ ऐं उन्हनि जा उपदेश बुधी नोटु कन्दा हुआ । उन्हनि खे श्रवण करे मनन कन्दा हुआ ऐं निध्यासन जी बि कोशिश कन्दा हुआ । उहे उपदेश अजमेर में भाऊ प्रभुदास ब्रह्मचारीअ खे अजमेर मोकिलीन्दा हुआ । जो वरी आत्म दर्शन माहवार वेदान्त मैगज़िन में छापीन्दो हो । आत्म दर्शन बि स्वामी लीलाशाह महाराज जे प्रेरणा ऐं आज्ञा सां भाऊ प्रभुदास ब्रह्मचारीअ शुरू कयो जो पोइ दीपचन्द्र बेलाणी कढन्दो हो, सो बि संसार मां वियो हलियो ।

स्वामी लीलाशाह आश्रमः– बांटवा शहिर जे पसगरदाईअ में सदु खन पंध ते श्री चांडणमल ऐं बियनि श्रद्धालुनि गडिजी स्वामी लीलाशाह आश्रम बर्पा कयो आहे । जंहिं में बाग़, सत्संग हॉल ऐं बिया कमरा आहिनि । जिते हर आरतवार ते सत्संग ऐं कथा कीर्तन थीन्दो आहे ऐं चांडणमल बि उते सत्संग करे प्रवचन चवन्दो आहे ।

किताब छपाइणुः– हिन वेदान्त जे प्रचार जे ख़्याल खां हेठियां पुस्तक छपाया आहिनिः–

१. ध्यान योग २. माता जो धीउ खे उपदेशु ३. निरोगता नवनि साधनि ब्रह्मचर्य ४. पंजदशी नाटिक दीप ।

समाजी शेवाः– हिन समाज शेवा जे लाइ हेठियनि पदनि ते कार्य कयाः–

१. मेम्बर : अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात वर्किंग कामेटी १७-६-८० ई० खां ६-६-८३ ई० ताईं ।

२. मेम्बर : अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री सहाइता विद्या फन्द ४-६-७८ ई० खां १७-६-८० ई० ताईं।

३. ट्रस्टी : अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री समाज धर्मशाला ट्रस्ट १७-७-७६ ई० खां ३-११-६५ ई० ताईं।

मान-पत्रः– अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात तरफां सांगानेर सम्मेलन में १०-६-८६ ई० में हिनखे मान-पत्र डिने वियो ।

कुटम्बुः– संदसि घर वारी बि भगतियाणी ऐं सत्संगियाणी आहे ऐं ज़ालुनि में सत्संग कन्दी आहे । हिन खे टे पुट आहिनि, जे दुकान सम्भालीन्दा आहिनि ।

बाबु चोथों

भगत ऐं गवैया

(१) भगत केवलराम जेठानन्द धान्धा

जनमुः– भगत केवलराम जो जनमु जेठानन्द वल्द कक्रूमल नुख धान्धा जे घरि शहिर मांझंद ज़िले दादू सिन्धु में सम्बत् १९५५ विक्रमी बराबर सन् १८९८ ई० में थियो । ही कदावर, बदन में भरियलु, शिकिलि जो कणिक रंगो हो । धोती, कमीस, टोपी, कोटु पाईन्दो हो ।

गृहस्थी ऐं धन्धो :– ही शादी कयलु गृहस्थी हो । हिनखे ३ पुट हुआः १. भीमोमल २. फतूमल ३. चन्दूमल । ही अबाणी किरत रङाई ऐं छपाईअ जो कमु कन्दो हो । दरयाह जे पाइण करे उतां लदे भर वारे शहिर मांझूअ में अची वेठा । सन् १९४८ ई० में सिन्धु छदे अची बांटवा (गुजरात) में वेठा । जाइ पंहिंजी कई अथनि । औलाद अञा बि उते रहे थो ।

गुरू, गाइन विद्या ऐं भगितीः– हिनजो गाइण ते तमाम घणो शौंकु हो । आवाज़ बि शीरीन ऐं बुलन्द होसि । हिन गाइन विद्या में गुरू सिद्धरावल (रांवल जोगी) मांझदि निवासी खे कयो । जंहिं हिनखे गाइण ऐं वजाइण में भड़ु करे छदियो । उन बैदि भटनि ऐं जाजकनि खां गाइण वजाइण जो चङो ई हुनुरु सिखियो । तंहिंखां सवाइ सिन्धु जे मशहूरु गाइक भगत कंवरराम सां गदु बीही किनि मौकनि ते गाईन्दो हो । तंहिंकरे सदिबो ई हो ''नन्ढो कंवर'' या ''बियो कंवर'' । हिनजो भगितीअ दांहुं बि लाड़ो हो, उन्हींअ दिस में बि चङो कदमु वधायाईं । मार्गी शब्द सिखियो, उन्हनि मां बि चङो ज्ञान पिरायाईं । ही मार्गी शब्द, भजन, काफियूं, कलाम ऐं वायूं गाईन्दो हो । विच विच में श्लोक, बैत ऐं दोहीड़ा बि दीन्दो हो । पक्को रागु बि गाईन्दो हो । मतिलब त पूरो पूरो गवैयो हो । हिन जे राग ते कईं मोहित हुआ । हिक दफ़े जेको हिनज़ो रागु बुधन्दो हो त विए दफ़े बुधण ज़ी बि तमन्ना रखन्दो हो । ही सिन्धी चङो ई पढ़ियलु हो । संदसि हथ लिखियल किताब जंहिं में भजन ऐं काफ़ियूं, कलाम, श्लोक वग़ेरह लिखिया अथसि सो मूं याने लेखक नज़र मां कढियो आहे । अखर बि सुठा हुअसि । हींअर इहो किताब संदसि पुट चन्दूमल वटि सांढे रखियल आहे । संदसि आकहि मां बिया बि बु सन्त थिया आहिनि । संदसि सौट उत्तूमल जा पुट, हिकु भगत भेरोमल उर्फु भेरवदास, बियो लाला नाराइण गिर, जिनि जो अहिवालु बाब १ जे नम्बर १३ ते ऐं बाब २ जे नम्बर १० ते लिखियलु आहे ।

परलोक पधारिजणुः– ही बांटवा में तारीख़ ४ आखाड़ संबत् २०२८ विक्रमी में परलोक पधारियो ।

ॐ

बाबु पंजों

भगत, गाईन्दड़ ऐं समाज सुधारक

(१) भगत परमानन्द खेमचन्द वारदे

जनमुः– भगत परमानन्द जो जनमु खेमचन्द वल्द जेठानन्द नुख वारदे जे घर में तारीख़ ११ अ… सन् १८८२ ई० में शहिर हालनि नवनि ज़िले हैदराबाद सिन्धु में थियो। हिनजो बदन भरियलु, कदावा… शिकिलि जो कणिक रंगो हो। ही कमीस, धोती, गले बन्दि कोटु ऐं गले में बोछण, मथे ते पगिड़ी, सभु कप… सफ़ेद पाईन्दो हो। हू शादी कयलु गृहस्थी हो। हिनखे पुट रतनचन्द नाले हो, जो सिन्धु में गुज़ारे वियो। उनजो पुटु याने परमानन्द जो पोटो रोचीराम आहे। ही हालनि मां लदे कुछु वक्त हैदराबाद में रहियो, पो… लदे अची मातिलीअ रहियो। मातिलीअ मां लदे हिन्दुस्तान में इन्दौर (म.प्र.) अची रहियो, संदसि सुर्गवा… थियण बैदि पोटो लदे देवास वियो। केतिरनि सालनि जे रहण बैदि हाणे लदे अची उज्जैन रहियो आहे।

धन्धोः– ही पाटोलिको (पूत) जो कमु ऐं आज चीरे चूड़ा वग़ेरह जो कमु कन्दो हो, इनकरे चूड़ीगर वि सदिबो हो। हीउ हिकमत बि कन्दो हो, पर संदसि पोटे हींअर उज्जैन में आदाणनि ते चादरुनि उणण जो धन्धो अख़त्यार कयो आहे।

भगिती ऐं समाज सुधारः– हिनजो ईश्वर जे भगितीअ दांहुं लाड़ो ऐं गाइण जो शौंकु हो। गले में वि शीरी हुयसि। हर थारूंअ जे रात घर में सत्संग कराईन्दो हो। ही पंहिंजा भजन बि टाहे गाईन्दो हो। ही भगत लौंगराम जो भइटियो हो, जंहिंजो अहिवालु बाब २ जे नम्बर ५ ते आहे। हिनजो सत्गुरू सन्त आसूराम मास्तर हो, जंहिंजो अहिवालु बाब २ जे नम्बर ४ ते आहे। हिनजो मतो गुलाबदासी हो। तंहिंखां सवाइ हिनखे पंहिंजे समाज जे रीतियुनि रस्मुनि ऐं रवाजनि जी मुकमल मइलूमियत हुई ऐं ज़माने अनुसार रीतियुनि ऐं रस्मुनि में तब्दील आणे सुधारे करण जी बि लगन लगल हुई। हिन तारीख़ १ सांवणु सम्बत् १९८० विक्रमी बराबर सन् १९२३ में हिक चौंपड़ी **"परम आनन्द वंहिंवार"** छपाई, जंहिं में रिथियल रीतियूं रस्मूं ऐं रवाज जाणाया अथसि। हीअ चौंपड़ी मूं लेखक याने मोरूमल वटि मौजूद आहे। इन्हीअ में जाणायल रीतियुनि रस्मुनि ऐं रवाजनि जो ज़िक्रु मूं पंहिंजे किताब **"ख़ोराक, पोशाक, ज़ेवर ऐं लागपोतनि जा रवाज"** में कयो आहे। तंहिंखां सवाइ वक्त बि वक्त पर्चा (Hand Bills) बि छपाए पाण वटि हमेशह मुयसिर रखन्दो हो। पोइ उन्हनि जे ज़रीए विहांवनि, मारकनि ऐं सर्व नियात जे मेड़नि में वञी प्रचार कन्दो हो। मिसाल ऐं दलील देई समुझाईन्दो हो। हालांकि नियातियुनि हिननि सुधारे वारियुनि रिथुनि ते उन वक्त पूरो ध्यान कोन दिनो, पर पोइ धीरे धीरे किनि रिथुनि खे पाणेही खुदि वि खुदि अमल करे शुरू करण लगा ऐं हिक विए खे दिसी बिया बि उन्हनि दुरुस्तियुनि ते हलण लगा। हाणे बि हिनजूं रिथूं थोरीअ फेर फारि सां रवाज में अचण लगियूं आहिनि। इनकरे चइबो त भगत परमानन्द जो उदमु ऐं कोशिशूं वैरथु कीन वेयूं।

परलोक पधारिजणुः– ही ८१ वर्हियनि जे जमार में इन्दौर शहिर में तारीख़ ५ जूलाइ सन् १९६३ ई० में हिन फानी दुनिया खे त्यागे परलोक पधारियो।

❀ ❀ ❀

ॐ

बाबु छहों

भगत, गाईन्दड़ ऐं खोजना कन्दड़

(१) भगत जयकृष्णदास भगत हरूमल छाटपार

जनमुः– भगत जयकृष्णदास जो जनमु भगत हरूमल वल्द ईसरदास नुख छापटार जे घर माता कीमतबाई जे गर्भ मां शहिर नवाबशाह सिन्धु में तारीख़ २६ सेप्टेम्बर सन् १६३६ ई० में थियो । हिनजो क़दु नन्ढो, बदन में भरियलु, शिकिलि जो सुहिणो हो । हिनजो सुभाउ सांतीको, रिलणो मिलणो, हमदर्दानो, शेवा भाव वारो ऐं धर्मी प्रवृतिअ वारो हो । ही समुझू, देरीनो, बुर्दबार ऐं दूरान्देश हो । जीवनि ते दया कन्दड़, कीर्तन ऐं सत्संग दांहुं लाड़ो होसि । नन्ढे हून्दे खां गाइण ऐं वजाइण जो शौंकु होसि । हेतिरनि गुणनि हून्दे बि वदाई कान हुयसि । ही कमीस, पतलून, कुड़तो ऐं पाइजामो पाईन्दो हो । पेरनि में चम्पल पाईन्दो हो । सियारे में मथे में गर्म टोपु, स्वेटर ऐं कोटु पाईन्दो हो ।

तइलीमः– ही सिन्धु में स्कूल में अरबी सिन्धी ५ दर्जा पढ़ियो । वधीक विद्या अची हिन्द में वरिताई । ही मैट्रिक ताईं पढ़ियो । हिनजो विषय आर्टस् (Arts) हो । ही सिन्धी, हिन्दी ऐं अंग्रेज़ी लिखी पढ़ी जाणन्दो हो ऐं टेई बोलियूं गाल्हाए जाणन्दो हो ।

टेकनीकल तइलीमः– स्कूली विद्या पूरी करण बैदि इन्जीनियरिंग जी सिखिया वरिताईं । वरी १६५५ ई० खां १६५७ ई० ताईं रेडियो ऐं वायरलेस जी ट्रेनिंग जे० वाइ० मैक्सी (J. Y. Maxi) खां वरिताईं ।

गाइन विद्याः– हिनजो नन्ढे हून्दे खां ई शौंकु हो त गाइणु वजाइणु सिखां ऐं गायां, सो अजमेर में श्री कीमतराम गुर खां सिखियो । संगीत विद्या बि हासुलु कयाईं ऐं हारमोनियम वजाइणु बि सिखी वियो । साणु भगितीअ जे भावना करे मार्गी शब्द ऐं भगितीअ जा गीत सिखियो ऐं गाईन्दो हो ।

ही नन्ढे हून्दे पंहिंजे पिता भगत हरूमल, जंहिंजो अहिवालु बाब ३ जे नम्बर ४ ते आहे, उनसां गदु भगवत कीर्तन हारमोनियम वजाईन्दे पाण बि सिखी वियो । ही भजन भगत सूरदास, सन्त तुलसीदास, मीरां बाई ऐं रविदास वग़ेरह जा गाईन्दो हो । तंहिंखां सवाइ मार्गी शब्द ऐं फकीरनि जा कलाम, विच विच में श्लोक ऐं बैत बि गाईन्दो हो ।

धार्मिक प्रवृतिः– पिता जे उपदेश करे हिन में धर्मिक भावना घणी हुई । धर्मिक वीचारनि सां ओत प्रोत हो । ही जीव हत्या जे पिणि ख़िलाफ हो, इन लाइ सजी उम्र वेष्नू थी रहियो । ही धर्मिक़ इत्हास जा ग्रन्थ बि ख़ूब पढ़न्दो हो । इन सां गदु आचार्य रजनीश, ऋषि अरविन्द घोष ऐं प्रभु पादि जा पुस्तक बि पढ़न्दो हो । गीता प्रेस गोरखपुर जो आजीवन सदस्य याने Life Member रहियो ।

धन्धो:– सिन्धु खां वठी हिनजो माइटाणो धन्धो सिन्धी बीड़ियुनि जो हो । सवें कारीगर बीड़ियुनि ठाहीं जे मशहूर हून्दा हुआ ऐं बीड़ियुनि जो रजिस्टर्ड मार्को विछूं छाप आहे । हिननि जे कारख़ाने जूं बीड़ियूं मशहूर हुयूं ऐं परे परे वेन्दियूं हुयूं । हिन्द में अचण बैदि संदसि पिता साग़ियो कमु ब्यावर में खोलियो. जो अञा ताईं चालू आहे ऐं मशहूर आहे । हिन वरी सन् १९५८ ई० में "मनोहर रेडियो" नालें दुकान खोलियो, जो कुझु साल हलाए बन्दि कयाई । सन् १९८० ई० में केमीकल लाईन में क्वॉटर्स में फिलस्पार (पत्थरनि पींहण जी मशीन) जी पहिरीं फैक्ट्री लगाई । सन् १९८५ ई० में बी ऐं सन् १९८७ ई० में टीं फैक्ट्री लगाई । वरी सन् १९९५ ई० में ऊन मां धागो ठाहिण जी मिल लगाई: Khatri Wool Spining Mills Pvt. Ltd. ते सभु मशीनूं ऐं फेक्ट्रियूं चालू आहिनि । उन्हनि सां गडु बीड़ियुनि जी फैक्ट्री बि चालू आहे । ही पाण में ५ भाउर आहिनि । ब भाउर श्री जयकृष्णदास ऐं श्री बलदेव सुर्गवास थी विया आहिनि । उन्हनि जो औलाद ऐं टे भाउर तेजभानदास, मनोहरलाल, वासदेव, सभु कारख़ाना हलाए रहिया आहिनि । जयकृष्णदास खे ४ पुट आहिनि ।

खोजना:– विच में हिन नई खोजना कई । उन में हिन आज जा पींघा त्यार कया, जे मार्केट में विकरो बि थिया, पर महांगाईअ ऐं ख़र्च सबबु ही कमु बन्दि कयो वियो ।

रिहाइशी आस्तान:– हिन जा वडा असुलु शहिर मीरवाह गोरचाणी ज़िले थरपारकर में रहन्दा हुआ । पोइ उतां लदे शहिर बदीन ज़िले हैदराबाद में रहिया । उतां बि लदे वञी शहिर नवाबशाह में वेठा । सन् १९४७ ई० जे पछाड़ीअ में सिन्धु छदे अची शहिर ब्यावर (राजस्थान) में वेठा । रफ़्त रफ़्त पंहिंजूं जायूं जगहियूं ऐं कारख़ाना कयाऊं । हिननि शहिर जे पस्गरदाईअ में प्लॉट वठी ५ भाउरनि जा ५ बंगला ठहिरायाऊं ऐं हिकु नन्ढड़ो मन्दर ठहिरायो अथनि । बाकी खुले में बाग़ु लगायो अथनि । ही हाणे सदिबा ई पंजनि बंगलनि वारा आहिनि ।

समाजी शेवा:– ही अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री सहाइता विद्या फन्द जो मेम्बर २०-७-१९६७ ई० खां १६-८-१९७२ ई० ताईं थी रहियो । हिन खे अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात तरफां सांगानेर सम्मेलन में १०-९-१९८६ ई० ते मान-पत्र दिनो वियो ।

सन्तनि खे रोटी खाराइणु:– ही बि पंहिंजे पिता जे आदर्श जी पेरवी करे साधुनि सन्तनि खे रोज़ रोटी खाराईन्दो हो । कदुहिं ५-७ त कदुहिं १४-१५ साधू थीन्दा हुआ । उन्हनि खे रोटी खाराए, रोक दुखिणा बि दीन्दो हो । घुरिजाउनि खे कपड़ो बि दीन्दो हो । संदसि पिता जे गुरू भाई नाराइणदास जी वर्सी बि मल्हाईन्दो हो । हींअर मथियां बुई कम संदसि भाउर कन्दा आहिनि ।

परलोक पधारिजणु:– ही ओचितो ई ओचितो ब्यावर शहिर में तारीख़ ८ जून सन् १९९४ ई० में हिन फ़ानी संसार मां हलियो वियो ऐं वञी सुर्ग में वासो कयाईं ऐं पुठियां पंहिंजी याद छदे वियो । संदसि पिता भगुत हरूमल जो अहिवालु पढ़ो बाब ३ जे नम्बर ४ ते ।

बाबु सतों

भगत ऐं काबिल हकीम

(१) नालो ना-मइलूम वेठल गोठ खाणि

हिन नियातीअ जे नाले, पीउ जे नाले ऐं नुख जी ख़बर पइजी कान सघी। बाकी जेको संदसि हयातीअ, प्रवृतिअ ऐं धन्धे वग़ेरह जो अहिवालु मालूम थी सघियो आहे, सो हेठि दिजे थो। हिन नियातीअ जो पिता गोठ खाणि तैलिके मीरपुर ख़ास ज़िले थरपारकर सिन्धु में रहन्दो हो। हिनखे फ़कति हिकु ई पुटु हो, जो नन्ढे हून्दे ई मङिजी वियो। अञा ही छोकरु नन्ढो ई हो त ओचितो ई ओचितो साधुनि सन्तनि जे टोलीअ सां गदिजी हलियो वियो। संदसि पीउ घणेई गोल्हा कयाईं पर पतो कोन पियो। संदसि मङ वदी थी परिणजण लाइकु थी त कुंवारेतो घोटेते वटि आयो ऐं अची हालु कयाईं। घोटेते वरन्दी दिनी त छोकर खे घणो ई गोल्ह्यो अथमु पर हुनजो पतो ई कोन्हे। तंहिंते कुंवारेतो पइंचनि में आयो त मूंखे गसु करे दियो। पंइचनि बिन्हीं जूं गाल्हियूं बुधी फैसिलो दिनो त घोटेते खे हिक साल जी मुहिलत थी दिजे त छोकिरे खे गोल्हे हथि करे परिणाए वठे। जे साल जे अन्दरि छोकिरो न लधो त कुंवारेतो आज़ाद आहे, जेको वणेसि, सो गसु वठे। किस्मत जी जोड़ अहिड़ी, जो ११ महिननि गुज़िरण बैदि छोकिरो वापसि खाणि में आयो ऐं अची माइटनि सां मिलियो। पुछियो वियुसि त किथे हुएं त चयाईं त सन्तनि जे टोलीअ सां गदु हलियो वियुसि। उते सन्तनि सां गदु भगिती ज्ञान, योग क्रियाऊं ऐं दवाऊं मारणु सभु सिखियो। हिक दींहुं संदसि टोलीअ खे मइलूम थियो हिक माउ जो सिकीलधो पुटु बि सन्तनि सां गदु वियो आहे। संदसि माता पिए रोई रड़े सन्तनि खे पिटे। उन्हनि जे गुरूअ उहो छोकिरो हथि करे माता खे दिनो, गुरूअ हिनखे चयो त तुंहिंजा माइट बि रोअन्दा रड़न्दा हून्दा ऐं असांखे पिटीन्दा हून्दा तंहिंकरे घरि वञु पर ही वञण जी न पियो करे। गुरूअ चयुसि त गुरूअ जी आज्ञा नथो मञी। तूं घर वञु, मां साल बैदि ईन्दुसि ऐं जे तुंहिंजे गोठ ईन्दुसि ऐं जे तूं माइटनि में न रहन्दें त मोकल माइटनि खां वठी पोइ तोखे पाण सां वठी ईन्दुसि। उनते ही उतां हिमालय पहाड़ तां हली पंहिंजे गोठ खाणि में आयो।

हिनजे अचण ते खुशियूं वरी वेयूं ऐं हिनखे रीझाए शादी कराए छदी। धर्म जी बि जय थी ऐं माइटनि खे बि पुटु मिलियो। हिक साल बैदि संदसि गुरू आयो ऐं हिन वटि अची हालु पुछियाईंसि। हिन गुरूअ खे बुधायो त मूंखे माइटनि परिणाए छदियो आहे ऐं हाणे कींअं घरु छदे सघन्दुसि। गुरूअ चयो त चङो, हाणे उतेई गृहस्थ में रहियो पियो हुजु। गुरूअ खे चयाईं तव्हां घणेई दवाऊं मारणु सेखारियूं आहिनि। हाणे का रहियल वाट या रमज़ हुजे त उहा बुधाईन्दा त मां हिकमत जो धन्धो करियां। गुरू दवाऊं ऐं रमज़ूं देई वियुसि। पोइ ही हिकमत जो धन्धो कन्दो हो ऐं कहिड़े बि मर्ज़ जी दवा करे सघन्दो हो ऐं माण्हू सभु शफ़ा पाए वेन्दा हुआ। पर हिन कंहिं खे बि इहो कमु न सेखारियो। आख़रि सौ वर्हि पूरा करे हिन संसार मां हलियो वियो ऐं इहो हुनुरु हिनजे दिल में ई दबियो रहियो, जो पाण सां खणी वियो।

(२) भगुत उधवदास वेन्सीमल हरगुण

जनमुः– भगुत उधवदास जो जनमु श्री वेन्सीमल वल्द सन्त आसूराम साहि नुख हरगुण जे घर तारीख़ १२ जुलाइ सन् १६१४ ई० शहिर हाला पुराणा में थियो। मास्तर आसूराम जो वर्णन बाब २ जे नम्बर ४ ते आहे। सन्त आसूराम खे हिकु पुटु वेन्सीमल हो, जंहिंखे ४ पुट आहिनिः १. गुलावराय २. कोदुणमल ३. उधवदास ४. कुन्दोमल। सन्त आसूराम जी गादी मुकररु कई वेई, हिन वक्ति संदसि गादीअ ते भगुत उधवदास आहे। ही सिन्धु मां सन् १६६६ ई० में लदे अची कोटा रहियो। मास्तर साहिब काबिल यूनानी हकीम हो, तंहिं वटां संदसि पुट ऐं पोटा तवावत सिखिया, जे बि काबिल हकीम आहिनि। हिनजो कदु छोटो, बदन पूरो पुनो भरियलु, शिकिलि जो सुहिणो ऐं मुंहं ते माता जा निशान अथसि। हीउ धोती, कमीस ऐं गांधी टोपी पाईन्दो आहे। ब़ाहिर मंझि निकिरन्दो आहे त गेड़ रतो बोछण कुल्हनि में पाईन्दो आहे। सिन्धु में हिकमत कन्दो हो ऐं हिनजो धन्धो इहो ई हो। पर पाकिस्तान में अचण वैदि हिकमत शुरू क़ान कयाईं ऐं हाणे रिटायर्ड आहे ऐं आराम ई कन्दो आहे। ही सिन्धी ४ दर्जा पढ़ियलु आहे। फ़कति सिन्धी ब़ोली ज़ाणन्दो आहे। हिंति अचण खां पोइ थोड़ी घणी हिन्दी ब़ोली बि सिखियो, जा ग़ाल्हाईन्दो आहे। हिनजो नेम आहे त पोईं रात जो २-३ बजे निन्ड मां उथी भगिती कन्दो आहे। हीउ ग़ाए बि ज़ाणे। मार्गी शब्द ऐं संदसि ड़ाड़े मास्तर आसूराम जा ठाहियल भज़न ऐं कलाम ग़ाईन्दो आहे। हिनजो मतो सूफ़ी आहे। सिन्धु में दरवेशनि झोक वारनि ज़ा मुरीद आहिनि ते साहिबनि जी तारीख़ १७ बि मल्हाईन्दा आहिनि।

सन्त आसूराम जा हथ जा लिखियल किताव, शब्दनि, काफ़ियुनि ऐं हिकमत जा बि हिन वटि रखियल आहिनि। गुलावराइ जा टे पुट नाग़पुर ऐं हिकु पुटु मीरपुर ख़ास सिन्धु में ऐं कोदुणमल जा ४ पुट अजा हालनि में रहनि था। बाकी ही ब़ नन्ढा भाउर उधवदास ऐं कुन्दोमल कोटा में रहनि था। भगुत उधवदास खे पुटु कोन आहे। संदसि ड़ाड़े सन्त आसूराम जो अहिवालु ड़िसो बाब २ जे नम्बर ४ ते।

(३) मेठाराम गुरनोमल खूहा

जनमुः– डॉक्टर मेठाराम जो जनमु श्री गुरनेमल वल्द गिरधारीलाल नुख खूहा जे घर शहिर हूसिड़ी तैलिके ऐं ज़िले हैदराबाद सिन्धु में तारीख़ ६ अप्रेल सन् १६२२ ई० में थियो। हिन जो कदु डिघो, बदन जो हिम्मत भरियो ऐं शिकिलि जो सुहिणो आहे। हिन जो सुभाउ शान्तीअ वारो, दया वारो, हमदर्दानो, दिल सां शेवा कन्दड़ आहे। कावड़ि त सफा अथसि ई कान, केरु कुझु बि चवन्दुसि त पियो खिलन्दो। चवन्दो त भलि अगि़लो दिल खुशि करे, लालच कान्हेसि। ग़रीबनि, जिनि में इलाज लाइ पैसनि ख़र्चण जी तोफीक न हुजे त किनि खां तमाम थोरा पैसा वठन्दो आहे त किनि खां वठे बि कोन। आम तरह हिन जी चार्ज ब़ियनि डॉक्टरनि जे भेट में घटि आहे, इलाज दिल सां कन्दो आहे। इनकरे हिन जे हथ में शफा आहे। "दिल साफी हुवल-शाफी"। हिन जी ड्रेस- सूट बुशर्ट पाईन्दो आहे। सियारे में मथां कोटु पाईन्दो आहे।

तइलीमः– ही स्कूल में अरबी सिन्धी ७ दर्जा पढ़ियलु आहे। तंहिंखां सवाइ ही उड़दू, पारसी ऐं हिन्दू वाणिका अखर सिखियो आहे। हिननि सभिनी में चङीअ तरह लिखी पढ़ी ज़ाणे। हिन्द में अचण वैदि हिन्दी बि गु़ड़हो अभ्यास करे सिखियो आहे। ही सिन्धी, हिन्दी, उड़दू, पारसी ब़ोलियूं ग़ाल्हाए ज़ाणन्दो आहे। जेके दवाउनि ऐं मर्ज़न सां लाग़ापो रखन्दड़ अरबी अखर आहिनि, उन्हनि जी माना ज़ाणन्दो आहे।

हिकमत सिखियाः– (१) इलाज करण जा किस्म ऐं तरीकाः– बीमारियुनि जा इलाज ४ किस्मनि जा आहिनिः (१) यूनानी याने पसार जूं शयूं, बूटियूं ऐं धातु वग़ेरह (२) वैदिकी याने साग्रियूं यूनानी दवाऊं, पर त्यार करण जो तरीको अलग़ु आहे (३) एलोपैथी याने अंग्रेज़ी दवाऊं (४) होम्योपैथी याने जर्मन दवाऊं, जे दवाउनि जा अर्क कढी, उन्हनि में खंडु मां ठहियल गोलियूं विझबियूं जीअं अर्कु चुही वञनि। ही गोलियूं हिक अहिड़ियूं ऐं मिठियूं आहिनि। 'हालांकि एलोपैथी इलाज में वढ कुट याने ऑपरेशन करण में बिलकुल कामयाबी मिली आहे। बाकी किनि मर्ज़न जो इलाज कोन्हे, उहे लाइलाज आहिनि। पर यूनानी ऐं वैदिकी तरीकनि में उन्हनि बीमारियुनि जा इलाज बि आहिनि, पर यूनानी दवाउनि सां इलाज करण जो तरीको बिलकुल हिक टिक आहे। यूनानी तरीके सां इलाज करण में डॉक्टर मेठाराम तमाम मुकमल ज़ाणूं ऐं काबिल हकीम आहे। हिनजो उस्ताद बि तमाम होशियारु ऐं काबिल जराह हकीम हो। उन वटां हिनखे अहिड़ा आज़मायल ऐं उमदा नुस्ख़ा मिलिया आहिनि, जे हर कंहिं तबीब वटि कोन्हनि। उन्हनि इलाजनि मां ना-उम्मेद बि उम्मेदवार बणिजी शफ़ायाब थी विया आहिनि।

(२) यूनानी हिकमत सिखणुः– श्री मेठाराम शहिर सखर (सिन्धु) में हिक मुसलमान जराह हकीम नाले जनाब अली नवाज़ साहिब वटि वियो ऐं उनखे पंहिंजो उस्ताद बनाए वटिस ६ साल रही यूनानी हिकतम जी सिखिया वरती ऐं उन सां गदु उस्ताद जी शेवा बि कई। शेवा जो फल त मिलिणो ई आहे। जदुहिं हकीम साहिब पंहिंजे मौज में ईन्दो हो त मेठाराम खे चवन्दो हो त मेठा, मां तोखे दुआ थो करियां त जहिड़ो हींअर आहीं, खुदा कन्दो त अहिड़ो ई रहन्दें। हुनजे दुआ जे करे सुभाअ में दुनियादारीअ जो अंसर कोन थियो आहे, संदसि उहो सुभाउ ई काइमु आहे। उन हकीम बि दिल सां हिनखे हिकमत सेखारी ऐं खेसि उहे नायाब नुस्ख़ा अता कयाईं, जो हरकंहिं हकीम वटि कोन मिलन्दा। हिन बि वदे होश, ख़्याल ऐं शैंक सां सिखी ग्रहण कया ऐं छहनि सालनि जे अर्से में ही बि जराह हकीम थी वियो।

धन्धो, अस्पताल खोलणुः– यूनानी तबाबत जी सिखिया पूरी करे, मोटी पंहिंजे शहिर हूसिड़ीअ में आयो ऐं अची अस्पताल कढियाईं ऐं पंहिंजो अबाणो धन्धो छपाईअ ऐं रङाईअ जो कोन कयाईं। आहिस्ते आहिस्ते हिनजी अस्पताल ज़मी वेई। माण्हुनि खे हिन जे अस्पताल कढण ऐं हथ में शफ़ा हुअण जी ख़बर पेई त हिन वटि जाम माण्हू इलाज लाइ अचण लगा। पाकिस्तान बैदि १९४८ ई० में सिन्धु मां लदे अची अजमेर वेठो। हिते बि अस्पताल अची कढियाईं। धीरे धीरे थी हिति बि ज़मी वियो। हिन्द में आए खां पोइ हिति अची पंजाहु सालनि खां यूनानी हिकतम करे हज़ारें बल्कि लखें माण्हुनि खे शफ़ायाब कयो अथाईं। पर हाणे यूनानी दवाउनि सां गदु कुझु अंग्रेज़ी दवाऊं बि कतबु आणीन्दो आहे। हिन वक्त अजमेर जे पसगरदाईअ वारियुनि बहिराड़ियुनि जा माण्हू घणें अंदाज़ में हिन वटि इलाज लाइ ईन्दा आहिनि ऐं बीमारियुनि खां छुटिकारो पाए वेन्दा आहिनि ऐं उन्हनि जो हिन में पूरो पूरो सिदुकु थी वियो आहे। **"हींएं में हमदर्दी, दिल सां दवा, हथ में शफ़ा।"**

रिहाइशी आस्तानः– हिन जा वदा असुलु हैदराबाद जे उत्तर में ब़िनि टिनि मेलनि जे मुफ़ासिले ते ग़ोठ ज़ाम शोरो में रहन्दा हुआ। पोइ लदे हैदराबाद जे दुखण में छहनि मेलनि जे पंध ते शहिर हूसिड़ीअ में अची वेठा। हिति बि केतिरा ई साल रहिया। सन् १९४८ ई० में सिन्धु मां लदे अजमेर अची वेठा। आहिस्ते आहिस्ते पंहिंजूं जायूं जग़हियूं बि कयाऊं।

डॉक्टरी पढ़ाइणु, हिकमत सेखारणुः– हिन पंहिंजनि भाइटियनि ऐं पुटनि खे डॉक्टरी पढ़ाई आहे पढ़ाए पियो । पंहिंजे भाउ खे बि पाण सां गदु रहाए हिकमत सेखारियाईं ऐं तंहिंखां सवाइ बियनि मित्र माइटनि खे बि सेखारे, इम्तहान दियारे रोज़गार ते लगाराए छदियाईं । जहिड़ोकिः–

१– भाइटिया ।

२– डॉक्टर मेठाराम जा पुटः १. जगदीश M.B.B.S. पास कई । २. नरेश कुमार B.D.S. दुन्दनि जो कोर्स पढ़ी रहियो आहे । ३. भरत कुमार साणसि गदु प्रैक्टिस करे रहियो आहे । फकति चोथें पुट इन्द्र कुमार खे हिन लाईन खां अलग करे हीरनि जो वापारु कराए रहियो आहे ।

३– संदसि वदे भाउ मोटूमल खे पाण सां गदु प्रैक्टिस कराए सजी हिकमत सेखारी । हिन बि वञी भाग अस्पताल कढी पोइ संदसि पुटु निर्मल कुमार M.B.B.S. पास करण बैदि हिन सां गदु अची अस्पताल में रहियो । मोटूमल हींअर ताज़ो तारीख़ १४ जनवरी सन् १६६८ ई० अजमेर में परलोक पधारियो ।

४– श्री टीकमदास मूलचन्द काकूपोटा खे सेखारे इम्तहान पास कराए छदियाईं, जो अजमेर में अस्पताल हलाए पियो । रोज़गार खे लगो पियो आहे । उन वरी पुटनि खे हिकमत सेखारी ऐं उहे अस्पतालूं कढी बहिराड़ियुनि में पिया हलाईनि ।

५– श्री सुन्दरदास टिक्योमल छंछिरिया खे बि हिकमत पढ़ाए सेखारे ऐं इम्तहान दियारे छदियाईं, जो ब्यावर में अस्पताल कढी रोज़गार पियो करे ऐं अस्पताल कामयाबीअ सां हली रही आहे ।

६– श्री मोहनदास खटणमल खूहा खे बि तबाबत पढ़ाए इम्तहान दियारे छदियाईं, जो जयपुर में अस्पताल कढी वेठो आहे ऐं अस्पताल आलीशान नमूने हली रही आहे, बिलकुल फ़तिहयाब थी वियो आहे ।

७– श्री नत्थूमल देऊमल खूहा, जो सौट जो पुटु थिएसि, तंहिंखे हिकमत सेखारे भडु करे छदियो आहे । जो डॉक्टरनि वटि नौकिरी करे गुज़रु कढियो वेठो आहे ।

८– श्री बूलचन्द कोदुणमल हरगुण खे बि हिकमत सेखारे इम्तहान पास कराए छदियाईं, जो ब्यावर जे भरिसां गोठ खरवा में अस्पताल कढियो वेठो आहे ऐं सुठो कमाए पियो ।

हिन मथियनि सभिनी खे हिकमत सेखारे पंहिंजे पेरनि ते बीहारे छदियाईं, जो सुठो रोज़गार कढियो वेठा आहिनि । हीअ बि हिक समाजी शेवा आहे ।

समाजी वहिंवारुः– ही सिन्धी ब्रह्म खत्री पइंचात सां पेर भरीन्दो रहन्दो आहे । उन्हीअ जे मीटिंगुनि में बि वेन्दो आहे ऐं समाज जे शादीअ ग़मीअ में बि शरीकु थीन्दो आहे । को बि समाजी फोड़ी या चन्दो थीन्दो आहे त दिल सां दीन्दो आहे । मतिलब त हिकमत जे कम में हेतिरो मश्ग़ूल हून्दे बि मथियुनि गाल्हियुनि में शामिल थीन्दो रहन्दो आहे ।

औलादः– हिन खे ४ पुट आहिनिः (१) नरेश कुमार (२) इन्द्र कुमार (३) भरत कुमार (४) जगदीश ऐं ब नियाणियूं अथसि । हीउ कुटम्ब साणु खुशि आहे । मुंहिंजी त इहाई आशा आहे ऐं स्वामी लीलाशाह महाराज जनि खे प्रार्थना आहे त हिन खे निरोगी काया सौ साल बख़्शे त ग़रीबनि ऐं दुखियुनि जी इलाज ज़रीए शेवा कन्दो रहे ।

(४) चेतनदेव भोजूमल धान्धा

जनमुः– श्री चेतनदेव जो जनमु श्री भोजूमल वल्द वसूमल नुख धान्धा जे घर शहिर मातिली ज़िले हैदराबाद सिन्धु में अटिकल सन् १६१४ ई० में थियो । हिन जो कदु पूरो पुनो, बुत जो भरियलु ऐं शिकिलि जो कणिक रंगो हो । सुभाअ जो सांतीको, मुंहं ते सचु चवन्दड़ु, ग़ाल्हाइण जो चत्तुर, ग़ाल्हि करण जो ढंगु ऐं समुझू हो । नन्ढे हून्दे खां ई हिकमत सिखण जो शैंकु ऐं स्वामी लीलाशाह जनि सां प्रेम होनि । जदहिं स्वामी जनि गुजरात में ईन्दा हुआ त संदनि शेवा में रहन्दो हो । ही ड्रेस- कमीस, पतलून ऐं अछी गांधी टोपी पाईन्दो हो । सियारे में मथे में गर्म टोप, स्वेटरु ऐं कोटु पाईन्दो हो ।

तइलीमः– ही स्कूल में अरबी सिन्धी ३ दर्जा पढ़ियलु हो । हीउ हिन्दी स्वामी लीलाशाह महाराज जनि जे आज्ञा अनुसार सिन्धु में सिख्यो । हट-वाणिका अखर बि सिखियो । हिकमत जे किताबनि खे अभ्यास कन्दे, उड़दू ऐं पारसी लफ्ज़, दवाउनि ऐं मर्ज़न ऐं उन्हनि सां लागापो रखन्दड़ ग़ाल्हियुनि जा सिखियो । हिन्द में अचण बैदि गुजराती बि सिखियो । ही सिन्धी, हिन्दी, गुजराती ऐं उड़दू बोलियूं ग़ाल्हाए ज़ाणन्दो हो । थोरो अंग्रेज़ीअ जो बि अभ्यास कयो हुआई ।

रिहाइशी आस्तानः– हिन जा वडा असुलु गोठ राजे जो साल वारो शहिर झिरकन जे वेझो तैलिके कोटिड़ीअ में रहन्दा हुआ । पोइ उतां लदे अची मातिलीअ ज़िले हैदराबाद में वेठा । उते बि केतिरा ई साल रहिया । सन् १६४७ ई० जे पछाड़ीअ में सिन्धु मां लदे अजमेर आया, पोइ वञी शहिर वीरमगाम में वेठा ऐं छपाईअ जो कारख़ानो अहमदाबाद में कढियाऊं । उहो छदे कारख़ानो राजकोट में कयाऊं ऐं घरु बांटवा में कयाऊं । सन् १६६० ई० में राजकोट छदे लदे जेतपुर आया । उते घरु बि कयाऊं ऐं स्क्रीन प्रिन्टिंग जो साड़हियुनि छपण जो कारख़ानो कढियाऊं । नालो रखियाऊंसिः "राजकोट टेक्सटाईल प्रिन्टिरी ।"

धन्धोः– सिन्धु में अबाणो धन्धो रङाई ऐं छपाईअ जो कन्दा हुआ । चेतनदेव जो पिता भोजूमल जनि पाण में ४ भाउर हुआः १. भोजूमल २. पेसूमल ३. गोपालदास ४. गंगाराम । धार थियण ते भोजूमल मातिलीअ में कपड़े जो दुकान कढियो । पेसूमल ऐं गंगाराम सिन्धु में ई बिना औलाद परलोक पधारिया, बाकी भोजूमल ऐं गोपालदास हिन्द में आया । थोरनि सालनि बैदि उहे बई सुर्ग़वास थी विया । गोपालदास जा २ पुट दूल्हानोमल ऐं शंकरदास ऐं भोजूमल जो नन्ढो पुटु भेरूमल कुटम्बनि साणु राजकोट में रहन्दा आहिनि ऐं बाकी चेतनदेव जी आकहि जेतपुर में रहन्दी आहे । चेतनदेव साड़हियुनि छपाइण जो कारख़ानो चालू कयो पर उन्हीअ सां गदु स्वामी लीलाशाह महाराज जनि जे आज्ञा ऐं आसीस सां हिकमत करण बि शुरू कई । सभिनी खे दवा मुफ्त में दीन्दो हो । स्वामी जनि बि केतिरा ई मरीज़ हिन वटि मोकलीन्दा हुआ, जिनि में के अहिड़ा वि मरीज़ हून्दा हुआ, जिनि जो इलाज करणु मुश्किल हो या लाइलाज हो । चेतनदेव चवन्दो हो त साईं, हीअ बीमारी कीअं छुटन्दी त स्वामी जनि जवाबु दीन्दा हुआ त हिननि जी बीमारी मूं छुटाए छदी आहे, तूं रुग़ो निमत मात्र थीउ त माण्हू ऐं मरीज़ समुझनि त चेतनदेव जे इलाज मां शफ़ायाब थियो । किनि मरीज़नि खे पाण वटि रहाए शेवा बि कन्दो हो । हिन जो नालो हकीम बि स्वामी जनि मशहूर करे छदियो । ही पोंयनि सालनि में दवाउनि जा पैसा बि वठन्दो हो । मतिलब त यूनानी हिकमत में हिन नालो कढियो ।

हिकमत सिखणुः– ही पहिरियाईं मातिलीअ में श्री परमानन्द खेमचन्द वारदे चूड़ीगर खां ननावन सिखियो, जंहिंजो अहिवालु बाब ५ जे नम्बर १ ते आहे। वधीक संदसि हिक माइट श्री तोलाराम हासानन्द खुब्ग जो बि हकीम हो, उन खां सिखियो। तंहिंखां सवाइ हिकमत जा किताब ख़रीद करे, उन्हनि जो वि अभ्यास कयाईं। वरी हिन्द में अचण बैदि राजकोट में हिक काबिल यूनानी हकीम नाले कुरेशी अब्दुल्ला मत्वो हिन खे मिली वियो ऐं उनखे उस्ताद बणायाईं, जंहिं बि हिनखे सुठी हिकमत सेखारी ऐं सुठा ऐं नायाब नुस्ख़ा दिनाईं।

स्वामी लीलाशाह सां सन्बन्धः– हिन जो सन्बुन्ध नन्ढे हून्दे खां ई साईं जनि सां हो ऐं हुन जी पूरन श्रद्धा हुई। जंदहिं वदो थियो त स्वामी जनि सां गदु वक्तनि ते केतिरो गदु गुज़ारियाऊं ऐं कदहिं स्वामी जनि सां गदु गश्त बि कन्दा हुआ। हिन ते स्वामी जनि जी आसीस हुई ऐं शफ़ा हथ में पिणि स्वामी जनि दिनी हुअसि। लाइलाज त स्वामी छुटीईन्दो हो, पर नालो चेतनदेव जो हो।

परलोक पधारिजणुः– ही जेतपुर मां हमेशह लाइ तारीख़ १९ ऑक्टोबर १९९४ ई० परलोक पधारियो ऐं २० ऑक्टोबर १९९४ ई० ते अग्नि संस्कार थियुसि। हिन जे पड़दादे जे पड़दादे सन्त पारिए भगत जो अहिवालु पढ़ो बाब १ जे नम्बर ७ ते।

(५) M.D. डॉक्टर हरीलाल जमनादास पमनाणी कारातेला

जनमुः– श्री हरीलाल जो जनमु श्री झमटमल उर्फु जमनादास वल्द चोटीरमल पमनाणी नुख कारातेला जे घर शहिर ऊना (गुजरात) में तारीख़ २६ आगस्ट १९५४ ई० में थियो। ही कद जो डिघो, बदन जो पूरो पुनो, शिकिलि जो सांवराईअ ते आहे। हीउ सुभाअ जो सांतीको, रिलणो मिलिणो, हमदर्द ऐं शेवा-भाव वारो आहे। ही सूटु बुशर्ट, स्वेटरु ऐं कोटु पाईन्दो आहे।

तइलीमः– ही सिन्धी, हिन्दी, गुजराती ऐं अंग्रेज़ी पढ़ी पोइ डॉक्टरी शहिर जामनगर में पढ़न्दो हो ऐं डॉक्टरीअ जूं टे डिग्रियूं पास कयूं आहिनिः (1) M. B. B. S. (2) D. C. H. (3) M. D. (Paed). हीउ ब्रह्म खत्री समाज में पहिरियों ई जुवान आहे, जंहिं M. D. डिग्री पास कई आहे। ही चारई बलियूं जाणे।

रिहाइशी आस्तानः– हिन जा वदा सिन्धु में शहिर दड़े तैलिके मीरपुर बठोरे ज़िले कराचीअ में रहन्दा हुआ। सन् १९४८ ई० में उतां लदे अची शहिर ऊना (गुजरात) में वेठा। हिननि खे सिन्धु में कपड़े जो दुकान हो, तंहिंकरे श्री जमनादास हिति अची कपड़े जो दुकान कढियो। संदसि छोकिरा नन्ढा हुआ ऐं के पोइ जावा, जिनि खे पढ़ाईन्दो वियो।

धन्धोः– हीउ डॉक्टरीअ जूं डिग्रियूं हासुलु करे शहिर महुवा (गुजरात) में आयो ऐं उते अची ख़ास बारनि जी अस्पताल नाले "नन्दनवन चिल्ड्रेन हॉस्पीटल" चालू कयाईं, जा धीरे धीरे जमीं वेई। वाकुफु थियण ते माण्हू ओरें परे जा अचण लगा ऐं शफ़ायाब थी पिए विया। हथ में शफ़ा आहेसि। इनकरे अस्पताल सुठी हली रही आहे ऐं डॉक्टर कामयाब वियो आहे। जाइ पंहिंजी अथसि। हेठि अस्पताल आहे ऐं मथे घरु करे वेठो आहे। माण्हू नालो बुधी ईन्दा आहिनि। ही बारनि लाइ स्पेशल (Special) डॉक्टर आहे।

शेवा जो कार्यः– हिन जो शेवा-भाव ड्डिसी हिनखे हेठियनि उहिदनि ते चूंडियो वियोः– (१) प्रेज़ीडेन्टः ज्वांइटस ग्रुप महुवा फेडरेशन १९९२ ई० (२) वाईस प्रेज़ीडेन्टः ज्वांइटस इन्टरनेशनल १९९७ ई० ।

स्वाध्याउः– ही स्वाध्याउ परिवार एक्टिविटी ऑफ रवेन्यूं पांडूरंग शास्त्रीअ जे अथिवेल में घणो चाह वठन्दो आहे । रोज़ानो अधु कलाकु रिलीजसि रिसाईटिंग याने धर्मी उच्चारण कन्दो आहे ऐं हर ब्रुधर ते अधु ड्डींहुं स्वाध्याउ एक्टिविटी लाइ कमु कन्दो आहे । इहा हिनजी प्रवृति आहे ।

समाजी शेवाः– हिन खे समाजी शेवा करण जो शौंकु आहे, पर महुवा में अस्पताल जे मश्गूलीअ में ब्राहिरि निकिरण जो मौको बिलकुल घटि मिलन्दो आहे । इनकरे जिस्मानी तरह ही शेवा न करे सघियो आहे, बाकी अण-सिधीअ तरह समाजी कमनि लाइ चन्दा फोड़ियूं वग़ेरह ड्डेई शेवा करे रहियो आहे ।

कुटम्बुः– ही पाण में ६ भाउर आहिनिः १. थांवरदास २. हरीलाल ३. वसन्त कुमार ४. मंघनमल ५. नानकराम ६. हरेश कुमार उर्फु राजू । संदसि पिता श्री जमनादास पहिरिएं नम्बर पुट थांवरदास खे थोरो पढ़ाए पाण सां गडु कपड़े जे दुकान ते विहारियो, जो हाणे दुकान सम्भाले रहियो आहे । बाकी पंजनि पुटनि खे ऊंची तइलीम ड्डियारी, जे सुठियुनि नौकिरियुनि ऐं रोज़गार खे लग्गी विया आहिनि । ब्रियो नम्बर हरीलाल, जो ही आहे, उन खे पंहिंजी अस्पताल आहे । टियों वसन्त कुमार, जो भाउनगर में वकालत कन्दो आहे, उन जो अहिवालु बाब ३२ जे २१ नम्बर ते आहे । चोथों ऐं छहों नम्बर मंघनमल ऐं हरेश कुमार झूनागढ़ में इन्जीनियर आहिनि ऐं पंजों नम्बर नानकराम आर्चीटिक कॉलेज वलभ विद्या नगर, आनन्द में प्रोफेसर आहे, जंहिंजो अहिवालु बाब ३० (ब) जे १ नम्बर ते आहे । हिननि जे ब्रादरीअ वारा सौट ऊना में रहन्दा आहिनि-। घणो करे उन्हनि खे कपड़े जा दुकान आहिनि ।

हिन जे भाउ नानकराम जो अहिवालु बाब ३० (ब) जे नम्बर १ ते ऐं वसन्त कुमार जो अहिवालु बाब ३२ जे नम्बर २१ ते आहे ।

(६) M. D. डॉक्टर टीकमदास आसूदोमल छंछिरिया

जनमुः– डॉक्टर टीकमदास जो जनमु श्री आसूदोमल वल्द वसूमल नुख छंछिरिया जे घर शहिर देवास (मध्य प्रदेश) में तारीख़ १६ नवम्बर सन् १९५७ ई० में थियो । हिनजो कदु नन्ढो, बदन हल्को, शिकिलि जो सुहिणो आहे । ही सुभाअ जो शान्तीअ वारो, महकम इरादे वारो ऐं खुद्दारी रखन्दड़ु आहे । ही पैंट, बुशर्ट, स्वेटरु ऐं कोटु पाईन्दो आहे । सूटेड बूटेड रहन्दो आहे ।

तइलीमः– ही सिन्धी, हिन्दी, अंग्रेज़ी पढ़ी हायर सैकण्डरी इम्तहान पास करे, वड्डी डिग्री डॉक्टरीअ जी पढ़ण लग्गो । पहिरियाईं हिन M.B.B.S. पास कई । पोइ हिन M.D. लाइ थीसिज़ लिखण शुरू कई जा हीअ आहेः– Thesis in Medicines on Hyppertension Problem of Drug Resistence in Maleria. जंहिं में कामयाब वियो ऐं डिग्री हासुलु कई । ही सिन्धी, हिन्दी ऐं अंग्रेज़ी ब्रोलियूं ग्राल्हाए ज्राणे ।

स्कॉलरशिपः– हायर सैकण्डरी पास करण खां पोइ जदुहिं पहिरियों ऐं ॿियों साल कॉलेज में पढ़न्दो हो त हिनखे स्कॉलरशिप दर महिनो पंजहतरि (७५) रु. मिलन्दी हुई । इन बैदि ५ साल M.B.B.S. पढ़ण में स्कॉलरशिप दर महिनो हिकु सौ (१००) रु. मिलन्दी हुई ।

नेमः– हिनजो नेम आहे त सूमर जे ॾींहुं एकाणो (व्रत) रखन्दो आहे ।

रिहाइशी आस्थानः– हिनजा वॾा असुलु ॿरहामनि में रहन्दा हुआ पोइ अची खेविरन में वेठा, पोइ उतां टन्डे अलहियार में अची रहिया । सनू १९४८ ई० में सिन्धु मां हिनजा घणा वॾा अची ब्यावर वेठा पर हिनजो ॾाॾो अची देवास वेठो । पोइ हिनजो पिता लदे अची जयपुर वेठो । हाणे मालवीय नगर में रहनि था ।

नौकिरीः– हिनखे सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट में सरकारी नौकिरी जयपुर में डॉक्टरीअ जी मिली, जा करे रहियो आहे ।

मेम्बरः– हेठियुनि संस्थाउनि जो मेम्बर आहेः– १. ऑल इण्डिया एसोशिएशन ऑफ फिज़ीशन । २. इण्डियन एसोसिएशन मलेरिया आर कम्नयूकेशन डिज़ीज़ ।

समाज शेवाः– १. ही अखिल भारत सिन्धी ब्रह्म खत्री वर्किंग कामेटी मेम्बर १३-९-१९८९ खां २८-७-१९९२ ताईं थी रहियो आहे ।

२. नियातियुनि जा समूह लगन, जयपुर में मेडीकल कामेटीअ में रही शेवा कन्दो आहे ।

रेडियो तेः– हिन रेडियो ते स्वास्थ्य जी प्रश्नोत्तरी ते पिणि प्रोग्राम ॾिनो आहे ।

✱ शाम जो तुलसीअ जी पूजा करियो ऐं ॾीओ जलायो । भगुवान जे साम्हूं वास-धूप करियो ।

✱ जंहिं माण्हूअ जो जीवन पवित्र थिए थो, भगुवान उनजे घर विना कोठिए अचे थो ।

✱ अहिड़ो कीर्तन करियो, जो भगुवान खुदि अची तव्हांजो दरवाज़ो खड़िकाए ।

✱ वन्दना सभिनी देवताउनि जी करियो, पर ध्यान हिक ई देव जो करियो ।